मूल्य सोलह रुपये
संस्करण १९७८
प्रकाशक
शब्दकार
२२०३ गली डकौतान
तुर्कमान गेट दिल्ली ११०००६
आवरण
अमार धीमान
आवरण मुद्रक
परमहंस प्रेस दिल्ली ११०००६
मुद्रक
शान प्रिन्टर्स दिल्ली ११००३२
पुस्तक बंध
सुराना बुक बाइंडिंग हाउस
दिल्ली ११०००६



अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ

डॉ० भोलानाथ तिवारी
डॉ० ओमप्रकाश गाबा

प्रवेश

अनुवाद आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता है, इसीलिए हर भाषा में उसके सैद्धान्तिक विवेचन तथा प्रायोगिक और व्यावहारिक स्तर पर उभरने वाली समस्याओं पर विचार की आवश्यकता है। हिंदी में इसी उद्देश्य से 'अनुवाद' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया था। प्रस्तुत पुस्तक के लेखकों में एक (भोलानाथ तिवारी) का सम्बन्ध उस पत्रिका से सम्पादक के रूप में सात आठ वर्षों तक रहा। सम्पादन के दौरान इस बात का अनुभव किया गया कि मात्र पत्रिका से काम नहीं चलेगा। इस विषय के विभिन्न पक्षों पर अलग अलग पुस्तकें होनी चाहिएँ। इस दिशा में अब तक तीन पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं : अनुवाद विज्ञान (ले० भोलानाथ तिवारी), पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ (सं० भोलानाथ तिवारी तथा महेन्द्र चतुर्वेदी), काव्यानुवाद की समस्याएँ (सं० भोलानाथ तिवारी तथा महेन्द्र चतुर्वेदी)।

प्रस्तुत पुस्तक उसी माला की चौथी कड़ी है। यह चार अध्यायों में विभक्त है। पहले में अनुवाद के सिद्धांत पक्ष और व्यवहार पक्ष को लिया गया है। दूसरे में अनुवाद का अभ्यास करने के लिए अंग्रेजी के अट्ठाईस गद्यांश दिए गए हैं। इनमें प्रथम दस के साथ हिंदी अनुवाद तथा अनुवाद से संबद्ध कुछ संकेत भी हैं। शेष अठारह अनुवाद का अभ्यास करने वालों के स्वयं अनुवाद करने के लिए हैं। हमारा विश्वास है कि संकेतों की सहायता से प्रथम दस का अनुवाद करके तथा दिए गए अनुवाद से तुलना करके अपनी गलतियों को समझने के बाद अनुवाद के अभ्यासी कोश की सहायता से शेष अठारह का अनुवाद अपने आप कर लेंगे। तीसरा अध्याय उच्चस्तरीय अभ्यासमाला का है। इसके प्रारम्भ में ग्यारह गद्यांश संकेत और अनुवाद के साथ हैं, आगे के पाँच अभ्यासों के साथ केवल संकेत हैं तथा अंत के दस अभ्यास केवल अंग्रेजी गद्यांश के हैं। इस प्रकार दूसरे तथा तीसरे अध्याय की सहायता से व्यावहारिक अनुवाद का अच्छा अभ्यास किया जा सकता है। अंतिम अध्याय विशिष्ट अभिव्यक्तियों के अनुवाद

से संबद्ध है। इसमें अनुवाद की कुछ उच्चतर समस्याओं को उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

इस तरह यह पुस्तिका अनुवाद का अभ्यास करने वालों की दृष्टि में रखकर प्रस्तुत की गई है। आशा है उनके लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रियवर डा० कृष्णदत्त शर्मा, मुकुल प्रियदर्शिनी तथा राजीव ऋतुपर्ण से प्रारम्भ के दो अध्यायों में बहुत सहायता मिली है। इन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

डा० भोलानाथ तिवारी
डॉ० ओमप्रकाश गाबा

विषयानुक्रम

1

अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार[1]

'अनुवाद' शब्द

'अनुवाद शब्द का सम्ब ध 'वद' (बोलना) धातु स है। इसमे 'अनु (पीछे बाद म) प्रत्यय लगने से 'अनुवाद' बना है और इसका मूल अथ है 'किसी के कहने के बाद कहना' अथवा 'पुन कथन । अनुवाद मे हम एक भाषा मे कही गई बात' को उसके कहे जाने के बाद दूसरी भाषा म कहते है दूसरी भाषा मे पुन कथन करते हैं इसीलिए अब इस अथ मे 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग होने लगा है।

अनुवाद क्या है ?

एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा मे रूपा तर ही अनुवाद है। इस तरह अनुवाद का काम है, एक (स्रोत) भाषा म व्यक्त विचारा को दूसरी (लक्ष्य) भाषा म यक्त करना, कि तु यह व्यक्त करना बहुत सरल काय नही होता। होता यह है कि हर भाषा विशिष्ट परिवेश मे पनपती है, अत उसकी अपनी अनेक—ध्व यात्मक शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, आर्थिक, मुहावरे विषयक तथा लोकोक्ति विषयक आदि— निजी विशेषताएँ हाती है जो अनेक अ य भाषाओ से कुछ या काफी भि न हाती हैं, और इसीलिए यह आवश्यक नही है कि स्रात भाषा की किसी अभि यक्ति के पूणत समान अभिव्यक्ति—शब्दत और अथत —लक्ष्य भाषा म हो ही। 'पूणत समान अभि यक्ति से आशय यह है कि स्रोत भाषा की रचना या सामग्री का सुन या पढ़कर स्रोत भाषा भाषी जो अर्थ (अभिधाय लक्ष्याय तथा यग्याय) ग्रहण करे ठीक वही अथ अनुवाद को सुन या पढ़कर लक्ष्य भाषा भाषी भी ग्रहण करे। ऐसा सवदा इसलिए नही हो पाता कि प्राय स्रोत भाषा की अभि यक्ति स जो अथ व्यक्त होता है वह लक्ष्य

---

1 अनुवाद के सद्धान्तिक विवेचन और यावहारिक समस्याओं के समाधान की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए अनुवाद विज्ञान—डॉ भोलानाथ तिवारी

भाषा की अभिव्यक्ति में व्यक्त होने वाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत (expanded) होता है या संकुचित (contracted) होता है या कुछ भिन्न (transfered) होता है या फिर इनमें से दो या अधिक का मिश्रण होता है। साथ ही दोनों भाषाओं की अभिव्यक्ति इकाइयों (शब्द, शब्दबंध पद, पदबंध, वाक्यांश, उपवाक्य वाक्य मुहावरे लोकोक्तियाँ) के प्रसंग-साहचर्य (Associations) भी सर्वदा समान नहीं होते—हो भी नहीं सकते इसी कारण स्रोत भाषा में अभिव्यक्तिगत तथा अर्थगत के तालमेल को ठीक उसी रूप में लक्ष्य भाषा में भी ला पाना सर्वदा सम्भव नहीं होता। वास्तविकता यह है कि दोनों भाषाओं में इस प्रकार के तालमेल की समानता हमेशा होती ही नहीं फिर उस खोज पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। अपवादों को छोड़ दें तो प्राय स्रोत (भाषा की) सामग्री और उसके अनुवाद स्वरूप प्राप्त लक्ष्य (भाषा में) सामग्री, ये दोनों अभिव्यक्ति और अर्थ के स्तर पर प्राय एक या समान नहीं होतीं। अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है। वे केवल एक-दूसरे के मात्र निकट होती हैं। हाँ समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है। उदाहरण के लिए हिन्दी के तीन वाक्य लें लड़का गिरा लड़का गिर पड़ा लड़का गिर गया। गहराई से देखें तो इन तीनों वाक्यों के अर्थ में भी सूक्ष्म अंतर है। मान लें अंग्रेजी में अनुवाद करना हो तो हम the boy fell या the boy fell down कहेंगे। स्पष्ट ही अंग्रेजी के वाक्य केवल पहले हिन्दी वाक्य के समतुल्य कहे जा सकते हैं। अन्य हिन्दी वाक्यों में पड़ना तथा 'जाना' सहायक क्रियाओं से जो बात व्यक्त की जा रही है अंग्रेजी में वहाँ की जा सकती क्योंकि उसमें इस प्रकार की सहायक क्रियाएँ हैं ही नहीं। ऐसी स्थिति में हिन्दी 'लड़का गिर पड़ा' या 'लड़का गिर गया' का the boy fell या fell down रूप में अंग्रेजी में अनुवाद अर्थ और अभिव्यक्ति की दृष्टि से केवल निकट का ही माना जाएगा। मूल और अनुवाद को पूर्णतया एक या समान नहीं माना जा सकता। इसी तरह मान लें, किसी नाटक में एक स्थान पर आता है आइए दूसरे स्थान पर आता है आ जाइए और तीसरे स्थान पर आता है तशरीफ लाइए। मोटे रूप से इन तीनों के अर्थ में भले समानता हो, किन्तु गहराई से विचार करें तो इनमें अर्थ का सूक्ष्म अंतर है। यदि कोई व्यक्ति अंग्रेजी, रूसी या इस्तोनियन भाषा में इन तीनों का अनुवाद करना चाहे तो पहले का ही पूर्णत सटीक अनुवाद कर सकता है। शेष का उसे निकटतम अनुवाद या यथासम्भव समान अभिव्यक्ति में अनुवाद ही करना पड़ेगा, क्योंकि इन भाषाओं में ऐसी अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, जो शब्दत तथा अर्थत दूसरी तथा तीसरी अभिव्यक्तियों के पूर्णत समान हों।

एक बात और। उपर्युक्त कठिनाई अनुवाद में एक और परेशानी को जन्म

देती है। चूंकि स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा में पूर्णतः समतुल्य या समान अभिव्यक्तियाँ नहीं मिलतीं अतः अनुवादक कभी-कभी स्रोताभिव्यक्ति और लक्ष्याभिव्यक्ति में समानता लाने के मोह में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोग भी लक्ष्य भाषा में यथावत ला देने की गलती कर बैठता है जो लक्ष्य भाषा की अपनी प्रकृति में सहज नहीं होते। ऐसे अनुवादों में लक्ष्य भाषा की अपेक्षित सहजता नष्ट हो जाती है। मान लीजिए अंग्रेजी का एक वाक्य है—The man who fell from the tree died in the hospital बहुत से हिन्दी अनुवादक हिन्दी में इसे 'वह आदमी जो पेड़ से गिरा था अस्पताल में मर गया' रूप में रख देंगे। किन्तु हिन्दी भाषा की प्रकृति से परिचित व्यक्ति इस वाक्य को देखते ही समझ जाएँगे कि यह अंग्रेजी की छाया है क्योंकि हिन्दी का अपना प्रयोग है 'जो आदमी पेड़ से गिरा था अस्पताल में मर गया'। पहले हिन्दी वाक्य में 'वह' the का शब्दानुवाद मात्र है। या भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी से इतनी अधिक प्रभावित हो चुकी हैं कि ऐसे बहुत से प्रयोग अब अपने सहज प्रयोग लगने लगे हैं। इसी प्रकार हिन्दी 'इस विषय में आपका दृष्टिकोण गलत है' का संस्कृत में अनुवाद करते समय यदि कोई 'दृष्टिकोण' शब्द का प्रयोग कर तो गलत होगा क्योंकि संस्कृत में 'दृष्टिकोण' शब्द का प्रयोग नहीं होता, इस अर्थ में वहां 'दृष्टि' शब्द आता है—अस्मिन् विषय भवदीया दृष्टि अशुद्धा। कहने का आशय यह है कि अनुवादक को अनुवाद करते समय इस बात से बहुत सतर्क रहना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद उसकी सहज प्रकृति के सर्वथा अनुरूप हो स्रोत भाषा की किसी भी रूप में छाया न हो।

उपर्युक्त बातों के प्रकाश में अनुवाद को निम्नांकित रूप में परिभाषित किया जा सकता है—

एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है।

इस परिभाषा में तीन बातें ध्यान देने की हैं—

(क) अनुवाद का मूल उद्देश्य है स्रोत भाषा की रचना के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासम्भव अपने मूल रूप में लाना।

(ख) अनुवाद के लिए स्रोत भाषा में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस अभिव्यक्ति का प्रयोग है उसके 'यथासम्भव समान' या अधिक से अधिक समान अभिव्यक्ति की खोज लक्ष्य भाषा में होनी चाहिए।

(ग) लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के यथासम्भव समान जिस अभिव्यक्ति की खोज हो वह लक्ष्य भाषा में सहज हो, अर्थात उसके सहज प्रवाह या प्रयोग के अनुकूल हो, स्रोत भाषा की छाया से युक्त न हो। यह ठीक ही कहा गया है कि अनुवाद एक कस्टम-हाउस है जिसमें होकर स्रोत भाषा के प्रयोग का विदेशी माल

लक्ष्य भाषा म अन्य साना की तुलना म अधिक था जाता है यदि अनुवादक अपेक्षित सतकता न बरत।[1]

अनुवाद को तरह तरह से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। तीन प्रसिद्ध परिभाषाएँ हैं—

(1) Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language first in meaning and secondly in style —Nida

(2) The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language —Catford

(3) Translation is the transference of the content of a text from one language into another, bearing in mind that we cannot always dissociate the content from the form —Foresten

ऊपर इन परिभाषा के मन्तव्य ने भी एक सक्षिप्त परिभाषा दी है, किन्तु अनुवाद की वास्तविक प्रक्रिया की दष्टि स विस्तत रूप म उसकी व्याख्यापरक परिभाषा कुछ इस प्रकार दी जा सकती है

भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनत और कथ्यत) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन है। अर्थात प्रतिप्रतीकन यथा साध्य ऐसा होना चाहिए कि स्रोत भाषा के कथ्य मे लक्ष्य भाषा म आने पर न तो विस्तार हो न सकोच न अन्य किसी प्रकार का परिवतन। साथ ही स्रोत भाषा म कथ्य और अभिव्यक्ति का जसा सामजस्य हो लक्ष्य भाषा मे अनूदित होने पर भी यथासाध्य दोनों का सामजस्य वसा ही हो। समवत मूल सामग्री पढ या सुनकर स्रोत भाषा भाषी जो अथ ग्रहण करता हो अनूदित सामग्री पढ या सुन कर लक्ष्य भाषा भाषी भी ठीक वही ग्रहण करे।

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के कई भेद या प्रकार हो सकते हैं। इन भेदों या प्रकारों के मुख्य आधार चार हैं (क) गद्यत्व पद्यत्व, (ख) साहित्यिक विधा (ग) विषय (घ) अनुवाद की प्रकृति। इनम प्रथम तीन अपेक्षाकृत बाह्याधार है तथा अन्तिम

1 Translation is a customhouse through which passes if the custom officers are not alert more smuggled goods of foreign idioms than through any other linguistic frontier

आंतरिक, और इसीलिए यही अधिक सार्थक है। इन आधारों पर मुख्य भेद नीचे दिए जा रहे हैं।

(क) अनुवाद के गद्य-पद्य होने के आधार पर—

(1) गद्यानुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह अनुवाद गद्य में होता है। प्रायः मूल गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है, किन्तु यह कोई आवश्यक नहीं है। मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद किया जा सकता है, और ऐसे अनुवाद हुए भी हैं।

(2) पद्यानुवाद—यह अनुवाद पद्य में होता है। प्रायः पद्य का अनुवाद ही पद्य में होता है किन्तु कभी-कभी मूल गद्य का भी अनुवाद पद्य में किया जाता है और ऐसे अनेक अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुए हैं। इसे 'छन्दानुवाद' या 'छन्दबद्ध अनुवाद' भी कहते हैं।

(3) मुक्तछन्दानुवाद—यह अनुवाद मुक्त छन्द में होता है। इसमें जो छन्द होता है वह तुक-मात्रा आदि उन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक हैं। शेक्सपीयर के कई हिन्दी अनुवाद इसके उदाहरण हैं। सामान्यतः मूल सामग्री मुक्त छन्द में होने पर ही मुक्तछन्दानुवाद किया जाता है, किन्तु मूल गद्य या पद्य के भी ऐसे अनुवाद हो सकते हैं और होते हैं।

(ख) साहित्यिक विधा के आधार पर—

इस आधार पर कई भेद हो सकते हैं किन्तु मुख्य भेद निम्नांकित हैं—

(1) काव्यानुवाद—किसी काव्य रचना का अनुवाद। यह अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्तछन्द किसी में भी हो सकता है। या प्रायः काव्य का अनुवाद पद्य, या मुक्तछन्द में ही किया जाता है। यह प्रश्न विवाद का रहा है कि काव्य का अनुवाद भी हो सकता है या नहीं। स्पष्ट ही काव्यानुवाद होते रहे हैं अतः अवश्य हो सकते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि शैली और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से मूल का अनुगामी सफल अनुवाद करना बहुत कठिन है। कभी-कभी तो यह इतना कठिन होता है कि असम्भव की सीमा छू लेता है।

(2) नाटकानुवाद—किसी नाटक का नाटक रूप में अनुवाद। या अन्य साहित्यिक विधाओं के भी नाटक रूप में अनुवाद (रूपान्तरण) हो सकते हैं और इसके ठीक उलटे नाटक के भी काव्य या कहानी रूप में अनुवाद (रूपान्तरण) होते हैं। नाटक का नाटक रूप में अनुवाद काफी कठिन होता है क्योंकि उसे पठनीय होने के साथ-साथ ऐसा होना चाहिए कि रंगमंच पर खेला भी जा सके। इसीलिए रंगमंच की सारी आवश्यकताओं तथा विशेषताओं का जानकार ही सफल नाटकानुवाद कर सकता है।

(3) कथानुवाद—कथा साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) का कथा साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) में अनुवाद। इस श्रेणी का अनुवाद काव्यानुवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है।

इस आधार पर रेखाचित्रानुवाद निबन्धानुवाद संस्मरणानुवाद आदि अन्य भी कई भेद विभेद हो सकते हैं।

(ग) विषय के आधार पर—

विषय के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद किए जा सकते है। जैसे सरकारी रिकार्डों का अनुवाद, गजटियरो का अनुवाद पत्रकारिता से सम्बद्ध अनुवाद, विधि साहित्य का अनुवाद वैज्ञानिक (प्राकृतिक तथा सामाजिक) साहित्य का अनुवाद ऐतिहासिक साहित्य (अभिलेखादि) का अनुवाद धार्मिक साहित्य (बाइबिल आदि) का अनुवाद तथा ललित साहित्य का अनुवाद आदि।

(घ) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर—

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर भी अनुवाद के कई भेद किए जा सकते हैं। मूलत इस प्रकार के दो भेद होते हैं

(1) मूलनिष्ठ अनुवाद—ऐसा अनुवाद जो यथासाध्य मूल का अनुगमन करे। मूल के अनुगमन में अनुवादक का ध्यान विचार (कथ्य) तथा अभिव्यक्ति (कथन पद्धति) दोनों ही पर होता है। वह अपने अनुवाद को यथासम्भव दोनों ही दृष्टियों से मूल के निकट रखना चाहता है।

(2) मूलमुक्त अनुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है अनुवाद के इस प्रकार में अनुवादक को काफी छूट रहती है किन्तु यह छूट प्राय अभिव्यक्ति या कथन शैली की तरफ ही विशेष होती है कथ्य या विचार की तरफ से नहीं। कथ्य या विचार की दृष्टि से तो अनुवाद को मूलबद्ध या मूलनिष्ठ ही होना चाहिए क्योंकि वह यदि ऐसा न हो तो उसे अनुवाद कहा ही नहीं जा सकता। हा, संक्षेप की दृष्टि से उसमें कुछ बातें छोड़ दी जा सकती हैं। जहा तक अभिव्यक्ति या कथन शैली का प्रश्न है मूलमुक्त अनुवादक लक्ष्य भाषा की सुविधानुसार, अनुवाद के उद्देश्यानुसार तथा अनुवाद पढ़ने या सुनने वालो की योग्यतानुसार परिवर्तन परिवर्धन कर सकता है। इसके अतिरिक्त सामग्री को अधिक बोधगम्य बनाने के लिए उदाहरणों-उपमानो आदि का देशीकरण भी किया जा सकता है। मूलमुक्त अनुवाद को मूलाधारित या मूलाधृत भी कहा जा सकता है।

सामान्यत जो अनुवाद किए जाते हैं उनमें प्राय उपयुक्त दो (मूलनिष्ठ, मूलमुक्त) में से ही किसी एक का या मिश्रित रूप से सुविधानुसार दोनों का प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कुछ अन्य प्रकारों का भी उल्लेख किया जाता है, जो तत्वतः मूलनिष्ठ और मूलमुक्त से भिन्न नहीं हैं, बल्कि अनेक बातों में एक दूसरे पर आवरलप करते हैं। ये अन्य प्रकार अधोलिखित हैं—

(1) शब्दानुवाद—यह शब्द 'शब्द+अनुवाद' से बना है। मोटे रूप में इस प्रकार के अनुवाद में मूल के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है। शब्दानुवाद का प्रयोग एक से अधिक प्रकार के अनुवादों के लिए होता रहा है। इसीलिए इसके कई उपभेद किए जा सकते हैं। अंग्रेजी में लिटरल ट्रांसलेशन, वर्बल ट्रान्सलेशन, वर्ड-फ़ार-वर्ड ट्रांसलेशन आदि इसी के वाहक हैं। शब्दानुवाद के मुख्य उपभेद तीन हो सकते हैं

(अ) जिसमें मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्रायः उसी क्रम में अनुवाद किया जाय। जैसे I am going home का 'मैं हूँ जा रहा घर'। बाइबिल की पुरानी पोथी के कई यूनानी अनुवाद लगभग इसी प्रकार के किए गए थे। अनुवाद का यह निकृष्टतम रूप है। कभी कभी ऐसा शब्दानुवाद पूर्णतः अबोधगम्य हो जाता है क्योंकि हर भाषा में शब्द क्रम एक जैसा नहीं होता। जैसे Will he go का 'गा वह जाना'। वस्तुतः इस प्रकार का 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' अनुवाद 'अनुवाद' कहलाने का अधिकारी नहीं है। इस प्रकार के कुछ और उदाहरण हो सकते हैं मेरा सर चक्कर खा रहा है—My head is eating circles वह पानी-पानी हो गया—he became water and water. ये उदाहरण थोड़े भिन्न होते हुए भी, प्रायः उसी श्रेणी में हैं।

(आ) ऐसा अनुवाद जिसमें क्रम आदि तो मूल का नहीं रखते किन्तु मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखते हैं और इसीलिए मूल की शैली अनुवाद में स्पष्ट झलकती है। हिन्दी अखबारों में अंग्रेजी से किए गए अनुवादों में ऐसे उदाहरण प्रायः मिलते हैं। कुछ उदाहरण हैं

It is an interesting point
यह एक रोचक बिन्दु है।
It sounds paradoxical
यह विरोधाभास-सा सुनाई पड़ता है।
It was hopelessly obscure
यह निराशाजनक ढंग से अस्पष्ट था।
The insects called silver fish
कीड़े जो रजत मछली कहलाते हैं
(Silver fish वस्तुतः कोई मछली नहीं होती। यह एक चमकीले कीड़े का नाम है।)

There is very small distance between these two cities

इन दो नगरो के बीच बहुत छोटी दूरी (बहुत कम फासला) है।
There is a custom amongst the Red Indians
लाल भारतीयों मे एक रिवाज है ।
इसके उलटे हिन्दी अंग्रेजी के उदाहरण भी लिए जा सकते हैं
बत्ती जलाओ।
Burn the lamp
उसने मच मे दो गोल किए।
He made two goals in the match
वैद्य ने उसकी नब्ज देखी।
The Vaidya saw her pulse
फूल मत तोड़ो।
Dont break flowers
आदि।

इस प्रकार के शब्दानुवाद, पहले प्रकार के शब्दानुवाद जितने घटिया न होने पर भी घटिया ही कहे जाएँगे। इनका अर्थ पहले की तरह अस्पष्ट तो नही रहता, किन्तु लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति इनमे नही आ पाती, बल्कि स्रोत भाषा की शलीय छाया लक्ष्य भाषा पर बुरी तरह छाई रहती है, अत सहज प्रयोग की दृष्टि से ऐसे अनुवाद गलत तथा हास्यास्पद होते हैं।

(ङ) शब्दानुवाद का तीसरा रूप वह है जिसे उत्तम कोटि का या आदर्श शब्दानुवाद कहा जा सकता है। इसमे मूल के प्रत्येक शब्द बल्कि प्रत्येक अभिव्यक्ति इकाई (जसे पद पदबन्ध, मुहावरा लोकोक्ति उपवाक्य वाक्य) के लक्ष्य भाषा म प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्य भाषा मे सम्प्रेषित किया जाता है। इसम किसी भी शब्द या अभिव्यक्ति इकाई की उपेक्षा नही की जाती। दूसरे शब्दो म अनुवादक न तो मूल की कोई अभिव्यक्ति इकाई छोड सकता है न अपनी ओर से कोई अभिव्यक्ति इकाई जोड सकता है। सक्षप म शब्दानुवाद के लिए मैं एक आदर्श सूत्र देना चाहूँगा 'शब्द के स्तर पर मत छोडो, मत जोडो'। उदाहरणार्थ The boy who fell from the tree died in hospital का शब्दानुवाद होगा वह लडका जो पेड से गिरा था अस्पताल मे मर गया।' हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल और अच्छा शब्दानुवाद होगा— जो लडका पेड से गिरा था अस्पताल म मर गया। इसके विपरीत इसका भावानुवाद होगा— पेड से गिरने वाला लडका अस्पताल म मर गया। इस प्रकार का शब्दानुवाद ऐसी सामग्री के अनुवाद मे तो बहुत सफल नही हो सकता जिसम सूक्ष्म भावो का शलीप्रधान चित्रण हो किन्तु तथ्यात्मक वाङ्मय— जसे गणित, ज्योतिष, सगीत, विज्ञान, विधि आदि—के लिए तो ऐसा शब्दानुवाद

ही अपेक्षित है। मुख्यतः विधि-साहित्य का प्रामाणिक अनुवाद तो शब्दानुवाद ही माना जाएगा, भावानुवाद नहीं, क्योंकि उसमें हर शब्द का अपना महत्त्व होता है और कानूनी गहराई में जाने पर उसकी अपनी सार्थकता होती है।

शब्दानुवाद की मुख्य कमियाँ ये हैं

(1) स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा यदि शब्दाय, विशिष्ट प्रयोग, मुहावरे तथा वाक्यरचना आदि की दृष्टि से बहुत समान हों, तब तो शब्दानुवाद बहुत घटिया नहीं होता, किन्तु दोनों में यदि इन दृष्टियों से असमानता हो तो, असमानता जितनी ही अधिक होगी, शब्दानुवाद उतना ही घटिया होगा।

(2) शब्दानुवाद में अनुवादक के बहुत सतर्क रहने पर भी प्रायः स्रोत भाषा का प्रभाव स्पष्ट रहता है। मूल की उस गंध के कारण अनुवाद की भाषा प्रायः कृत्रिम तथा निष्प्राण हो जाती है तथा उसमें मूल रचना का प्रवाह नहीं रह जाता, जो बढ़िया अनुवाद के लिए अनिवार्यतः आवश्यक है।

(3) यत्र-तत्र शब्दानुवाद कभी-कभी पूर्णतः अबोधगम्य तथा हास्यास्पद भी हो जाता है।

किन्तु यदि अनुवादक अत्यंत सजगता बरतकर उपर्युक्त त्रुटियों से बच सके तो बढ़िया शब्दानुवाद (यदि वह मूल के भाव को सहज लक्ष्य भाषा में सफलतापूर्वक व्यक्त करने में समर्थ है) ही वास्तविक अनुवाद है।

पंक्ति प्रति-पंक्ति (Interlinear translation) नाम का प्रयोग भी शब्दानुवाद के लिए कभी-कभी किया जाता है।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में सहज रूप में वाक्य-के लिए-वाक्य अनुवाद नहीं किए जा सकते, किन्तु कोई अनुवादक यदि वाक्य के लिए वाक्य अनुवाद करे, तो उस शब्दानुवाद को वाक्य प्रति वाक्य अनुवाद भी कहा जा सकता है।

(2) भावानुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इस प्रकार के अनुवाद में मूल के शब्द, वाक्यांश वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करते हैं। शब्दानुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री के शरीर पर विशेष होता है तो इसमें उसकी आत्मा पर। अंग्रेज़ी में 'सेंस फार सेंस' (sense for sense) ऐसे ही अनुवाद के लिए कहा जाता है। भावानुवाद कई प्रकार का हो सकता है। कभी तो मूल के वाक्यों के हर पद या शब्द पर ध्यान न देकर पदबंध का भावानुवाद (जैसे भारत में पैदा होने वाला गेहूँ के लिए Indian wheat), कभी उपवाक्य का भावानुवाद (जैसे 'गेहूँ जो भारत में पैदा होता है' का Indian wheat), कभी वाक्य का भावानुवाद कभी एकाधिक वाक्यों का एक में मिलाकर उनका भावानुवाद कभी पूरे पैराग्राफ का भावानुवाद और कभी एकाधिक को मिलाकर उनका भावानुवाद करते हैं। सामान्यतः मूल सामग्री

भावों वाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं, और यदि वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक या विचार प्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं। किन्तु ऐसी भी स्थितियाँ कभी कभी आती हैं जब अनुवादक किसी अंश का बढ़िया शब्दानुवाद नहीं कर पाता तो उसे भावानुवाद ही करना पड़ता है। इस प्रकार अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाई दूर करने का भावानुवाद एक अच्छा रास्ता है। भावानुवाद का सबसे बड़ा लाभ यह है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों की गन्ध नहीं आ पाती अनुवाद मूल का यन्त्रवत अनुसरण नहीं रह जाता और उसमें मौलिक रचना जैसा सहज प्रवाह आ जाता है। शब्दानुवादक प्रायः शुद्ध भाषान्तरकार के रूप में ही हमारे सामने आता है, किन्तु भावानुवादक कारयित्री प्रतिभा वाले लेखक (Creative writer) के रूप में हमारे सामने आता है। किन्तु साथ ही भावानुवाद की यह भी सीमा है कि उसमें मूल की शैली आदि न आने से वह प्रायः अनुवाद न रहकर मूल पर आधारित मौलिक रचना सा हो जाता है, अतः पाठक उसे मौलिक रचना का सा आनन्द लेते हुए पढ़ तो सकता है किन्तु उसे पढ़कर मूल रचना की शैली या उसके अभिव्यक्ति सौन्दर्य या अभिव्यक्ति पक्ष का उसे पूरी तरह पता नहीं चल पाता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पाठक किसी रचना को भाव या विचार से अधिक मूल लेखक के अभिव्यक्ति पक्ष को जानने के लिए ही पढ़ना चाहता है। भावानुवाद ऐसे पाठकों के लिए भ्रामक होता है क्योंकि भावानुवाद में प्रायः अनुवादक की अपनी शैली आ जाती है, और उसका अपना व्यक्तित्व मूल लेखक के व्यक्तित्व पर एक सीमा तक छा जाता है।

इसीलिए आदर्श अनुवाद वह है जो शब्दानुवाद तथा भावानुवाद दोनों पद्धतियों को यथावसर अपनाते हुए मूल भाव के साथ साथ यथाशक्ति मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है और साथ ही लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है।

(3) छायानुवाद—हिन्दी में छाया तथा छायानुवाद दो शब्दों का प्रयोग काफी मिलते जुलते अर्थों में होता है। 'छाया' शब्द का एक प्रकार का पुराना प्रयोग संस्कृत नाटकों में मिलता है। उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं किन्तु पुस्तकों में प्राकृत कथन या छन्द के साथ उसकी संस्कृत छाया भी रहती है। स्पष्ट ही इस अर्थ में छायानुवाद शब्द का भी प्रयोग हो सकता है। 'छाया' शब्द का एक दूसरा प्रयोग तब होता है जब किसी पुस्तक की कुछ छाया या छायावत धुंधला प्रभाव लेते हुए स्वतन्त्र रूप से कोई रचना की जाए। इसमें प्रायः नाम स्थान वातावरण आदि का देशीकरण कर लिया जाता है। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' के कथानक पर अनातोल फ्रांस के उपन्यास 'थायां' की छाया है। इस अर्थ में छायानुवाद का प्रयोग मेरे विचार में नहीं किया जाना चाहिए। 'चित्रलेखा' पर 'थायां' की छाया ही है वह छायानुवाद

नहीं है। छायानुवाद उस अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न कर, अपितु दोनों ही दृष्टियों से मूल से (शब्द और भाव) मुक्त होकर अर्थात् बिना मूल से विशेष बँधे उसकी छाया लेकर चले।

(4) सारानुवाद—इसमें मूल की मुख्य बातों का मूलमुक्त अनुवाद होता है। यह संक्षिप्त, अति संक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार का हो सकता है। भारतीय लोकसभा के वाद विवाद का जो अनुवाद किया जाता है, वह प्रायः ऐसा ही होता है। अपनी संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्यभाषा में स्वाभाविक-सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों में सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद ही अधिक उपयोगी पाया गया है। लम्बे भाषणों का सद्य अनुवाद करने वाले दुभाषिए भी प्रायः इसी का प्रयोग करते हैं।

(5) व्याख्यानुवाद—इसमें मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है। स्पष्ट ही व्याख्या व्याख्याता के व्यक्तित्व, ज्ञान तथा दृष्टिकोण पर आधृत होती है तथा उसमें कथ्य के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरण, प्रमाण इत्यादि जोड़े जा सकते हैं। इसी कारण व्याख्यानुवाद में अनुवादक केवल अनुवादक न रहकर काफी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। लोकमान्य तिलक का गीतानुवाद इसी तरह का है। संस्कृत के विभिन्न आर्ष ग्रंथों के सनातनधर्मी एवं आर्यसमाजी व्याख्या ग्रंथ भी इसके अच्छे उदाहरण हैं। व्याख्यानुवाद में अनुवादक अनुवाद से अधिक बल मूल की बातों को विस्तार के साथ अपने ढंग से समझाने पर देता है। इसीलिए तत्त्वतः व्याख्यानुवाद अनुवाद से अधिक व्याख्या या भाष्य होता है। इसे 'भाष्यानुवाद' भी कह सकते हैं। मूल की तुलना में यह काफी बड़ा होता है। षड्दर्शन ग्रंथों के व्याख्यानुवादों में एक-एक सूत्र को कभी-कभी दो दो तीन-तीन पृष्ठों में समझाया गया है। व्याख्यानुवाद काफी प्रभावी होता है क्योंकि इसमें मूल की अस्पष्ट बातें विश्लेषित तथा उदाहृत होकर स्पष्ट हो जाती हैं परन्तु इसमें एक डर यह होता है कि अनुवादक या भाष्यकार मूल लेखक के विचारों में कुछ अपना रंग आरोपित करके उसके साथ अन्याय भी कर सकता है।

(6) सहज अनुवाद—यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है, जिसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का अभिव्यंजित और अर्थ लक्ष्य भाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समानकों (closest natural equivalents) द्वारा अनुवाद करता है। इसे स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहा जा सकता है। अनुवादक इसमें यथासाध्य अपना व्यक्तित्व नहीं आने देता। अनुवाद मूल जैसा होता है। अर्थात् अनुवादक का प्रयास यह होता है कि मूल को पढ़ या सुनकर स्रोत भाषा भाषी जो ग्रहण करे, अनुवाद को पढ़ या सुनकर लक्ष्य भाषा भाषी भी ठीक वही ग्रहण करे।

चतुर्वेदी जी ऐसी शैली में अनुवाद करेंगे तो मैं उर्दू में इसका अलग अनुवाद न कराता तथा प्राय इसे ही उर्दू में भी प्रकाशित करवा देता। यहाँ यह बात भी ध्यान देने की है कि अनुवादक चतुर्वेदी ने होरेस की कृति के नाम में तो काव्य में उदात्त तत्त्व अर्थात काव्य और उदात्त का प्रयोग किया है, किन्तु मौलाना आजाद की पुस्तक के नाम में स्वतन्त्रता शब्द का प्रयोग न कर आजादी का प्रयोग किया है। कहने का आशय यह है अनुवाद की शैली ऐसी होनी चाहिए जो मूल कृति की शैली की अनुगामिनी हो।

इस प्रसंग में 'शैली' शब्द भी विचारणीय है। जब हम अनुवाद के मूल की शैली के अनुगमन की बात उठाते हैं तो शैली का क्या अर्थ है? गहराई से देखा जाए तो सक्षेप में शैली में वह सब कुछ आ जाता है जो किसी भी रचना में कथ्य को पाठक या श्रोता तक पहुँचाने के लिए होता है और जिस समवेततः अभिव्यक्ति पक्ष या कला-पक्ष की संज्ञा देते हैं। कविता की शैली की परख मुख्यतः शब्द चयन, अलंकार, शब्द शक्ति, गुण, नाद सौन्दर्य, ध्वनि, दोष तथा छन्द आदि से होती है। गद्य में छन्द को छोड़कर न्यूनाधिक रूप में ये सभी बातें आ सकती हैं। हिन्दी में शैली के भेदों या प्रकारों के नाम पर व्यास शैली, अलंकृत शैली, उदात्त शैली, मुहावरेदार शैली, लाक्षणिक शैली, व्यंजक शैली, सूक्ति शैली, सरल शैली, सरस शैली, सामान्य शैली तथा सपाट शैली आदि के नाम लिए जाते हैं। विश्व की अन्य भाषाओं में भी इसी प्रकार की कुछ कम या अधिक शैलियों के नाम हो सकते हैं।

अनुवादक को चाहिए कि मूल की शैली को—चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो—यथासाध्य अनुवाद में भी लाने का यत्न करे, हालांकि ऐसा करना न तो सदा सरल होता है और न बहुत सम्भव ही। उसका कारण यह है कि हर भाषा की प्रकृति में कुछ उसकी निजी विशेषताएं होती हैं जो दूसरी भाषा में होती ही नहीं। फिर, जिस भाषा में वे हैं ही नहीं, उसमें कोई भला ला कैसे सकता है? फिर भी यत्न तो होना चाहिए। सीधे न सही किसी और ढंग से सही।

शैली के मुख्य तत्त्वों में शब्द चयन, अलंकार, शब्द शक्तियाँ, ध्वनि तथा छन्द को अनुवाद में ठीक उतार पाने में कभी-कभी काफी कठिनाई होती है। शब्द चयन का ही प्रश्न लें। किसी भाषा में पर्यायों का आधिक्य होता है तो किसी में वे कम होते हैं अतः सभी भाषाओं में सभी स्थलों पर शब्द चयन कर पाने की गुंजाइश नहीं होती। उदाहरणार्थ हिन्दी के शब्द समूह में पर्यायों की काफी गुंजाइश है क्योंकि इसमें देशज शब्दों के अलावा तीन स्रोतों के शब्द हैं—(1) संस्कृत तत्सम (2) तद्भव (3) विदेशी। इसीलिए पृथ्वी, धरती, ज़मीन या सुन्दर, सुघर, खूबसूरत जैसी पर्याय शृंखलाएँ हैं, जिनके सन्दर्भीय कभी-कभी एक दूसरे से दूर होते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी की तीन शैलियाँ हैं

संस्कृतनिष्ठ हिंदी, अरबी फारसी युक्त उर्दू, बीच की शैली हिंदुस्तानी। सभी भाषाओं में ये अंतर ठीक इसी प्रकार नहीं मिल सकते अतः सभी भाषाओं में अनुवाद में इन्हें लाया भी नहीं जा सकता। रूप चयन की कठिनाई को भी इसी के साथ मिला सकते हैं। हिंदी में बैठ, बैठा बैठिए, बैठें ये चार आना के रूप हैं जिनमें सूक्ष्म अंतर है। अंग्रेजी, रूसी आदि यूरोपीय भाषाओं में इन्हें उतार पाना असम्भव है। हाँ, जब हम किसी अन्य भाषा से हिन्दी में अनुवाद कर रहे हों तो प्रसंगानुसार उपयुक्त रूप का चयन कर सकते हैं।

अलंकारों की भी यही स्थिति है। हिंदी में यमक तथा श्लेष अनेकार्थी शब्दों पर निर्भर करते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि लक्ष्य भाषा में ऐसा कोई शब्द हो जिसके उतने अर्थ होते ही हों। उदाहरण के लिए, 'कनक कनक ते सौ गुनी' का शैलीगत सौंदर्य उस भाषा के अनुवाद में उतारा ही नहीं जा सकता, जिसमें कोई एक ऐसा शब्द ('कनक' का पर्याय) न हो जिसके 'सोना' और 'धतूरा' दोनों अर्थ होते हों। अलंकारों के संदर्भ में संक्षेप में यह कह सकते हैं कि जहां स्रोत सामग्री में उपमा रूपक आदि अर्थालंकारों के चमत्कार हों उन्हें ज्यों का त्यों या थोड़े-बहुत हेर फेर के साथ लक्ष्य भाषा में सम्प्रेषित किए जाने की संभावना हो सकती है, परन्तु जहां स्रोत भाषा में अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि शब्दालंकारों से चमत्कार पैदा किया गया हो वहां लक्ष्य भाषा में वैसा शैली-चमत्कार ला पाना बल्कि अनुवाद कर पाना ही कठिन हो जाता है। दूसरी ओर स्रोत भाषा में कोई अलंकार या मुहावरा न आने पर भी कुशल अनुवादक अपने अनुवाद में अनुप्रास की छटा या मुहावरे का सौंदर्य ला सकता है।

शब्द शक्तियां, नाद सौन्दर्य तथा ध्वनि आदि की भी प्रायः यही स्थिति है। वस्तुतः 'कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि' अथवा 'घन घमंड नभ गरजत घोरा' अथवा 'मृदु मन्द मंद मंथर मंथर' का शैलीगत सौंदर्य अनुवाद में ला पाना सभी अनुवादकों के बस का नहीं है।

छन्द तो प्रायः विभिन्न भाषाओं में अलग अलग ही होते हैं। या अनुवादकों ने लक्ष्य भाषा में नए छन्द लाने के यत्न किए हैं। उदाहरण के लिए महाभारत तथा रामचरितमानस के रूसी अनुवादकों ने अपने अनुवाद मूल छन्द में किए हैं। अंग्रेजी में भी कुछ इस प्रकार के अनुवाद विविध भाषाओं से हुए हैं। किन्तु ऐसा हमेशा सम्भव होता नहीं। या सर्वत्र ऐसा करना बहुत सार्थक भी नहीं होता, क्योंकि किसी छन्द का जो प्रभाव स्रोत भाषा भाषी पर पड़ता है आवश्यक नहीं कि लक्ष्य भाषा भाषी पर भी वही पड़े।

इस तरह संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इन सभी दृष्टियों से यथासाध्य मूल शैली को लाने का प्रयत्न होना चाहिए। प्रयत्न होने पर इस दिशा में अधिक नहीं तो कुछ सफलता मिलने की तो सम्भावना हो ही सकती है।

यह बात साधारण अनुवाद की दृष्टि से की जा रही थी। कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिनको दृष्टि में रखते हुए मूल कृति की शैली में कभी-कभी थोड़े-बहुत परिवर्तन अपेक्षित होते हैं। उदाहरण के लिए कल्पना कीजिए कि किसी पुस्तक का अनुवाद सुपठित वर्ग के लिए, नवसाक्षरों के लिए, किशोरों के लिए तथा बच्चों के लिए किया जा रहा है, तो निश्चय ही शब्द चयन आदि की दृष्टि से शैली को इन चारों में एक नहीं रखा जा सकता। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद की इस प्रकार की शैली के लिए एक बहुत बड़ा निर्णायक तत्त्व यह है कि अनुवाद किसके लिए किया जा रहा है उसके पाठक कौन होंगे? इस तरह पाठकों के ज्ञान और भाषा-स्तर की दृष्टि से अनुवाद की एकाधिक शैलियाँ हो सकती हैं और अनुवादक को उनका ध्यान रखते हुए शैली में परिवर्तन करना चाहिए।

मान लें, किसी नाटक का अनुवाद किया जा रहा है। यदि नाटक रंग-मंच के लिए है तो उसकी शैली अपेक्षाकृत सरल होनी चाहिए, ताकि कथोपकथन का अर्थ श्रोता—जो भाषा ज्ञान की दृष्टि से हर श्रेणी के हो सकते हैं—सुनते ही समझ जाएँ किन्तु इसके विपरीत यदि नाटक केवल पढ़ने के लिए है तो शैली थोड़ी कठिन भी हो तो कोई बात नहीं, क्योंकि पाठक अपने समझने की क्षमता की दृष्टि से उसे अपनी सुविधानुसार तेजी से या धीमी गति से पढ़ सकता है। इस तरह ऐसी अपेक्षाएँ भी अनुवादक की शैली को प्रभावित करती हैं।

शैली का सम्बन्ध पुस्तक या रचना के विषय से भी बहुत अधिक होता है। इस दृष्टि से विभिन्न विषयों या रचनाओं को मोटे रूप से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है (क) शैली प्रधान (ख) तथ्य प्रधान।

यह बात ध्यान देने की है कि यह भेद मोटे ढंग से किया जा रहा है। इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि शैली प्रधान रचनाओं में तथ्य नहीं होता या तथ्य प्रधान रचनाओं का शैली-पक्ष नहीं होता। दोनों में दोनों होते हैं किन्तु एक मुख्य रूप से होता है तो दूसरा गौण रूप में। शैली प्रधान रचनाएँ कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, गद्यकाव्य, ललित निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि की होती हैं तो तथ्य प्रधान रचनाएँ इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, विज्ञान, विधि, दर्शन, समाजशास्त्र आदि की।

शैली प्रधान साहित्यिक विधाओं की हर भाषा में अपनी अपनी शैलियाँ होती हैं और ये शैलियाँ भी हर युग में एक नहीं होतीं। अनुवादक को लक्ष्य भाषा के काल और उसकी परम्परा के अनुसार शैली अपनानी चाहिए। उदाहरण के लिए, हिन्दी में आज भी शब्द-भण्डार के स्तर पर आलोचना की शैली अधिक संस्कृतनिष्ठ है किन्तु उपन्यास, कहानी, नाटक में यह बात नहीं है। इनकी शैली अपेक्षाकृत सरल है। इसका अर्थ यह हुआ कि आज कोई व्यक्ति यदि किसी अन्य भाषा की आलोचनात्मक पुस्तक का अनुवाद हिन्दी में करे तो वह उसे संस्कृतनिष्ठ

रखना चाहेगा, किन्तु यदि उपन्यास नाटक, कहानी का करे तो बोलचाल की भाषा-शैली रखेगा। पहली में अरबी फारसी अंग्रेजी के शब्दों के आने की सम्भावना अपेक्षाकृत बहुत कम होगी किन्तु दूसरी में वे बहुत अधिक होंगे। छायावादी काल में स्थिति ऐसी नहीं थी। उस समय नाटक, उपन्यास तथा कहानी की भाषाशैली भी काफ़ी संस्कृतनिष्ठ हो सकती थी। अर्थात उस समय का अनुवादक उपन्यास तथा कहानी के अनुवाद में संस्कृतनिष्ठ शैली का प्रयोग कर सकता था, जब कि आज ऐसा करने में वे वह दस बार सोचेगा।

यह बात शब्द-चयन की दृष्टि से की जा रही थी। शैली के कई अन्य तत्वों के सम्बन्ध में भी इस प्रकार की बातें स्मरण रखने की हैं। उदाहरण के लिए, अलंकार या अलंकृत शैली को लेकर भी ऊपर की बातें एक सीमा तक प्रायः ज्यों-की-त्यों दुहराई जा सकती हैं।

तथ्य प्रधान साहित्य में प्रायः—अपवादों को छोड़कर—पारिभाषिक या अर्द्ध पारिभाषिक शब्दों से युक्त सपाट शैली होती है। उदाहरण के लिए, गणित, भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, प्राणिविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान आदि ऐसे ही विषय हैं। इनमें अनुवाद कला का मूल आधार पारिभाषिक और अर्द्ध-पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग है। यों तथ्य प्रधान कुछ विषय यथा साहित्य के इतिहास, राजनीति आदि ऐसे भी हैं जो तथ्य युक्त होते हुए भी प्रायः शैलीय सौन्दर्य से भी युक्त होते हैं। अतः, इनमें एक सीमा तक अनुवादक को शैली का ध्यान भी रखना पड़ता है—हाँ, वह ललित साहित्य से कम होता है और गणित, भौतिकविज्ञान आदि शुद्ध वैज्ञानिक विषयों में न्यून। संक्षेप में कथ्य की दृष्टि से जैसे-जैसे हम स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होते हैं, वैसे वैसे शैली अथवा कलापक्ष को सँवारने की प्रवृत्ति भी बढ़ती चली जाती है।

शैली के प्रसंग में अंतिम उल्लेख्य बात यह है कि ऊपर जिस शैली की बात की जा रही थी वह शब्द चयन, अलंकार, गुण शब्द शक्ति आदि ऐसी चीज़ों से सम्बद्ध थी, जिनका सम्बन्ध भाषा की व्याकरणिक संरचना से नहीं था। किन्तु इसके अतिरिक्त शैली का एक स्वरूप भाषा की व्याकरणिक संरचना से भी सम्बद्ध होता है। वस्तुतः शैली का काफी कुछ सम्बन्ध अनेक में से एक के चयन में है। मूल लेखक इसी प्रकार अनेक में से एक चुनकर अपनी विशिष्ट शैली में बात कहता है और अनुवादक लक्ष्य भाषा में अनेक में से एक चयन करके मूल की शैली यथासाध्य अनुवाद में लाने का यत्न करता है। अनेक भाषाओं में किसी-न-किसी स्तर पर व्याकरण (रूप रचना एवं वाक्य रचना) में भी अनेक में से एक के चयन की गुंजाइश होती है। हिन्दी के कुछ उदाहरण हैं—भारत की चीज़ें, भारतीय चीज़ें, प्रभावित करने वाली रचना, प्रभाव डालने वाली रचना, प्रभावी रचना, भला तुमने स्वीकारा तो, भला तुमने स्वीकार तो किया, मैंने उनमें

काम कराया मैंने उनसे काम करवाया, आज वह नही जाएगा, आज वह नही जाने का, कमल अब नही लडता है कमल अब नहीं लड़ता, मैं आज नही जा रहा हूँ, मैं आज नही जा रहा मुझसे नही हो सकता, मैं नही कर सकता, यह भी क्या काम है यह भी कोई काम है यह भी क्या कोई काम है, तू तो बडा लडाका है, चुप भी रह लडाका कहीं का चुप भी रह वह अमीर नही है वह कहा का अमीर है वह भी कोई अमीर है वह अमीर कहा है, इत्यादि। प्राय सभी भाषाओं मे व्याकरणिक स्तर पर इस प्रकार के एकाधिक प्रयोगों म से एक के चयन का अधिकार मूल लेखक की भाँति ही अनुवादक को भी है। इस चुनाव म कहीं-कहीं उसकी अपनी रुचि ही एक मात्र चयन का आधार होती है और इस चयनो मे अनुवादक की अपनी निजी शैली अभिव्यक्त होती है।

इस प्रकार अनुवादक यद्यपि मूल कृति की शैली अनुवाद के पाठक या श्रोता के लिए उपयुक्त शैली आदि कई बातो से बँधा है किन्तु फिर भी अनेक बातो— जसे व्याकरणिक सरचना शब्द चयन शब्द शक्ति गुण, छद आदि—म उसकी वैयक्तिक रुचि एव इच्छा भी उसके अनुवाद की शैली की निर्धारिका होती है और इसी रूप म अनुवादक भी एक सीमा तक सर्जक (creative writer) होता है। इसीलिए अन्य सभी बातो के समान होने पर भी वैयक्तिक शैलीय सौदय तथा सजन शक्ति के कारण किसी अनुवादक का अनुवाद बहुत बढिया होता है तो किसी का सामान्य और किसी का घटिया।

निष्कर्षत अनुवाद की अनेकानेक शैलियाँ होती है और हो सकती हैं जो मूल कृति विषय अनुवाद का पाठक या श्रोता अनुवाद का उद्देश्य तथा अनुवादक की व्यक्तिगत रुचि आदि पर निभर करती है।

अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद की पूरी प्रक्रिया को तीन चरणो म विभक्त किया जा सकता है समझना भाषातरण समायोजन। इनम पहले समझने की बात लें। अनुवादक को सबसे पहले आधार सामग्री को भली भाति समझ लेना चाहिए। यह समझना दो स्तरो पर अपेक्षित है भाषा विषय। आधार सामग्री को भाषा के स्तर पर समझने का अर्थ है उसके शब्द शब्दबध पदबध उपवाक्य वाक्य स्पष्ट कर लिए जाएँ। इसके लिए एकभाषिक या द्विभाषिक कोशो की सहायता लेनी पड सकती है। विषय के स्तर पर समझने का अर्थ है आधार सामग्री म कही गई बात कहा गया विषय अनुवादक को स्पष्ट हो जाए। इसके लिए विषय-कोश या विषय विशेष की पुस्तकें उपयोगी होती हैं।

इन दोनो स्तरो पर समझने का अर्थ यह हुआ कि अनुवादक ने वह आधार सामग्री सभी दृष्टियो म अच्छी तरह समझ ली है।

सामग्री को समझ लेने के बाद अनुवादक दूसरे चरण 'भाषांतरण' पर आ सकता है। यहाँ वह स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों की समतुल्य अभिव्यक्तियाँ लक्ष्य भाषा से चुनता है। ये समतुल्य अभिव्यक्तियाँ शब्द शब्दबंध पदबंध, उपवाक्य आदि छोटी भाषिक इकाइयों में होती हैं। इस चयन में अनुवादक का ध्यान पाँच छह बातों पर होना चाहिए (1) समतुल्य अभिव्यक्तियाँ, स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों के अधिकाधिक निकट हों (2) वे कथ्य को अधिकाधिक यथातथ्य तथा स्पष्ट रूप में व्यक्त कर सकने में समर्थ हों, (3) स्रोत-सामग्री की शैली का वे अपेक्षित प्रतिनिधित्व कर रही हों, (4) अनुवाद जिसके लिए किया जा रहा हो सभी दृष्टियों से उसके लिए वे उपयुक्त हों, तथा (5) विषय की दृष्टि से भाषा शैली के स्तर पर वे ठीक हों।

उपर्युक्त पाँचों का निर्वाह करते हुए अनुवादक कभी-कभी अपनी शैली का पुट भी देना चाहता है। यदि ऐसा अपेक्षित हो तो चयित भाषिक इकाइयों को अनुवाद की शैली का यथासम्भव प्रतिनिधित्व करने में समर्थ होना चाहिए।

यहाँ आकर स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियाँ के समतुल्य लक्ष्य भाषा में छोटी भाषिक अभिव्यक्तियों को पा लेने का काम पूरा हो गया। मूल अभिव्यक्ति खण्डों में भाषान्तरित हो गई। इसके बाद अनुवाद का अंतिम चरण 'समायोजन' का काम शुरू होता है। यहाँ आकर लक्ष्य भाषा में प्राप्त लघु अभिव्यक्तियों को कथ्य का पूरा ध्यान रखते हुए वाक्यों के रूप में समायोजित करते हैं। द्वितीय चरण की पाँचों बातों का ध्यान रखते हुए यहाँ लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर सबसे अधिक ध्यान देना पड़ता है, ताकि स्रोत भाषा की कोई ऐसी अभिव्यक्ति भाषान्तरित होकर लक्ष्यभाषा की अभिव्यक्ति में न आ जाए जो लक्ष्य भाषा की अपनी न हो। इस समायोजन में स्रोत भाषा के एक वाक्य को लक्ष्य भाषा के एकाधिक वाक्यों में रख सकते हैं या एकाधिक वाक्यों को एक में मिला सकते हैं। समायोजित रूप को सावधानी से देखकर इस बात का भी विचार कर लेना चाहिए कि स्रोत सामग्री के मुहावरे-लोकोक्तियाँ आदि ज्यों-के त्यों न आ गए हों। यदि इस प्रकार का कोई भी तत्त्व खटकने वाला हो तो दूसरे चरण पर फिर लौटकर उसे ठीक कर लेना चाहिए।

कुछ व्यावहारिक बातें

यहाँ अनुवादक की सहायता के लिए कुछ ऐसी व्यावहारिक बातों की ओर संकेत किया जा रहा है जिनमें कुछ अटपटी होती हुई (मूल के कुछ अंश का अनुवाद में लोप, नए अंश का आगम, वचन लिंग परिवर्तन मूलनिष्ठ अनुवाद छोड़कर भावानुवाद या व्याख्या) भी यथासमय करणीय होती हैं कुछ अकरणीय होती हैं तथा कुछ ऐसी होती हैं जिनका ध्यान रखने पर अनुवाद अधिक अच्छा हो

सकता है। या यहाँ कुछ को ही लिया जा रहा है इनकी संख्या काफी बड़ी हो सकती है। अनुवाद में विषय का ज्ञान भी आवश्यक है इसीलिए अंत में विषय के ज्ञान तथा सन्दर्भ ग्रंथों के सम्बन्ध में भी कुछ बातें जोड़ दी गई हैं।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अनुवाद नहीं करते अपितु इनका लिप्यतरण करते हैं। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें ध्यान देने की हैं—

(1) यदि स्रोत भाषा की किसी व्यक्तिवाचक संज्ञा के लिए लक्ष्य भाषा में कोई प्रचलित शब्द हो तो उसी का प्रयोग करना चाहिए। मूल शब्द का अनुसरण करना आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए यदि ग्रीक से कोई अनुवाद किया जा रहा हो और मूल सामग्री में प्लातोन (Platon) आया हो तो हिन्दी में 'प्लातोन' लिखने की आवश्यकता नहीं हिन्दी में प्लेटो शब्द 'प्लातोन' के लिए प्रचलित है अतः उसी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(2) यदि लक्ष्य भाषा में एक से अधिक शब्द प्रचलित हों तो जो अधिक प्रचलित हो उसी को ग्रहण करना चाहिए। जैसे America के लिए हिन्दी में अमरीका अमेरिका दोनों चलते हैं किन्तु अमरीका ज्यादा चलता है अतः उसी का प्रयोग होना चाहिए।

(3) यदि लक्ष्य भाषा में एकाधिक शब्द प्रचलित हों और उनके अर्थ में कोई अन्तर हो तो प्रयोग करते समय सतर्कता के साथ चयन करना चाहिए। उदाहरण के लिए ग्रीक Platon के लिए हिन्दी में प्लेटो तथा अफलातून दोनों शब्द चलते हैं किन्तु दोनों के प्रयोगार्थ पूर्णतः एक नहीं है। अफलातून का प्रयोग प्रायः व्यंग्य आदि में (अफलातून का नाती) होता है जबकि प्लेटो का गम्भीरता के साथ।

(4) यदि उस शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में कोई भी शब्द न हो तो स्रोत-भाषा के उच्चारण को लक्ष्य भाषा में सहजीकृत करते हुए उसी रूप में लिखना और बोलना चाहिए। 'सहजीकृत करने' का अर्थ यह है कि उसकी ध्वनियों को लक्ष्य भाषा की निकटतम ध्वनियों में परिवर्तित करते हुए लेना चाहिए। उदाहरण के लिए अरबी भाषा के शब्द अरब में अ वस्तुतः हिन्दी के अ से भिन्न है (यह अलिफ से न लिखा जाकर ऐन' से लिखा जाता है) किन्तु उस अ को हिंदी में लाने की आवश्यकता नहीं। अरबी के विशिष्ट अ को हिंदी के सामान्य 'अ' में परिवर्तित करके उसे अरबी कहना और लिखना ही पर्याप्त है। इसीलिए हिन्दी में तमिल या तमिळ कहा जाना पर्याप्त है तमिष लिखना और बोलना मेरे विचार में अनावश्यक है। हर लक्ष्य भाषा को अपनी वर्तमान प्रकृति के अनुसार ही ग्रहण करना चाहिए। यदि विश्व की सभी भाषाओं से वह नई

ध्वनियां लेनी शुरू करें तो इसका कोई प्रश्न नहीं है।

(ख) परिवर्तन

इसमें वचन, लिंग, सरल वाक्य का संयुक्त या मिश्रित आदि कई बातें आ सकती हैं। यहां केवल दो ली जा रही हैं—

वचन-परिवर्तन

कभी-कभी एकवचन के अनुवाद में बहुवचन का प्रयोग तथा बहुवचन के अनुवाद में एकवचन का प्रयोग करना पड़ जाता है waters—समुद्र, paints—पेंट, trousers—पायजामा, people say—जनता कहती है। हिन्दी, उर्दू, पंजाबी आदि कुछ भाषाओं में आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में ये भाषाएँ स्रोत भाषा हों या लक्ष्य भाषा, अनुवादक को वचन परिवर्तन का ध्यान रखना चाहिए—

My father is in the garden —मेरे पिताजी बाग में हैं

He will go tomorrow —वे कल जाएंगे।

अर्थात हिन्दी में He, She के लिए आवश्यकतानुसार वह अथवा 'वे', His, Her के लिए उसका' अथवा 'उनका, तथा Him, Her के लिए 'उसे अथवा उन्हें या उसको अथवा 'उनको' का प्रयोग होगा। Every one knows के हिन्दी अनुवाद 'सभी जानते हैं' में कर्ता तथा क्रिया दोनों ही में वचन परिवर्तन के बिना काम नहीं चल सकता।

लिंग-परिवर्तन

कभी-कभी लिंग परिवर्तन भी अनुवाद में करना पड़ता है क्योंकि सभी भाषाओं में सभी शब्दों का लिंग समान नहीं होता। संस्कृत में पुष्प' नपुंसक लिंग है तो हिन्दी में पुल्लिंग है, 'व्यक्ति संस्कृत में स्त्रीलिंग है तो हिन्दी में 'पुल्लिंग है। ऐसे ही 'देवता' हिन्दी में पुल्लिंग है तो संस्कृत में स्त्रीलिंग है तथा हिन्दी में जहाज तथा चांद पुल्लिंग हैं तो अंग्रेजी में ship और moon स्त्री लिंग हैं।

(ग) लोप आगम

प्रयोग और मुहावरे के अनुसार अनुवाद में कभी-कभी 'लोप' या आगम अथवा 'छोड़ना' और 'जोड़ना' भी पड़ता है—He fired five rounds of bullets—उसने पाँच गोलियाँ चलाई। यहाँ rounds अनुवाद में छोड़ दिया गया है। ऐसे ही city of London को हिन्दी में 'लन्दन का शहर', न कहकर 'लंदन शहर'

तथा a few words का एक कुछ शब्द न कहकर 'कुछ शब्द' कहेंगे। इसके विपरीत, 'उसके पास सैकड़ों जानवर हैं' के अंग्रेजी अनुवाद He has several hundred heads of cattle में heads जोड़ना पड़ता है। इसी प्रकार with due respect या with due apology जैसे पदबंधों के हिन्दी अनुवाद में due छोड़ना पड़ता। He gave me a piece of advice के हिन्दी अनुवाद में एक ही टुकड़ा (piece) नहीं रखा जा सकता।

(घ) भावानुवाद

लक्ष्य भाषा के अनुकूल अनुवादक को कभी-कभी अनुवाद के स्थान पर 'भावानुवाद' का भी सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए, Votes freely cast के लिए 'स्वतन्त्रता से दिए गए मत' की तुलना में 'बिना किसी दबाव के दिए गए मत' अधिक उपयुक्त होगा। एक वाक्य लें, At worst he might not return your money हिन्दी में कहेंगे—ज्यादा-से-ज्यादा यह होगा कि वह तुम्हारे रुपए नहीं देगा। अर्थात् at worst के लिए 'ज्यादा से ज्यादा यह होगा' का प्रयोग करना पड़ेगा जो 'व्याख्या' भी है 'भावानुवाद' भी। ऐसे ही at best के लिए सदर्भानुसार कई प्रकार की व्याख्याएँ देनी पड़ सकती हैं या भावानुवाद करने पड़ सकते हैं।

(ङ) व्याख्या

भाषाएँ दो प्रकार की होती हैं संयोगात्मक और वियोगात्मक। उदाहरण के लिए संस्कृत संयोगात्मक भाषा है तो हिन्दी वियोगात्मक। अनुवादक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अनुवाद में स्रोत भाषा की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में भी संश्लिष्ट अभिव्यक्ति देना आवश्यक नहीं है यदि वह भी संश्लिष्ट न हो। उदाहरण के लिए संस्कृत होता के लिए हिन्दी में यज्ञ में आहुति डालने वाला कहेंगे जो संश्लिष्ट अभिव्यक्ति न होकर एक प्रकार की व्याख्या है। यों यह आवश्यक नहीं कि यह अन्तर स्रोत भाषा के संयोगात्मक तथा लक्ष्य भाषा के वियोगात्मक होने पर ही रखा जाए। यह भी हो सकता है कि स्रोत भाषा में जो बात एक या दो शब्दों में कही गई हो लक्ष्य भाषा के मुहावरे में उसकी व्याख्या अपेक्षित हो। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी तथा हिन्दी दोनों ही वियोगात्मक भाषाएँ हैं किन्तु अंग्रेजी की अनेक अभिव्यक्तियों की हिन्दी अनुवाद में व्याख्या अपेक्षित होती है internationally के लिए हिन्दी में 'अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर' 'अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से' अथवा 'अन्तर्राष्ट्रीय रूप से' कहना पड़ेगा या this is a greater problem के लिए हिन्दी में 'यह महत्तर समस्या है' कहना उपयुक्त नहीं होगा कहना पड़ेगा 'यह और भी बड़ी समस्या है'। अर्थात्

अपेक्षित होने पर अनुवादक व्याख्या भी कर सकता है, इसमें उसके यत्न से अनुवाद को बोझिल नहीं बनाना चाहिए।

भाषा का प्रवाह

अच्छी भाषा में प्रवाह बहुत आवश्यक है। यह बात अनुवाद की भाषा के लिए बावन तोले पाव रत्ती ठीक है। यह प्रवाह कई बातों पर निर्भर करता है, जिनमें मुख्य बातें निम्नांकित हैं

(क) शब्दों की समस्तरता—अनुवाद में एक स्तर के शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि कोई हिन्दी में अनुवाद कर रहा है तो उसे यह निश्चित करके आगे चलना चाहिए कि वह हिन्दी की किस शैली के शब्दों का प्रयोग करेगा। हिंदी की तीन शैलियाँ हैं हिन्दुस्तानी उर्दू हिन्दी। इन तीनों शैलियों में मुख्य अन्तर शब्दों का ही है। हिन्दुस्तानी में सरल और बहुप्रचलित तत्सम तद्भव विदेशी शब्दों का प्रयोग होता है तो उर्दू में अरबी फारसी-तुर्की के (विदेशी) शब्दों का प्रयोग अधिक होता है और हिंदी या संस्कृतनिष्ठ हिन्दी में तत्सम शब्दों का। अंग्रेजी का एक सामान्य वाक्य लें—Please take your seat हिन्दुस्तानी में इसका अनुवाद होगा—मेहरबानी करके बैठिए। उर्दू में इसका भी प्रयोग हो सकता है लेकिन अच्छा अनुवाद होगा मेहरबानी करके तशरीफ रखिए' या 'बराए करम तशरीफ रखिए' तो हिन्दी में 'कृपया बैठिए अथवा विराजिए'। अब यदि कोई अनुवादक 'कृपया तशरीफ रखिए या 'बराए करम विराजिए' कह तो शब्दों में एकस्तरता के अभाव के कारण भाषा में अपेक्षित प्रवाह नहीं आ पाएगा। इस प्रकार यह बहुत आवश्यक है कि अनुवादक समस्तरीय शब्दों का प्रयोग करे। 'यह जगह निहायत खूबसूरत है या 'यह स्थान बहुत सुन्दर है' में जो प्रवाह है यह जगह निहायत रमणीय है' में नहीं है।

(ख) शब्दों की समरूपता—शब्दों की समरूपता से भी भाषा में प्रवाह आता है जिसका ध्यान रखना स्वतन्त्र लेखक और अनुवादक दोनों ही के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए चतुरता और पांडित्य। चतुराई और पंडितता, 'चतुरता और पंडितता आदि की तुलना में चातुर्य और पांडित्य में अधिक प्रवाह क्या है? कारण स्पष्ट है। पहले में एक में 'आई प्रत्यय है तो दूसरे में 'त्य' अंत दोनों शब्दों में समरूपता के अभाव के कारण भाषा में वह प्रवाह और लय नहीं है जो 'चातुर्य और पांडित्य' में है। 'चतुरता और पंडितता' के अटपटेपन के मूल में एक दूसरी बात है। 'पांडित्य' शब्द तो चलता है पंडितता नहीं। अनुवाद में इस बात को देखने के लिए फ्रांस की राज्य क्रांति का प्रसिद्ध नारा 'Liberty equality & fraternity लें। हिंदी का अनुवादक इसके लिए 'स्वातंत्र्य, समता और भाईचारा भी कह सकता है 'स्वतन्त्रता समत्व और भाईचारा' भी

तथा 'स्वतन्त्रता समता और बन्धुत्व' भी किन्तु शब्दों की समरूपता के कारण जो लय 'स्वतन्त्रता समता और बन्धुता' में है वह अन्य में नहीं है।

(ग) वाक्यांशों की एकरूपता—वाक्य के अंशों की एकरूपता से वाक्य लय युक्त हो जाता है जो भाषा को प्रवाहमय बनाने की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। दो वाक्य लें (क) वह धनी है तो तुम भी गरीब नहीं हो और वह शिक्षित है तो तुम भी अशिक्षित नहीं हो, (ख) वह धनी है तुम भी गरीब नहीं हो और तुम भी अशिक्षित नहीं हो, यदि वह अशिक्षित है। स्पष्ट ही एकरूपता के कारण ही पहले में जो प्रवाह है वह दूसरे में नहीं है।

पुनरुक्ति

अनुवादक को पुनरुक्ति से भी बचना चाहिए। पुनरुक्तियाँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, he will starve and die जैसे वाक्य का क्या करें? starve के लिए हिन्दी समानक है 'भूखों मरना', तो क्या इस वाक्य का अनुवाद करें 'वह भूखों मरेगा और मरेगा'? निश्चय ही नहीं। ऐसी पुनरुक्ति से बचना चाहिए। इसे कहा जा सकता है वह खाने बिना मर जाएगा अथवा 'वह भूखा मर जाएगा'। या 'खाने बिना तड़प-तड़प कर मर जाएगा' भी कहा जा सकता है किन्तु इस वाक्य में 'तड़प-तड़प कर' जोड़ देने से स्रोत वाक्य की तुलना में कुछ अधिक कहने की गलती हो गई है। एक ही एक वाक्य है Gandhiji gave new content to the meaning of traditional words like Satya and Ahimsa स्पष्ट ही content तथा meaning दोनों ही के लिए हिन्दी शब्द अर्थ है। तो क्या कहें 'सत्य और अहिंसा के अर्थ को नया अर्थ दिया'। नहीं पुनरुक्ति बचाने के लिए तथा वाक्य को भाड़ा बनने से रोकने के लिए कहा जा सकता है गांधी जी ने सत्य और अहिंसा जैसे परम्परागत शब्दों में नया अर्थ भर दिया। वस्तुतः पुनरुक्ति से बचने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं दिया जा सकता। इसका निर्णय अनुवादक को सन्दर्भ के अनुसार स्वयं करना चाहिए।

विशेषण विशेष्य

अनुवाद में इसकी समस्या कई प्रकार की होती है। ध्यान देने की पहली बात यह है कि यदि लक्ष्य भाषा में शैली भेद हो तो समस्तरीय शब्दों का प्रयोग विशेषण विशेष्य के रूप में बहुत आवश्यक है। उदाहरण के लिए famous city के लिए प्रसिद्ध शहर और मशहूर नगर में समस्तरीयता नहीं है। इसका ठीक अनुवाद प्रसिद्ध नगर या मशहूर शहर होगा। इस सम्बन्ध में पीछे भी संकेत किया जा चुका है।

दूसरी बात यह है कि कुछ भाषाओं में एक विशेषण कई संज्ञाओं के साथ आ सकता है, किन्तु कुछ भाषाओं में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए, हिंदी में 'सुंदर लड़का' 'सुंदर लड़की' कहते हैं अर्थात इन दोनों संज्ञाओं के लिए 'सुंदर' विशेषण आ सकता है, किन्तु इनके अंग्रेजी अनुवाद में beautiful girl तो कह सकते हैं, किन्तु beautiful boy नहीं कह सकते। boy संज्ञा के साथ अंग्रेजी में handsome आएगा। अर्थात अनुवादक को इस अंतर के प्रति सतर्क रहना चाहिए, नहीं तो गलती हो जाती है। Honrary विशेषण अंग्रेजी में Secretary के साथ भी आता है, और degree के साथ भी किन्तु हिन्दी में दोनों संज्ञाओं के साथ एक विशेषण नहीं आ सकता—'अवैतनिक सचिव' किन्तु 'मानद उपाधि'। ऐसे ही black money के लिए 'काला धन' ठीक है किन्तु black market के लिए काला बाजार की तुलना में 'चोर बाजार' अधिक अच्छा है। अंग्रेजी हिंदी के कोशों में poor के लिए 'दीन' और 'गरीब' शब्द दिए हैं, किन्तु the poor fellow died of में poor के लिए दीन या 'गरीब' न आकर 'बेचारा' आएगा। अर्थात हर भाषा के हर विशेषण के प्रयोग की अपनी सीमा होती है। अनुवादक को इसका ध्यान रखना चाहिए। अंग्रेजी में famous विशेषण वस्तु, देश, कृति, व्यक्ति आदि सभी के लिए आता है किन्तु हिंदी में एक ओर 'विख्यात', 'प्रसिद्ध,' 'मशहूर,' सभी के लिए आ सकता है किन्तु 'यशस्वी' केवल व्यक्ति के लिए आएगा, सभी के लिए नहीं।

विषय का ज्ञान

अनुवाद के लिए विषय का ज्ञान बहुत आवश्यक है। ऐसा न होने से प्रायः भयंकर भूलें हो जाती हैं। इसका कारण यह है कि बिना विषय के ज्ञान के मूल सामग्री को भली भाँति समझना कठिन होता है और ऐसे में अनुवादक शब्दानुवाद का सहारा लेने को बाध्य हो जाता है। वस्तुतः जो विषय जितना ही असामान्य या तकनीकी होता है उसके अनुवाद में इस प्रकार की भूलों के होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। इसीलिए विज्ञान के अनुवादों में भयंकर भूलें प्रायः होती हैं। 'पिग आइरन' (Pig iron) के 'सूअर लोह' और गिनी पिग (guinea pig) के 'गिनी सूअर' जैसे अनुवाद विषय के अज्ञान के ही परिणाम हैं। तत्वतः पिग आइरन 'कच्चे लोह' को कहते हैं तथा 'गिनी पिग' सूअर न होकर एक प्रकार का सफेद चूहा होता है जिसे हिंदी में भी गिनीपिग ही कहा जाता है। ऐसे ही 'जेली फिश' (jelly fish), सिलवर फिश (silver fish) तथा कटल फिश (cuttel fish) मछली नहीं होतीं किन्तु प्राणिविज्ञान से अपरिचित अनुवादक हिन्दी अनुवाद में इन्हें 'जेली मछली', 'रजत मत्स्य' तथा 'कटल मछली' कहने की भूल कर सकता है। इसीलिए यदि कोई अनुवादक जिस विषय

का अनुवाद कर रहा हो, उसस अपरिचित हो तो विषय के जानकार स भलीभाँति पूरा अनुवाद दिखवा लेना चाहिए या जहाँ-जहाँ सन्देह हो या गलती की सभावना हो उसे उससे भली भाँति समझ लेना चाहिए। वस्तुत इसीलिए ऐसी स्थिति म जहाँ अनुवादक या तो ठीक स केवल विषय का जानकार हो या फिर केवल सम्बद्ध भाषाओं का जानकार हो वहाँ सहयोगित अनुवाद आवश्यक हो जाता है। विषय के जानकार को भाषाओं का जानकार सहयोग दे सकता है तो भाषाओं क जानकार को विषय का जानकार। इस प्रकार के सहयोग से न तो विषय स सम्बन्ध भूल होने की सभावना रहती है और न स्रोत या लक्ष्य भाषा स सम्बद्ध भूल की।

विषय ज्ञान के लिए विभिन्न विषयो के मानक ग्रथ, विश्वकोशो तथा परिभाषा कोशो की सहायता ली जा सकती है। इनम कुछ का उल्लेख आगे किया जा रहा है।

सदभ ग्रथ

अनुवादक के लिए तीन चीजो का ज्ञान आवश्यक है स्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा का और विषय का। इसीलिए इन तीनो के सन्दभ ग्रन्थ भी उसके लिए अनिवायत आवश्यक हैं।

जहा तक स्रोत भाषा के सन्दभ ग्रन्थो का प्रश्न है अनुवादक के पास दो प्रकार के कोश होने चाहिए स्रोत भाषा के अच्छे कोश जिनम स्रोत भाषा के शब्दो को (स्रोत भाषा मे) समझाया गया हो तथा स्रोत भाषा स लक्ष्य भाषा के अच्छे कोश उदाहरण के लिए अग्रेजी हिन्दी अनुवाद की बात लें तो स्रोत भाषा अग्रजी है। यो तो अग्रेजी मे कोशो की सख्या बहुत अधिक है किन्तु अग्रेजी हिन्दी अनुवाद के काम के अग्रजी के लिए मुख्यत निम्नाकित कोश हैं

Webster's Third New International Dictionary

यह अग्रेजी (मुख्यत अमरीकी) का अच्छा कोश है जिसम सभी प्रकार के शब्दो को अग्रेजी म अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है। इसकी एक बहुत बडी विशेषता यह है कि यह अग्रेजी का एकमात्र बडा कोश है जिसमे अग्रजी भाषा के सामान्य शब्दो को लेने के साथ काफी सारे पारिभाषिक शब्दो को भी ल लिया गया है। इस प्रकार यह अकेला कोश भी अनुवादक के लिए पर्याप्त है। इसके छोटे-बडे कई सस्करण हैं जो अपन अपने स्तर पर अच्छे है।

The Universal Dictionary of the English Language

पारिभाषिक शब्दो की बात छोड दें तो अग्रेजी भाषाओ का यह एक प्रकार से सर्वोत्तम कोश है, जिसमे अग्रजी शब्दो के विभिन्न अथ बहुत अच्छी

तरह समझाए गए हैं। अनुवाद के लिए यह कोश भी बडे काम का है।

Chamber's Twentieth Century Dictionary

छोटे कोशो मे यह कोश काफी अच्छा है। ऊपर संकेतित दोनो कोश काफी मँहगे हैं अत सभी अनुवादक उन्हे खरीद नही सकते। इसे सभी खरीद सकते हैं। इसका नया संस्करण अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी है।

The Concise Oxford Dictionary

छोटे कोशो मे यह भी अच्छा है किन्तु 'चैम्बर्स' जितना नही। इसके छोटे-बडे कई संस्करण हैं। मूलत यह कोश ऐतिहासिक सिद्धान्तो पर बना था, अत वर्णनात्मक दृष्टि से इसका बहुत मूल्य नहीं है। हाँ, यदि अंग्रेजी के प्राचीन साहित्य से अनुवाद किया जा रहा हो और यह देखना हो कि किसी शब्द का किसी विशेष सदी मे क्या अर्थ था तो इसका बडा संस्करण (The Oxford Dictionary) जो कई भागो मे है, अनुवादकों के बडे काम का है, और अंग्रेजी का इस प्रकार का अकेला कोश है।

Webster's Dictionary of Synonyms

अंग्रेजी भाषा पर्यायो की दृष्टि से बडी सम्पन्न है। अनुवादक के सामने कभी-कभी यह समस्या आती है कि स्रोत पाठ मे प्रयुक्त पर्याय शब्दों मे सूक्ष्म अंतर क्या है? ऐसे अन्तरो को समझे बिना मूल पाठ को वास्तविक रूप मे न तो समझा जा सकता और न अनुवाद किया जा सकता है। प्रस्तुत कोश मे पर्यायो का अंतर बहुत अच्छी तरह समझाया गया है। इस तरह अनुवाद के लिए यह कोश भी बडे काम का है।

जिस भाषा से भी अनुवाद करना हो, उसके इस प्रकार के कोशो से अनुवादक को सहायता लेनी चाहिए। रूसी जर्मन, फ्रेंच आदि मे भी इस प्रकार के कोश हैं। हाँ अन्य भाषाओ मे इस श्रेणी के कोश प्राय नही हैं अत उनमे अनुवाद करने मे कठिनाई होती है।

स्रोत भाषा के दूसरे प्रकार के कोश स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के होते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी हिन्दी। यह बात ध्यान देने की है कि ऐसे द्विभाषी कोश (स्रोत भाषा मे लक्ष्य भाषा) अनुवादक के बहुत काम के नहीं होते जिनमे शब्दो की व्याख्या मात्र दे दी गई हो क्योंकि अनुवादक को शब्द चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी अंग्रेजी हिन्दी कोश मे यदि BEAUTIFUL का अर्थ जो देखने मे अच्छा हो दिया गया हो तो अनुवादक इससे शब्द का अर्थ तो समझ जाएगा, किन्तु यह नहीं जान पाएगा कि वह अपने अनुवाद मे किस शब्द का प्रयोग करे। इसी

लिए अनुवादक का ऐसा द्विभाषी कोश देखना चाहिए जिसमें प्रतिशब्द (जैसे इस प्रसंग में सुन्दर, खूबसूरत) दिए गए हों। अंग्रेजी हिन्दी में बहुत अच्छे कोश उपलब्ध नहीं हैं। जो हैं, उनमें निम्नांकित का नाम उल्लेख्य है

अंग्रेजी हिन्दी कोश—डॉ० बुल्के। उपलब्ध कोशों में यह सबसे अच्छा है। इसकी कमी यह है कि इसमें बहुत थोड़े शब्द और मुहावरे हैं। कम मुहावरे लिए गए हैं। इसीलिए अनुवादक इसमें उन सभी शब्दों मुहावरों को नहीं पाता, जिनकी उसे आवश्यकता होती है। हाँ, अपने आकार की दृष्टि से यह कोश अच्छा है। इसकी एक कमजोरी यह भी है कि इसमें हिन्दी के साहित्यिक शब्द ही अधिक हैं। हिन्दी बोलियों से ऐसे शब्द प्रायः नहीं लिए जा सके हैं जिनके लिए मानक हिन्दी में शब्द नहीं हैं।

बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश—डॉ० बाहरी। यह कोश काफी बड़ा है और इसमें पारिभाषिक तथा सामान्य सभी प्रकार के काफी सारे शब्द मिल जाते हैं। इस दृष्टि से अनुवादक के लिए यह काम का है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें अंग्रेजी शब्दों के अधिक से अधिक हिन्दी पर्यायों को बटोरने का यत्न किया गया है जिनमें बहुत से तो ठीक समानार्थी ही नहीं हैं और जो हैं वे भी इतने अधिक और अव्यवस्थित रूप में दिए गए हैं कि अनुवादक उस भीड़ में से अपने लिए उपयुक्त शब्द खोजने में काफी कठिनाई का अनुभव करता है। वस्तुतः डॉ० बुल्के के कोश जैसी यथातथ्यता तथा व्यवस्था इस कोश में नहीं है। कहने का आशय यह है कि अनुवादक को इस कोश का उपयोग करते समय बहुत सतर्कता से काम लेना चाहिए।

मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश—सम्मेलन द्वारा प्रकाशित यह कोश भी लगभग डॉ० बाहरी के कोश जैसा ही है।

अंग्रेजी उर्दू डिक्शनरी—अब्दुल हक। यह कोश भी बहुत अच्छा है। कोशकार ने उर्दू के कठिन शब्दों के साथ साथ मानक हिन्दी तथा उसकी ब्रज अवधी बोली आदि बोलियों में प्रयुक्त शब्द भी काफी दिए हैं। जो अनुवादक अरबी लिपि से परिचित हैं, वे इसे हिन्दी अनुवाद के लिए भी बहुत उपयोगी पा सकते हैं। उर्दू के लिए तो यह एक मात्र प्रामाणिक कोश है ही।

कभी-कभी अर्थ और प्रयोग के निश्चयन के लिए लक्ष्य भाषा के कोश की भी आवश्यकता पड़ती है। हिन्दी के निम्नांकित कोश अनुवादक के लिए उपयोगी हो सकते हैं

हिन्दी शब्दसागर—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

मानक हिन्दी कोश—साहित्य सम्मेलन प्रयाग

बृहद् हिन्दी कोश—ज्ञानमंडल वाराणसी

अनुवाद में कभी कभी स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के कोश भी उपयोगी सिद्ध

होते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी हिंदी अनुवाद के लिए इस दृष्टि से व्यावहारिक हिंदी अंग्रेजी कोश (चतुर्वेदी तिवारी) देखा जा सकता है।

प्राकृतिक विज्ञान, समाज विज्ञान, साहित्यशास्त्र तथा विधि आदि से सम्बद्ध अनुवादों में एक मुख्य समस्या पारिभाषिक शब्दों की होती है। अंग्रेजी हिंदी पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी में किन शब्दों का प्रयोग करें ? इस दिशा में कुछ काम हुआ है जिनसे सहायता ली जा सकती है। कुछ मुख्य पारिभाषिक कोश निम्नांकित हैं—

वृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह (मानविकी)

वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह (विज्ञान)

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित ये दोनों कोश दो दो खंडों में हैं, जिनमें अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रतिशब्द दिए गए हैं। विधि और आयुर्विज्ञान को छोड़कर अन्य प्राय काफी विषयों के काफी सारे पारिभाषिक शब्द इसमें आ गए हैं। ये कोश तकनीकी विषयों के अनुवादों के लिए बहुत उपयोगी हैं। विधि के लिए विधि मंत्रालय की विधि शब्दावली तथा आयुर्विज्ञान के लिए—वृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह (आयुर्विज्ञान, भैषजविज्ञान, शारीरिक नृविज्ञान) उपयोगी हैं। डॉ० रघुवीर की Comprehensive Hindi English Dictionary भी पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से कभी-कभी उपयोगी हो सकती है।

अनुवादक के लिए विषय की जानकारी भी अपेक्षित होती है, और इस दृष्टि से पारिभाषिक शब्दों को समझना आवश्यक है। इसके लिए विभिन्न विषयों के पारिभाषिक कोशों से सहायता ली जा सकती है। कुछ मुख्य पारिभाषिक कोश ये हैं—

A Dictionary of Statistical Terms—Kendall and Buckland,

The International Dictionary of Applied Mathematics—Freiberger,

Mathematics Dictionary—James and James,

A Dictionary of Literary Terms—Shipley

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय से हिंदी में भी प्राणिविज्ञान भूविज्ञान, भूगोल, रसायन, गणित तथा आधुनिक भौतिकी के परिभाषा कोश प्रकाशित हो चुके हैं तथा भाषाविज्ञान एवं कई अन्य विषयों के तैयार हो रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इनसे सहायता ली जा सकती है।

अब तक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के शब्दों और अभिव्यक्तियों की समुचित और तुलनात्मक जानकारी के लिए एकभाषिक और द्विभाषिक कोशों, विषय कोशों की चर्चा की गई है। अनुवाद के लिए ध्वनिवाचक संज्ञाओं के ठीक उच्चारण का ज्ञान भी आवश्यक होता है। ऐसा प्रायः होता है कि स्रोत सामग्री

म प्राप्त व्यक्तियो और स्थानो के नाम की वतनी कुछ और होती है और उनका वास्तविक उच्चारण कुछ और होता है। इन उच्चारणा की प्रामाणिक जानकारी के लिए दो कोश बहुत उपयोगी है

1 Webster s Biographical Dictionary
2 Webster s Geographical Dictionary

2 'जल्द' की तुलना म 'कुछ ही दिना म' ग्रच्छा रहेगा।

3 particularly merchant जसे ग्रधूरे वाक्यांश हिंदी म नही चलते, ग्रत ग्रनुवाद म इसे पूरा कर दिया गया है।

4 people in distress का सीधा भाषातर होगा 'मुसीबत म लोगो', किन्तु हिन्दी मे ऐसा प्रयोग नही है। ग्रत कहना पडेगा 'मुसीबत म फँस लोगो।'

5 hated के लिए हिन्दी मे 'घृणा किया' या 'करता था होगा, किन्तु इस सन्दभ मे चिढता था' ग्रधिक उपयुक्त है।

6 'भीतर स' की तुलना मे यहाँ 'मन-ही मन' ग्रधिक ग्रच्छा रहेगा।

7 meditate का इस प्रसग म उपयुक्त हिन्दी समानक 'ठान लेना' है, सोचना' चिन्तन करना' या विचार करना ग्रादि नही।

ग्रनुवाद

शायलाक एक यहूदी था। वह वनिस म रहता था। वह ब्याज पर पसे उधार दिया करता था ग्रौर उसकी वसूली बहुत सख्ती स किया करता था। कुछ ही दिना म वह बहुत ग्रमीर हो गया। लोग उससे घृणा करत थे ग्रौर एटोनिग्रो नाम का एक युवा व्यापारी तो उसस विशेष रूप से घृणा करता था। एटोनिग्रो बहुत दयालु था। मुसीबत मे फँस लोगो का बिना कोई ब्याज लिए वह पसे उधार दिया करता था। इसलिए शायलॉक एटोनिग्रो स चिढता था। जब भी व दोनो मिलत थ, लेन-देन मे कठोरता के लिए एटोनिग्रो उस खरी-खोटी सुनाता था। शायलॉक, उत्तरस्वरूप कुछ नही कह पाता था ग्रौर उसकी खरी-खोटी बातो को चुपचाप सह लेता था, किन्तु मन-ही मन उसने उससे बदला लेन की ठान रखी थी।

Exercise 3

[1]Ashoka said[2] that the king s first duty was to protect the people[1] and to do justice, and he commanded all his officers to treat people[3] justly and kindly and so put right many wrongs that were done Kindness was to be shown to animals too He built[4] many hospitals throughout India both for men and for animals and made rules[5] for the care of the aged and the poor So that his laws should be known everywhere, Ashoka had them carved upon rocks and pillars in simple language which everyone could understand These are known as Ashoka s Edicts The rock edicts have been found in every

4 के लिए शब्दानुवाद न होते हुए भी 'इसी बीच' पदबन्ध अच्छा है।

5 हिन्दी प्रयोग की दृष्टि से उचित हुए यहाँ संयुक्त वाक्य को दो वाक्यों में बदल दिया गया है।

अनुवाद

अलीबाबा एक गरीब आदमी था। एक दिन जब वह जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था उसने पत्थरों के बीच एक गुफा देखी। उस गुफा में एक मज़बूत दरवाज़ा लगा था जो बन्द था। वह दरवाज़ा खोलने की कोशिश करने लगा। इसी बीच डाकुओं का एक गिरोह वहाँ आ पहुँचा। अली बाबा ने झाड़ियों में पीछे अपने को छिपा लिया और उन्हें देखने लगा। जब डाकुओं का सरदार दरवाज़े के पास आया वह बोला 'खुल जा सिमसिम' और दरवाज़ा खुल गया। डाकू अन्दर चले गए। शीघ्र ही वे फिर बाहर आए और उनका सरदार बोला 'बन्द हो जा सिमसिम'। दरवाज़ा बन्द हो गया। जब डाकू चले गए अलीबाबा अपने छिपने की जगह से बाहर आया, दरवाज़े के पास गया और उन्हीं जादुई शब्दों का उच्चारण किया, जिनका प्रयोग डाकुओं के सरदार ने किया था। दरवाज़ा खुल गया। अलीबाबा भीतर गया। उसने देखा गुफा सोने चाँदी और रत्नों से भरी थी। अलीबाबा ने अपना बोरा भरा उसे गदहे (गध) पर लादा और घर की ओर चल दिया। अब वह अमीर हो चुका था।

Exercise 2

Shylock was a Jew He lived in Venice He lent[1] money on interest and realised it with great severity Soon[2] he became very rich People disliked him particularly Antonio a young merchant[3] Antonio was a very kind hearted man He lent money to people in distress[4] and would never take any interest for the money lent therefore Shylock hated[5] him Whenever the two met Antonio reproached him for his hard dealings The Jew did not say anything in reply and seemed to bear these reproaches with great patience but inwardly[6] he meditated[7] on revenge

संकेत

1 lent का शब्दानुवाद होगा दिया किन्तु यहाँ भाव है दिया करता था।

2 'जल्द' की तुलना में 'कुछ ही दिनों में' अच्छा रहेगा।

3 particularly merchant जैसे अधूरे वाक्यांश हिंदी में नहीं चलते, अतः अनुवाद में इसे पूरा कर दिया गया है।

4 people in distress का सीधा भाषांतर होगा 'मुसीबत में लोगों', किन्तु हिंदी में ऐसा प्रयोग नहीं है। अतः कहना पड़ेगा 'मुसीबत में फँसे लोगों।'

5 hated के लिए हिंदी में 'घृणा किया' या 'करता था' होगा, किन्तु इस सन्दर्भ में 'चिढ़ता था' अधिक उपयुक्त है।

6 'भीतर से' की तुलना में यहाँ 'मन-ही मन' अधिक अच्छा रहेगा।

7 meditate का इस प्रसंग में उपयुक्त हिंदी समानक 'ठान लेना' है, सोचना' 'चिंतन करना' या 'विचार करना' आदि नहीं।

अनुवाद

शायलॉक एक यहूदी था। वह वेनिस में रहता था। वह ब्याज पर पैसे उधार दिया करता था और उसकी वसूली बहुत सख्ती से किया करता था। कुछ ही दिनों में वह बहुत अमीर हो गया। लोग उससे घृणा करते थे और एंटोनिओ नाम का एक युवा व्यापारी तो उससे विशेष रूप से घृणा करता था। एंटोनिओ बहुत दयालु था। मुसीबत में फँसे लोगों को बिना कोई ब्याज लिए वह पैसे उधार दिया करता था। इसलिए शायलॉक एंटोनिओ से चिढ़ता था। जब भी वे दोनों मिलते थे, लेन-देन में कठोरता के लिए एंटोनिओ उसे खरी-खोटी सुनाता था। शायलॉक, उत्तरस्वरूप कुछ नहीं कह पाता था और उसकी खरी-खोटी बातों को चुपचाप सह लेता था, किन्तु मन-ही मन उसने उससे बदला लेने की ठान रखी थी।

Exercise 3

[1]Ashoka said[2] that the king's first duty was to protect the people[1] and to do justice and he commanded all his officers to treat people[3] justly and kindly and so put right many wrongs that were done. Kindness was to be shown to animals too. He built[4] many hospitals throughout India both for men and for animals and made rules[5] for the care of the aged and the poor. So that his laws should be known everywhere, Ashoka had them carved upon rocks and pillars in simple language which everyone could understand. These are known as Ashoka's Edicts. The rock edicts have been found in every

part of India and there are ten of the many pillars[6] still standing today

संकेत

1 इस लम्बे वाक्य को हिन्दी के अनुकूल रखने के लिए दो वाक्यों में विभक्त कर दिया गया है।

2 said का हिन्दी में 'कहा' भी कहा जा सकता है, किन्तु यहाँ 'कहना था' अधिक उपयुक्त होगा।

3 people के लिए हिन्दी प्रतिशब्द लोग तथा जनता भी हो सकते हैं किन्तु राजा के सन्दर्भ में इन दोनों की तुलना में प्रजा का प्रयोग अधिक संगत है।

4 शब्दानुवाद 'अस्पताल बनाए' होगा, किन्तु थोड़ा हटकर 'अस्पताल बनवाए' कहना अधिक अच्छा होगा। हिन्दी में अधिक प्रचलित प्रयोग 'अस्पताल खोलना' है, अतः यहाँ 'अस्पताल खोले' कहना और भी अधिक उपयुक्त होगा।

5 rules के लिए हिन्दी समानार्थ 'नियम' है किन्तु राजा के प्रसंग में 'नियम' से अच्छा 'नियम कानून' होगा।

6 स्पष्टता के लिए 'स्तम्भ' को 'राजादेश-स्तम्भ' कर दिया गया है।

अनुवाद

अशोक का कहना था कि राजा का पहला कर्तव्य है प्रजा की रक्षा और उसके प्रति न्याय करना। उसने अपने सभी अधिकारियों को आदेश दिया कि प्रजा के प्रति उचित और सदय व्यवहार किया जाए और इस प्रकार उसने उन बहुत सारी भूलों को जो पहले हो गई थीं सुधार दिया। यह दया पशु-पक्षियों के प्रति भी बरती थी। अशोक ने भारत भर में आदमियों और जानवरों के लिए अनेक अस्पताल खोले और बूढ़ों और गरीबों की देखभाल के लिए नियम कानून बनाए। अपने आदेशों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए उसने उन्हें चट्टानों और स्तम्भों पर ऐसी सरल भाषा में खुदवाया जिसे सभी लोग समझ सकें। इन्हें अशोक के राजादेश कहा जाता है। चट्टानों पर खुदे राजादेश देश के हर भाग में पाए जाते हैं और अनेक राजादेश स्तम्भों में से दस आज भी सुरक्षित हैं।

Exercise 4

Many people foolishly look upon manual labour[1] as degarad ing[2] The Maharaja of Travancore not many years ago, said

"Be assured that the wielding of a spade, or the driving of a plough or the drawing of water in one's own interest, is not less honourable than scratching foolscap (paper) with goose-quills (pens)."[3] Some of the greatest men that have ever lived have cultivated their fields with their own hands. Peter the great, Czar of Russia, worked as a blacksmith. The late Emperor of Germany, the son in law of Queen Victoria, learned the art[4] of printing. The life of Mahatma Gandhi was a living lesson[5] on the dignity of labour. Useful work of all kinds is honourable.[6] It is of false pride that men have reason to be ashamed.

संकेत

1 manual labour का हिन्दी समानक 'हाथ से काम करना' भी हो सकता है। यहाँ इकाई के रूप में 'शारीरिक श्रम' का प्रयोग किया जा रहा है।

2 look upon as degrading को हिन्दी में कई प्रकार से कहा जा सकता है — निम्न कोटि का समझना, छोटा समझना, हेय समझना।

3 scratching foolscap with goose-quills का शब्दानुवाद है 'फुलिस्केप पर पंख के कलम से लिख मारना', किन्तु इस संदर्भ में 'कागज रँगना' मुहावरा बहुत उपयुक्त रहेगा।

4 Art के लिए हिन्दी समानक 'कला' है किन्तु इस प्रसंग में 'काम' अधिक सही है।

5 living lesson के लिए ठीक प्रतिशब्द न होना हुआ भी 'जीता जागता उदाहरण' उपयुक्त होगा।

6 इस वाक्य का व्याख्या रूप में अनूदित किया गया है।

अनुवाद

बहुत-से लोग मूर्खतावश शारीरिक श्रम को हेय समझते हैं। त्रावणकोर के महाराजा ने कुछ वर्ष पहले कहा था — 'विश्वास रखो कि फावड़ा चलाना, हल चलाना या अपने लिए पानी खींचना कागज रँगने से कम सम्मानीय नहीं है।' जितने भी महान लोग हुए हैं उनमें से कुछ ने अपने हाथों से खेती की है। रूस का जार, पीटर महान लोहार का काम करता था। जर्मनी के स्वर्गीय सम्राट ने जो रानी विक्टोरिया के दामाद थे, छपाई का काम सीखा था। महात्मा गांधी का जीवन श्रम की गरिमा का एक जीता जागता उदाहरण था।

कोई भी उपयोगी काय, चाहे वह किसी भी प्रकार का क्या न हो, सम्मान्य है। इसम लोग श्रम का अनुमत्र केवल झूठी शान के कारण ही करते हैं।

Exercise 5

Indeed the path she had chosen was full of difficulties It was almost an unimaginable thing in those days for a woman of means[1] to live a life of independence but the particular profession for which Florence had trained herself was a disreputable[2] one The nurses in those days were noted[3] for their immoral conduct They could hardly[4] be trusted to carry out the simplest medical duties No wonder, therefore that Florence's parents did not like that their daughter should take up that profession Florence, however did not see eye to eye with them

सकेत

1 woman of means—समृद्ध महिला।
2 disreputable का अनुवाद कुख्यात भी हो सकता है किन्तु कुख्यात शब्द का प्रयोग व्यक्ति के लिए किया जाता है अत यहाँ बदनाम उपयुक्त होगा।
3 noted के लिए हिन्दी म जानी जाती था या प्रसिद्ध थी ठीक होगा, किन्तु यहाँ पर कुख्यात थी अधिक सगत है।
4 hardly का अनुवाद मुश्किल स होता है, किन्तु यहाँ नही उपयुक्त होगा।

अनुवाद

उसने जो रास्ता चुना था, वह सचमुच ही मुश्किलो से भरा था। उन दिना किसी समृद्ध महिला के स्वतन्त्र जीवन जीने की कल्पना हो नही की जा सकती थी किन्तु फ्लारेंस न जिस व्यवसाय का प्रशिक्षण लिया था वह बदनाम था। उन दिना नर्सें अपने अनैतिक आचरण के लिए कुख्यात थीं। साधारण स साधारण चिकित्सा कार्यों के लिए भी व विश्वसनीय नही मानी जाती थी। एसी स्थिति म इसम कोई आश्चय नही कि फ्लोरेंस के माता पिता का उसका नस बनना पसद नहा था। किन्तु फ्लारेंस के विचार अपने माता पिता के विचारो से एकदम भिन्न थे।

Exercise 6

There seems to be a general opinion in this country that Sardar Patal was slightly of a harsh and rough temperament[1] Men[2] call him the 'Iron Man of India He was, no doubt an iron man in the sense[3] that one could rely on him for strict[4] and efficient administration But as a man, to those who had the good fortune of coming into close contact with him he was kind and considerate[5] At times he even became emotional, where his personal friends and followers were concerned However, it goes without saying that the Sardar had the great skill for organising affairs He knew the way of picking people and putting them in their proper places Once he judged a man and found him correct, he trusted him fully and got him to do any thing he wanted[6]

सकेत

1 temperament—प्रकृति ।

2 इस सदभ म men के लिए 'आदमी नही वल्कि 'लोग' उपयुक्त होगा ।

3 in the sense का अनुवाद 'इस अथ म हो भी सकता है और 'क्योंकि' भी ।

4 strict के लिए हिन्दी मे 'सख्त' या कठोर' हो सकते हैं किन्तु 'प्रशासन के साथ आने पर कडा' अधिक उपयुक्त होगा। दृढ का प्रयाग भी हो सकता है किन्तु उसका अथ कुछ अलग है ।

5 considerate के लिए हिन्दी कोशो म मात्र एक ही शब्द है—विचारशील, किन्तु स्पष्ट ही इस प्रसग म उसका प्रयाग नही किया जा सकता । ऐसी स्थिति म एकशब्दीय अभिव्यक्ति का सहारा छोडकर वाक्याशीय अभि व्यक्ति 'सबका ध्यान रखते थे अपनाई जा सकती है।

6 शब्दानुवाद होगा जो भी काम चाहते थे करवा लेते थे किन्तु इस प्रसग म, जो भी काम चाहते थे, उसे करने को सौंप देते थे अधिक सगत है ।

अनुवाद

इस देश म लोगो की आम धारणा है कि सरदार पटल कुछ रूखे और कठोर प्रकृति के थ । लोग उन्हे भारत का लौह पुरुष कहते हैं । इसम तनिक भी सदेह नही कि वे इस अथ म लौह पुरुष थ कि कडे और कुशल प्रशासन के

लिए उन पर विश्वास किया जा सकता था किन्तु जिन लोगों को उनके निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके प्रति वे दयालु थे और सबका ध्यान रखते थे। वे निजी मित्रों और अनुयायियों के मामले में कभी-कभी भावुक भी हो उठते थे। फिर भी, बहुत की आवश्यकता नहीं कि सरदार पटेल मामलों को व्यवस्थित ढंग से निपटाने में निपुण थे। वे व्यक्तियों का चयन करना और उन्हें सही स्थान पर रखना जानते थे। एक बार किसी आदमी को परख लेने के बाद अगर वे उसे ठीक पाते थे तो उस पर पूरा विश्वास करते थे, और जो भी काम चाहते थे, उसे करने को सौंप देते थे।

Exercise 7

Every one[1] is agreed that poorer people[2] should get more money and more help than they do get, and that they should get this help as soon as it can possibly be given Some of the poor say "Well! Share out the wealth now—there is plenty of it about[3] but if we share out the wealth now, no one will be able to run a business, and soon most people will have no jobs and no wages. Well let the State run the business The State can run the Post Office and build warships, why cannot it run[4] everything else? It could of course The only problem[5] is could the State run businesses better and pay higher wages than the people who are now running the business? Some people say it could some people say it could not

संकेत

1 every one का समानक है 'प्रत्येक व्यक्ति' किन्तु यहाँ सभी भी ठीक होगा। अनुवाद में हम सभी का प्रयोग किया गया है। हमारे विचार में हिन्दी की प्रवृत्ति की दृष्टि से यह अधिक सगत है। यों, इसमें मतभेद की भी गुंजाइश हो सकती है।

2 अपेक्षाकृत निर्धन लोग हिन्दी की प्रकृति के उपयुक्त नहीं होगा। इसीलिए निर्धन लोग कह सकते हैं। 'गरीब लोग' और भी अच्छा रहेगा।

3 समाज के पास मूल में न होने पर भी जोड़ा जा सकता है।

4 'चलाना' से अच्छा सभालना होगा।

5 इसके स्थान पर समस्या का भी प्रयोग हो सकता है किन्तु सवाल हिन्दी की प्रयोग परम्परा के अधिक अनुकूल है।

अनुवाद

हम सभी लोग यह मानते हैं कि गरीब लोगों को जितना धन और जितनी सहायता वस्तुत मिलती है उससे कहीं ज्यादा मिलनी चाहिए और वह भी जितनी जल्दी मिल सके उतना ही अच्छा। उनमे से कुछ लोग ऐसा सोचते है कि समाज के पास बहुत सम्पत्ति है, इसे सबमे बाट दिया जाए। किन्तु अगर हम ऐसा कर दें तो कोई भी व्यवसाय नही चला पाएगा, जिसका परिणाम यह होगा कि अधिकांश लोगो की नौकरी छूट जाएगी और उन्हे वेतन नही मिलेगा। तब व्यवसाय सरकार को चलाने दो। जब वह डाकघर चला सकती है, युद्धपोत बना सकती है तो फिर बाकी सब क्यो नही सभाल सकती ?" बेशक वह सभाल सकती है। सवाल यह है कि क्या सरकार व्यवसायो को बेहतर ढग से चला सकती है और कर्मचारियो को पहले से अधिक वेतन दे सकती है ? कुछ लोग कहते हैं कि वह ऐसा कर सकती है और कुछ कहते हैं, नही कर सकती।

Exercise 8

Among all the gifts you can make to a child there is none more conducive[1] to his present and future happiness and content,[2], none more likely to add richness[3] to his life, than a book Not a book but the habit of reading Give him the habit of reading and you have done something for which he may well be thankful all his days

Books should be the daily companions of a child s life And they ought not be linked so closely with the school You don't want to create the idea that reading is a task a lesson It s the fun the good time, he can get out of reading that needs to be emphasized [4] You want to make him enjoy reading so that reading will become a treasured[5] part of his daily life, and there is nothing difficult about this

सकेत

इस गद्यांश के अनुवाद में यह बात ध्यान देने की है कि स्रोतभाषा अंग्रेजी और लक्ष्यभाषा हिन्दी की प्रकृति और प्रयोग परम्परा में अनेक स्थितियों में अन्तर होने के कारण मूल के मात्र भाव को लेकर चलना पडा है, इसी लिए यह

अनुवाद उतना मूलनिष्ठ नही है, जितना पीछे के अनुवाद हैं। वस्तुत अनुवाद को सहज, बोधगम्य और प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए अनुवादक को कभी-कभी ऐसी छूट लेनी ही पडती है।

1 सहायक, प्रेरक
2 सुख-सतुष्टि
3 सभी दृष्टियो से सम्पन्न बना सके
4 अनुवाद म इस वाक्य को इस प्रकार से समझाना आवश्यक समझा गया है।
5 बहुमूल्य।

अनुवाद

बच्चे को जितने भी उपहार तुम दे सकते हो, उनमे पुस्तक से बढकर और कोई भी ऐसा नही है जो उसके वतमान और भविष्य की सुख-सन्तुष्टि म इतना सहायक हो, तथा उसके जीवन को सभी दष्टिया स इतना सम्पन्न बना सके। वस्तुत यहाँ अभिप्राय पुस्तक नही, बल्कि पुस्तक पढने की आदत से है। अगर बच्चे को पढने की आदत डाल दी जाए, तो यह एक ऐसा काय है जिसके लिए वह आजीवन आभारी रहेगा। पुस्तकें बच्चे की रोजमर्रा की जिन्दगी का साथी होनी चाहिए और उन्हे स्कूली शिक्षा से बहुत सम्बद्ध नही होना चाहिए। तुम्हे यह आभास नही होने दना चाहिए कि पढना कोई गहकाय या स्कूल से दिया गया पाठ है। बल इस बात पर देने की आवश्यकता है कि पढना उसे मनोरजक लगे और वह यह महसूस करे कि इसके कारण उसका समय अच्छी तरह बीत रहा है। तुम्हे इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि पढना उसको रुचिकर लगे जिससे कि वह उसके दनिक जीवन का बहुमूल्य अग बन जाए और वस्तुत यह कोई मुश्किल काम नही है।

Exercise 9

You seemed at first to take no notice of your school fellows, or rather to set yourself against them, because they were strangers to you They knew as little of you as you did of them, so that this would have been a reason for their keeping aloof from you as well which you would have felt as a hardship Learn never to conceive a prejudice against others because you know nothing of them It is bad reasoning and makes enemies

of half the world Do not think ill of them till they behave ill to you, and then strive to avoid the faults which you see in them This will disarm their hostility sooner than pique or resentment[1] or complaint

संकेत

यह अनुवाद भी बहुत मूलनिष्ठ नहीं है। मूल के भावों तथा हिन्दी भाषा के प्रवाह की रक्षा के लिए अनुवादक ने काफी छूट ली है। अभ्यास के लिए यह अच्छा होगा कि इस पुस्तक के प्रयोक्ता इस पैराग्राफ में मूल और अनुवाद के अंतर को ध्यान से देखें और यह विचार करें कि कहाँ-कहाँ और क्या छूट ली गई है, और क्या इन छूट वाले स्थलों पर दूसरा विकल्प सम्भव है, जिसमें बोधगम्यता तथा प्रवाह के साथ मूलनिष्ठता भी हो।

1 resentment के लिए 'विरोध' भी ठीक हो सकता है, किन्तु वह इसी वाक्य में पहले आ चुका है, अत resentment को 'प्रतिक्रिया जनित खीझ' के रूप में रखना उचित समझा गया है। कहना न होगा कि resentment प्रतिक्रिया से उत्पन्न खीझ ही होती है।

अनुवाद

ऐसा लगता है कि आरम्भ में तुम अपने सहपाठियों की ओर ध्यान नहीं देते थे बल्कि तुम अपने को उनके विरोध में रखकर देखते थे क्योंकि वे तुम्हारे लिए अजनबी थे। वे तुम्हारे बारे में उतना ही कम जानते थे जितना तुम उनके बारे में। यही कारण रहा होगा कि वे भी तुमसे अलग अलग रहा करते थे जो तुम्हें कदाचित अच्छा नहीं लगा होगा। किसी व्यक्ति के बारे में केवल इसलिए मन में पूर्वाग्रह न बना लो कि तुम उसे जानते नहीं। यह तर्क ठीक नहीं है और आधी दुनिया को तुम्हारा दुश्मन बना देगा। जब तक वे तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार न करें, तुम उनके बारे में बुरा मत सोचो, और फिर जो दोष तुम इनमें पाओ, उन्हें नजरअंदाज करने की कोशिश करो। ऐसा करने से उनका विरोध जितनी जल्दी शमित हो जाएगा उतना किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया-जनित खीझ या शिकायत से नहीं।

Exercise 10

Speech is a great[1] blessing but it can also be[2] a great curse, for while it helps us to make our[3] intentions and desires known

to our fellows it can also, if we use it carelessly make our attitude completely misunderstood A slip of the tongue, the use of an unusual word or of an ambiguous word, and so on, may create an enemy[4] where we had hoped to win a friend Again, different classes of people use different vocabularies and the ordinary speech of an educated *man may strike*[5] an uneducated listener as showing pride, unwittingly, we may use a word which bears a different meaning to our listener from what it does to men of our own class Thus speech is not a gift to use lightly without thought but one which demands *careful handling only a fool will express himself alike to all* kinds and conditions of men

संकेत

1 great के लिए यहाँ 'महान' से अच्छा समानक 'बहुत बड़ा' होगा ।
2 *it can be* के लिए हो सकती है' की तुलना में सिद्ध हो सकती है अधिक संगत होगा ।
3 our एक बार आया है किन्तु हिन्दी में 'अपने और अपनी दोनों का प्रयोग करना पड़ेगा, क्योंकि विचार पुल्लिंग है और 'इच्छा' स्त्रीलिंग ।
4 हिंदी में लोगों को जोड़ दिया गया है जो मूल में नहीं है ।
5 *may strike* के लिए हिन्दी में लग सकता है' भी हो सकता है किन्तु 'की गंध आ सकती है अधिक अच्छा रहेगा ।

अनुवाद

या तो भाषा एक बहुत बड़ा वरदान है लेकिन यह बहुत बड़ा अभिशाप भी सिद्ध हो सकती है। इसकी सहायता से जहाँ हम अपने विचारों और अपनी इच्छाओं को अपने मित्रों पर प्रकट कर सकते हैं, वहीं अगर हम इसके प्रयोग में सावधानी न बरतें तो हमारे दृष्टिकोण को कुछ-का कुछ समझा जा सकता है। जबान की चूक या अप्रचलित एवं अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग या ऐसी ही अन्य गलतियाँ लोगों को हमारा मित्र बनाने के बजाय दुश्मन बना देती हैं। ऐसे ही अलग अलग वर्गों के लोग अलग अलग शब्दावली का प्रयोग करते हैं और एक शिक्षित व्यक्ति की साधारण भाषा में भी एक अशिक्षित आदमी को अहंकार की गंध आ सकती है। अनजाने में हमसे ऐसे शब्द का प्रयोग हो सकता है जिसका अर्थ सुनने वाले के लिए कुछ हो तथा हमारे वर्ग के लोगों के लिए

कुछ और हो। इसीलिए भाषा ऐसा वरदान नहीं है जिसका प्रयोग यों ही बिना सोचे-समझे किया जा सके। इसके विपरीत इसका प्रयोग पूरी सावधानी से किया जाना चाहिए। कोई मूर्ख ही हर तरह के लोगों के सामने तथा हर प्रकार की परिस्थिति में अपने आपको एक ही ढंग से अभिव्यक्त करेगा।

अतिरिक्त अभ्यासमाला

(स्वयं अनुवाद करने के लिए)

Exercise 1

Non violence in its dynamic condition means conscious suffering It does not mean meek submission to the will of the evil doer, but it means putting of one's whole soul against the will of the tyrant Working under this law of our being, it is possible for a single individual to defy the whole might of an unjust empire to save his honour, his religion his soul, and lay the foundation for that empire s fall or its regeneration And so I am not pleading for India to practise non violence because she is weak I want her to practise non violence being conscious of her strength and power

Exercise 2

Suddenly the audience got restless like waves visited by a chance gust All eyes were focussed at once on the other end where we could see the frail giant emerge down a corridor, with a young lady on each side of him on whose shoulders he leaned affectionately whenever he came to his prayer meetings As he drew near everybody stood up in reverence A hush succeeded the growing hum when he approached me I made him my obeisance He smiled radiantly

Exercise 9

The test of a great book is whether we want to read it only once or more than once Any really great book we want to read the second time even more than we wanted to read it the first time and every additional time that we read it we find new meanings and new beauties in it A book that a person of education and good taste does not care to read more than once is very probably not worth much But we can not consider the judgment of a single individual infallible The opinion that makes a book great must be the opinion of many For even the greatest critics are apt to have certain dullnesses, certain inappreciations Carlyle for example could not endure Browning Byron could not endure some of the greatest of English poets A man must be many sided to utter a trust worthy estimate of many books We may doubt the judgment of the single critic at times But there is no doubt possible in regard to the judgment of generations

Exercise 10

When we survey our lives and endeavours we soon observe that almost the whole of our actions and desires is bound up with the existence of other human things We notice that our whole nature resembles that of the social animals We eat food that others have produced wear clothes that others have made, live in houses that others have built Te greater part of our knowledge and beliefs has been communicated to us by other people through the medium of a language which others have created Without language our mental capactities would be poor indeed comparable to those of the higher animals, we have, therefore to admit that we owe our principal advantage over the beasts to the fact of living in a human society The individual if left alone from birth would remain primitive and beastlike in his thoughts and feelings to a degree that we can hardly conceive The individual is what he is and has the

significance that he has, not so much in virtue of his individuality but rather as a member of a great human community, which directs his material and spiritual existence form the cradle to the grave

Exercise 11

People talk of memorials to him in statues of bronze or marble or pillars and thus they mock him and belie his message What tribute shall we pay to him that he would have appreciated ? He has shown us the way to live and the way to die and if we have not understood that lesson, it would be better that we raised no memorial to him, for the only fit memorial is to follow reverently in the path he showed us and to do our duty in life and in death.

Exercise 12

The third great defect of our civilization is that it does not know what to do with its knowledge Science has given us powers fit for the gods yet we use them like small children For example we do not know how to manage our machines Machines were made to be man s servants yet he has grown so dependent on them that they are in a fair way to become his masters Already most men spend most of their lives looking after and waiting upon machines And the machines are very stern masters They must be fed with coal and given petrol to drink, and oil to wash with, and they must be kept at the right temperature

Exercise 13

Looking back upon her life , one sees an astonishing combination of gifts One, here is a life full of vitality, one here are 50 years of existence—not merely existence but a vital, dynamic existence—touching many aspects of our life cultural and political And whatever she touched she infused with some

thing of her fire She was indeed a pillar of fire And then again she was like cool running water, soothing and uplifting and bringing down the passion of her politics to the cooler levels of human beings So it is difficult for one to speak about her except that one realizes that here was a magnificence of spirit and it is gone

Exercise 14

The great error in the social order today is the false belief that everything can be set right by economics, science and democracy Nothing could be farther from the truth Without the harmony and direction which flows from moral principles and spiritual values, science economic planning and slogan democracy can only lead to greater disorder and the subjection of the human spirit to brute force and matarialism Marx was logical in giving no value to the individual except as a part of a whole, a cog in a machine It is only because man is made in God s image, endowed with a soul that he is raised above other things, Marx removed God and man fell to the level of the animals, distinguished from them only as being more cunning

Exercise 15

The best friend a man has in this world may turn against him and become his enemy His son or his daughter, that he has reared with loving care may prove ungrateful Those who are nearest and dearest to us, those whom we trust without happiness and our good name may become traitors to their faith

The money that a man has he may lose It flies away from him perhaps when he needs it most

A man s reputation may be sacrificed in a moment of ill considered action

Exercise 16

Men who are always grumbling about their poverty, com plaining of their difficulties whining over their troubles, and thinking that their lot in this world is mean and poor will never get any happiness out of life or achieve any success However mean our life may be if we face it bravely and honestly and try to make the best of it we shall find that after all it is not so bad as we thought ; and we may have our times of happiness and the joys of success There is nothing common or unclean, until we make it so by the wrong attitude we adopt towards it

Exercise 17

The Ambassador as he is the representative of his country has to take particular care that neither by his conduct nor by his talk does he bring discredit to his country His style of living, while not ostentatious or extravagant has to be such as to maintain his proper dignity In appearance, behaviour and general contact with people he should be careful not to forget that his individual personality is submerged in that of a repre sentative of his country This fact develops in many people a pompous manner and a generally formalised behaviour But even that is better than conduct and behaviour which brings discredit to one s country and makes it a laughing stock To strike a happy mean b tween excessive familiarity and disre gard of conventions sometimes attempted by the practitioners of New Diplomacy and the pomposity and undue attachment to the rule of protocol should be the aim of an Ambassador

Exercise 18

The function of poetry is to make the life of man more full and real It is to make him an independent hunter of the facts by which men live—the facts of the world and the facts of the universe It enables him to escap- out of the make

believe existence of every day in which perhaps an employer seems more huge and imminent than God, and to explore reality, where God and love and beauty and life and death are seen in truer proportions and where the desire of the heart is at least brought within sight of a goal There are critics who hold that it is enough to say that art offers us an escape from life Art, however, offers us not only an escape from life but an escape into life, and the first escape is of importance only if it leads to the second We often speak of the imagination as though it were a brilliant faculty of lying, on the contrary it is faculty by which not only do we see and hear things that the eye cannot see or the ear hear but which enables the eye to see and the ear to hear, things that they did not see or hear before

3

अभ्यासमाला उच्चस्तरीय

Exercise I

A few words[1] on the problem of the medium of instruction at the university stage may not be out of place One does not expect that when we discuss a subject such as this, one's[2] views will be readily shared by others It is sometimes heartening to remember that If education can be defined in one word, that word is controversy where concord arises, learning withers[3], where conflict rules education flourishes[4]" In dealing with the language problem we are concerned with a dynamic and creative situation and a discussion of the subject will benefit us all provided it is free, frank[5] and objective It seems that so far as the near future is concerned universities have to function largely on a bilingual basis instead of monolingual basis namely, the regional language and English, as recommended by the National Integration Council (June 1962) For post graduate study and research and to serve as a link for inter communication between the universities and also with the outside world, English is an obvious choice[6] for us in the context of our times On the other hand to facilitate understanding of difficult subjects and basic concepts and to bring together workers and thinkers which is an essential process for advancement of science and

industry in the country the use of regional languagesb ecomes almost a necessity

संकेत

1 A few words को हिन्दी मुहावरे के अनुसार कुछ शब्द लिख सकते हैं।
2 One सर्वनाम के लिए हिन्दी में कोई निश्चित शब्द नहीं है। संदर्भ के अनुसार यहाँ इसे 'हम' लिख सकते हैं।
3,4 Withers and flourishes के अनुवाद में तालमेल बैठाना आवश्यक है। इन्हें क्रमशः 'मुरझाना और फलना फूलना' लिख सकते हैं।
5 frank का अर्थ है 'स्पष्टवादी'। यहाँ विशेषण विपर्यय (transferred epithet) के प्रयोग के कारण यह 'चर्चा' के विशेषण के रूप में आया है। स्पष्ट चर्चा लिखने से बात अधूरी रह जाएगी। चर्चा का विशेषण स्पष्टवादितापूर्ण होना चाहिए परन्तु यह शब्द इतना भारी भरकम है कि इसके प्रयोग से बचना चाहिए। अतः दूसरा विकल्प होगा 'निस्संकोच'।
6 English is an obvious choice में obvious choice के सही समानक ढूँढ़ना मुश्किल है। उपयुक्त अनुवाद होगा— अंग्रेज़ी एक सहज विकल्प के रूप में सामने आती है।

अनुवाद

विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम की समस्या पर दो शब्द कहना अप्रासंगिक न होगा। ऐसी आशा नहीं की जाती कि जब हम इस विषय की चर्चा करते हैं तो अन्य लोग हमारे दृष्टिकोण को तुरंत स्वीकार कर लेंगे। कभी कभी यह बात याद रखने से डूबना बच जाता है कि 'यदि शिक्षा की परिभाषा एक शब्द में देनी हो तो वह शब्द होगा—विवाद जहाँ सहमति पैदा हो जाती है, वहाँ शिक्षा मुरझा जाता है, जहाँ द्वंद्व चलता रहता है, वहाँ शिक्षा फलती फूलती है। भाषा समस्या पर विचार करते समय हमारा सरोकार एक गतिशील और सृजनात्मक स्थिति से होता है। अतः इस विषय की चर्चा से हम सबको लाभ होगा शर्त यह है कि यह चर्चा स्वतंत्र, निस्संकोच और वस्तुपरक हो। ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ तक निकट भविष्य का सम्बन्ध है विश्वविद्यालयों को एकभाषाई आधार की जगह मुख्यतः दो भाषाई आधार पर कार्य करना होगा अर्थात क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेज़ी में, जैसी कि राष्ट्रीय एकता परिषद (जून 1962) ने सिफारिश की थी। स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसंधान के लिए, विभिन्न विश्वविद्यालयों के परस्पर सम्पर्क की कड़ी के रूप में तथा बाह्य संसार से सम्पर्क के लिए वर्तमान युग की

परिस्थितियों में अंग्रेजी एक सहज विकल्प के रूप में सामने आती है। दूसरी ओर, कठिन विषयों और मूल संकल्पनाओं को समझने के लिए तथा श्रमिकों और विचारकों को एक साथ लाने के लिए—जो कि देश में विज्ञान और उद्योग की उन्नति के लिए आवश्यक है—क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग प्राय आवश्यक हो जाता है।

Exercise II

What are the basic ideas of this new **humanism**[1] ? They can be briefly stated as a modern and Indian interpretation of liberty, **equality**[2] and **fraternity**[3] They are modern because the economic movements of the nineteenth century have given a new **content**[4] to these ideas They have taken an Indian form because liberty for example, means in India not merely the acquisition of political **independence**[5] but the emancipation of women **freedom**[6] for the suppressed classes, liquidation of feudal elements within the country and many other things which have ceased to have significance in Europe In the same way, equality is a dynamic and revolutionary conception in India as society has always been organised on the basis of **inequality**[7] of **caste**[8] and untouchability Fraternity also has a different significance in India for while the universalism of Hindu thought emphasizes the motive of action as Loka Samgraha or welfare of the world the practical experience of the subordination of the non White races and the prevalence of discrimination by European peoples have given to Indian thought on this subject its colour and **temper**[9] It is the fraternity of the oppressed which has moved the mind of modern India The Marxian doctrine of fraternity 'Workers of the world unite found in India a corollary 'the oppressed of the world unite and this feeling has been deeply ingrained in the Indian mind

संकेत

1 Humanism के लिए मानववाद उपयुक्त होगा। यदि यही Humanitarianism आए तो उसे 'मानवतावाद' कर सकते हैं।
2 equality के लिए समता उपयुक्त है। कुछ लोग समानता लिखते हैं, परन्तु वह similarity का आभास देता है।
3 fraternity के लिए अनेक शब्द हैं—बन्धुत्व भ्रातत्व, भाईचारा। परन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ में Liberty Equality Fraternity के लिए, स्वतन्त्रता, समता बन्धुता अधिक उपयुक्त है। आगे बन्धुत्व लिख सकते हैं।
4 content के कोशगत अर्थ 'अन्तर्वस्तु' विषय वस्तु यहाँ उपयुक्त नहीं। 'नया तत्त्व भर दिया है' लिखना उपयुक्त होगा।
5 Independence और Liberty में अन्तर करने के लिए इन्हें क्रमश स्वाधीनता और स्वतन्त्रता लिख सकते हैं।
6 Freedom और Liberty में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। परन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ में 'दलित वर्गों का उद्धार' लिखना उपयुक्त होगा।
7 Inequality के लिए विषमता उपयुक्त है। 'असमानता' लिखना ठीक नहीं।
8 Caste के लिए जाति शब्द प्रचलित है। परन्तु यहाँ 'जात पाँत' अधिक सटीक होगा। इसी के साथ untouchability के लिए छुआछूत उपयुक्त होगा हालाँकि 'अस्पृश्यता' भी लिख सकते हैं।
9 इस जटिल वाक्य को तोड़कर सरल बना सकते हैं। इसमें हिन्दी वाक्य रचना की प्रकृति को ध्यान में रखना होगा और पूर्वापर सम्बन्ध का निर्वाह भी जरूरी होगा।

अनुवाद

इस नये मानववाद की मूल मान्यताएं क्या हैं ? संक्षेप में इन्हें स्वतन्त्रता समता और बन्धुता की आधुनिक एवं भारतीय व्याख्या कह सकते हैं। ये आधुनिक इसलिए हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के आर्थिक आन्दोलनों ने इन मान्यताओं में नया तत्त्व भर दिया है। इनका रूप भारतीय इसलिए हो गया है कि भारत में स्वतन्त्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति नहीं बल्कि स्त्रियों का उत्थान दलित वर्गों का उद्धार, देश के भीतर सामन्ती तत्त्वों की समाप्ति तथा अन्य बहुत सी बातें भी इसकी परिधि में आ जाती हैं जो यूरोप के लिए उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं रह गई है। इसी तरह भारत के सन्दर्भ में समता भी एक गतिशील और क्रान्तिकारी संकल्पना है क्योंकि यहाँ का समाज हमेशा से विषमता जात पाँत और छुआछूत के आधार पर संगठित

रहा है। भारत में बंधुत्व का महत्त्व भी दूसरी तरह से है। यों हिंदू चिंतन के विश्ववाद का आग्रह है कि कर्म का उद्देश्य लोक संग्रह या विश्व कल्याण होना चाहिए, परन्तु यूरोपीय जातियों के व्यावहारिक अनुभव ने इस विषय पर भारतीय चिंतन को एक नये रंग में रँग दिया है। यूरोप की विशेषता यह थी कि वहाँ अश्वेत जातियों को पराधीन बनाकर उनके साथ भेदभाव बरता जाता था। आधुनिक भारतीय मानस दलित वर्गों के बंधुत्व की भावना में प्रतिफलित रहा है। मार्क्स का सिद्धांत था—'दुनिया के मजदूरो, एक हो जाओ।' भारत में इसके समानांतर यह सिद्धांत विकसित हुआ है—'दुनिया के दलित वर्गों, एक हो जाओ।' यह भावना भारत के मन में गहरी बसी है।

Exercise III

What is the Secular State[1] which India claims to be ? It postulates that political institutions must be based on the economic and social interests of the entire community, without reference to religion, race or sect ; that all must enjoy equal rights but no privileges, prescriptive rights or special claims[3] should be allowed for any group on the basis of religion Secondly, it eliminates from the body politic[4] all ideas of division between individuals and groups on the basis of their faith or racial origin[5] In a country which has had forty years of history based on separate electorates communal proportion[6] in all appointments from the meanest to the highest, where a man's preferment depended mainly on his separateness from if not animosity towards members of other religions or communities this is a definite breach with the immediate past [7] In the third place it is obvious that a composite secular state must accept as the basis of its policy what Aristotle termed 'distributive justice[8] , that all communities must share the power as they must share the duties and responsibilities of being a citizen

संकेत

1 Secular State पारिभाषिक शब्द है जिसके लिए प्रस्तुत संदर्भ में 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' उपयुक्त होगा।

2 Without reference to religion, race or sect—इस अंश का अनुवाद वाक्य के बीच में रखने से गड़बड़ पैदा होगी। इसको निषेधात्मक रूप देकर वाक्य के अंत में जोड़ने से अनुवाद स्पष्ट हो जाएगा। 'race or sect' को हिंदी की प्रकृति के अनुसार 'जात-पाँत' कह सकते हैं।

3 *Priviliges, prescriptive rights or special claims*—इन शब्दों के अर्थ एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। इनका अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि एक-से शब्दों की पुनरावृत्ति न हो। अतः इन्हें विशेषाधिकार परम्परागत अधिकार या विशेष स्वत्वाधिकार लिखना उपयुक्त होगा। 'अधिकार' से जुड़े हुए अन्य अनेक शब्द भी अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं जिन्हें एक-दूसरे से पृथक करने के लिए नए पारिभाषिक शब्द गढ़े गए हैं right अधिकार, authority प्राधिकार, privilege विशेषाधिकार, prerogative परमाधिकार।

4 body politic के लिए बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली) में 'राज निकाय' दिया है। परन्तु यहाँ इसका कोई अर्थ समझ नहीं आएगा। अतः 'राज्य' लिखना उपयुक्त होगा।

5 faith का अर्थ विश्वास निष्ठा इत्यादि है। परन्तु यहाँ धर्म अधिक सार्थक होगा। racial origin के लिए 'जाति' ही उपयुक्त होगा 'जातीय उद्गम' इत्यादि की जरूरत नहीं।

6 communal proportion का शब्दशः अनुवाद उपयुक्त नहीं होगा। इसकी व्याख्या कर देनी चाहिए।

7 this is a definite breach with the immediate past—इस अंश के समानान्तर हिंदी अभिव्यक्ति ढूँढना मुश्किल है। इसके भाव को ग्रहण करते हुए यह लिखना उपयुक्त होगा— 'यह व्यवस्था निश्चय ही इतिहास को एक नया मोड़ देने वाली थी।'

8 What Aristotle termed distributive justice—साधारणतः इस अंश का अनुवाद यों करेंगे 'जिस चीज को अरस्तू ने वितरण न्याय की संज्ञा दी है।' प्रस्तुत संदर्भ में 'चीज' की जगह 'सिद्धान्त' लिखना उपयुक्त होगा।

अनुवाद

भारत जिस तरह का धर्म निरपेक्ष राज्य होने का दावा करता है, उसका स्वरूप क्या है ? उसकी शर्त यह है कि राजनीतिक संस्थाएँ पूरे समुदाय के आर्थिक और सामाजिक हितों पर आधारित होनी चाहिए और उनमें धर्म या जात-पात का कोई स्थान नहीं होना चाहिए, सबको समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए परन्तु किसी वर्ग को धर्म के आधार पर कोई विशेषाधिकार, परम्परागत अधिकार या विशेष स्वत्वाधिकार प्राप्त नहीं होने चाहिए। दूसरे, इसमें राज्य के भीतर धर्म या जाति के आधार पर व्यक्तियों या वर्गों के विभाजन के सारे विचार परे रख दिए जाते हैं। जिस देश के इतिहास में चालीस वर्ष तक पृथक्-पृथक् निर्वाचनमण्डलों की व्यवस्था रही हो और निम्नतम से लेकर उच्चतम नियुक्तियों में सब जगह विभिन्न सम्प्रदायों का हिस्सा रखा गया हो और जहां मनुष्य की पदोन्नति मुख्यत अन्य धर्मों और सम्प्रदायों के सदस्यों से अलगाव पर निर्भर रही हो—चाहे उनके प्रति शत्रुता की मांग न भी की जाती हो—वहां यह व्यवस्था निश्चय ही इतिहास को एक नया मोड़ देने वाली थी। तीसरे यह जाहिर है कि एक मिले-जुले धर्म निरपेक्ष राज्य को वह सिद्धान्त अपनी नीति के आधार के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए जिसे अरस्तू ने वितरण न्याय की संज्ञा दी है और वहां सत्ता के प्रयोग में समस्त सम्प्रदायों का वैसे ही हिस्सा मिलना चाहिए जैसे नागरिक के नाते कर्त्तव्यों और दायित्वों में उनका हिस्सा रहता है।

Exercise IV

Nationalism, of course is a curious phenomenon[1] which at a certain stage in a country's history gives life growth strength and unity but at the same time it has a tendency to limit one, because one thinks of one's country as something different from the rest of the world The perspective changes and one is continuously thinking of one's own struggles and virtues and failings[2] to the exclusion of other thoughts The result is that the same nationalism which is the symbol of growth for a people becomes a symbol of the cessation of that growth in the mind Nationalism when it becomes successful[3], sometimes goes on spreading in an aggressive way and becomes a danger

study and execution Behind every proposal is a great collection of files a long series of committee meetings a large number of individual discussions and indeed the whole mechanism of administration Parliament cannot govern It can do no more than criticise Moreover we have discussed these questions in terms of the majority Facing[6] the Government Front Bench is the Opposition[7] Front Bench *There is no dictatorship so long as there is an Opposition*

संकेत

1 Dictatorship के लिए 'अधिनायकवाद और अधिनायकतन्त्र' शब्द हैं। पहला एक सिद्धान्त को व्यक्त करता है, दूसरा व्यवस्था को। यहाँ व्यवस्था या पद्धति की ओर संकेत है। अतः इसे अधिनायकतन्त्र लिखना उपयुक्त होगा।

2 अंग्रेज़ी की 'at best, at worst' जैसी अभिव्यक्तियों के हिन्दी समानक ढूँढना मुश्किल है। यहाँ इसे 'बहुत-से बहुत' लिख सकते हैं।

3 votes freely cast में adjectival phrase 'freely caste' को ज्यों के त्यों रखने में हिन्दी वाक्य गड़बड़ा जाएगा। अतः इसकी व्याख्या कर देना उचित होगा— और वोट बिना किसी दबाव के दिए जाते हैं।

4 'too complicated to be conducted' इस अंश के अनुवाद के लिए निषेधात्मक शैली अपनानी पड़ेगी क्योंकि हिन्दी में इसकी समानान्तर अभिव्यक्ति ढूँढना मुश्किल है।

5 apparatus में निहित अर्थ की व्यापकता को व्यक्त करने के लिए साज सामान शब्द उपयुक्त होगा।

6 'facing' का अनुवाद है, सामने रहते/बैठते हैं। परन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ की गरिमा को देखते हुए बढ़िया अनुवाद होगा— सामने विराजमान होते हैं।'

7 Opposition के लिए यहाँ विरोध या विरोधी पक्ष की जगह 'विपक्ष' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

अनुवाद

इस पद्धति को *अधिनायकतन्त्र* की संज्ञा नहीं दी जा सकती। बहुत से बहुत यह निश्चित वर्षों की अवधि का अधिनायकतन्त्र होता है। परन्तु जिन अधिनायकों को संक्षिप्त अन्तराल के बाद लोगों में वोट माँगने जाना पड़ता है—और वोट बिना किसी दबाव के दिए जाते हैं—वे जनता के सेवक होते

है स्वामी नहीं होते। सरकार का कार्य इतना जटिल होता है कि उसे 630 आदमी खुले वाद विवाद के द्वारा नहीं चला सकते। इसके लिए अध्ययन और कार्यान्वयन के पूरे साज-सामान की जरूरत होती है। प्रत्येक प्रस्ताव के पीछे फाइलों का भारी पुलिंदा, समितियों की बहुत सारी बैठकें, ढेर सारी व्यक्तिगत चर्चाएँ और पूरा-का पूरा प्रशासन तन्त्र रहता है। संसद शासन नहीं कर सकती। वह आलोचना के अलावा कुछ नहीं कर सकती। फिर, हमने इन प्रश्नों का विवेचन बहुमत की दृष्टि से ही किया है। एक ओर अगली पंक्तियों में सरकारी सदस्य विराजमान होते हैं, दूसरी ओर उनके सामने वाली अगली पंक्तियों में विपक्ष के सदस्य बैठते हैं। जब तक विपक्ष मौजूद है, तब तक अधिनायकतन्त्र नहीं आ सकता।

Exercise VI

The essayist then, in his particular fashion,[1] is an interpreter of life, a critic of life He does not see life as the historian or as the philosopher or as the poet or as the novelist and yet he has a touch of all these [2] He is not concerned with discovering a theory of it all or fitting the various parts of it into each other He works rather[3] on what is called the analytic method,[4] observing,[5] recording interpreting just as things strike him,[6] and letting his fancy play over the beauty and signification [7] the end of it all being this that he is deeply concerned with the charm quality of things,[8] and desires to put it all in the clearest and gentlest light, so that at least he may make others love life a litter better[10] and prepare them for its infinite variety and, alike for its joyful and mournful surprises

संकेत

1 in his particular fashion को हिन्दी मुहावरे के अनुरूप 'अपने ढंग से' कर सकते हैं।

2 he has touch of all these में touch का हिन्दी समानक मिलना कठिन है। प्रस्तुत सन्दर्भ में इसका अनुवाद यों कर सकते हैं उसमें इन सबकी विशेषता पाई जाती है।

3 यहां rather का कोई सही समानक रखना कठिन है। इसका भाव देखा जाए तो के रूप में व्यक्त कर सकते हैं।

4 what is called the analytic method का शब्दशः अनुवाद उपयुक्त नहीं होगा। हिन्दी मुहावरे के अनुसार इस या कर सकते हैं उसकी कार्य पद्धति को विश्लेषणात्मक मान सकते हैं।

5 observing से वाक्य को तोड़कर स्वतन्त्र वाक्य के रूप में रख सकते हैं। यदि verb की इस gerund form को सरल वाक्य की तरह निरीक्षण करते हुए इत्यादि लिखेंगे तो हिन्दी का वाक्य बहुत अटपटा हो जाएगा।

6 things strike him में strike का हिन्दी समानक मिलना कठिन है। इस या कर सकते हैं जैसे जैसे चीजें उसके सामने आती हैं।

7 play over the beauty and signification को हिन्दी मुहावरे के अनुरूप या कर सकते हैं (अपनी कल्पना को) सौन्दर्य और अर्थवत्ता की दिशा में मुक्त उड़ान भरने देता है।

8 he is deeply concerned with the charm quality of things—इसका अनुवाद हिन्दी मुहावरे की शैली में इस तरह उपयुक्त होगा—वह वस्तु जगत की रम्यता (या रमणीयता) में डूब जाता है।

9 desires to put it all in the clearest and gentlest light—इस पूरी अभिव्यक्ति को हिन्दी में प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दावली का चयन आवश्यक होगा। इस यों कर सकते हैं अपने अनुभव को सर्वथा स्पष्ट और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने को मचल उठता है।

10 make others love life a little better—इसे हिन्दी में इस तरह लिखना उपयुक्त होगा दूसरों के मन में कुछ अधिक प्रीति जगा सके।

अनुवाद

अतः निबंधकार अपने ढंग से जीवन का व्याख्याकार और जीवन का समालोचक होता है। वह जीवन को न तो इतिहासकार या दार्शनिक की दृष्टि से देखता है न कवि या उपन्यासकार की दृष्टि से, परन्तु फिर भी उसमें इन सबकी विशेषता पाई जाती है। उसका काम सम्पूर्ण जीवन के सिद्धान्त का अन्वेषण करना या उसके विभिन्न अंगों को एक दूसरे से जोड़ना नहीं है। देखा जाए तो उसकी कार्य पद्धति को विश्लेषणात्मक मान सकते हैं। जैसे जैसे चीजें उसके सामने आती हैं वह उनका निरीक्षण करता है उनका विवरण देता है व्याख्या करता है और अपनी कल्पना को सौन्दर्य और अर्थवत्ता की दिशा में मुक्त उड़ान भरने देता है। परिणाम यह होता है कि वह वस्तु जगत

की रम्यता म डूब जाता है, और अपने अनुभव को सवथा स्पष्ट एव सुरुचि-पूण ढग स प्रस्तुत करने को मचल उठता है ताकि वह दूसरो के मन मे जीवन के प्रति कुछ अधिक प्रीति जगा सके और उन्हे इसके असीम वविध्य तथा उन आश्चर्यो का सामना करने की प्रेरणा द सके जो सुखमय भी हो सकते हैं, दुखमय भी।

Exercise VII

His[1] mind was so comprehensive[2] that no language but his own could have expressed its contents,[3] and so ponderous[4] was his language that sentiments less lofty and less solid than his were would have been encumbered, not adorned by it Mr Johnson was however, no pompous converser,[5] and though[6] he was accused of using big words it was only when little ones would not express his meaning [7] as clearly, or when the elevation of the thought would have been disgraced[8] by a dress less superb He used to say that the size of a man s under standing might always be known[9] by his mirth, and his own was never contemptible [10]

सकेत

1 यह उद्धरण चूकि मि० जानसन की प्रशसा म लिखा गया है इसलिए यहाँ His का अनुवाद उनका होना चाहिए।

2 mind के विशेषण के रूप मे comprehensive का हिन्दी समानक ढूढना मुश्किल है। यह ऐस मन की विशेषता का व्यक्त करता है जो बहुत सारे विचारो, भावो और सकल्पनाओ का ग्रहण कर सके। यहा सवेदनशील' शब्द उपयुक्त हो सकता है उनका मन इतना सवेदनशील था कि'।

3 contents का प्रस्तुत सदभ म भाव लिख सकते हैं।

4 language के विशेषण के रूप म ponderous का हिन्दी समानक मिलना मुश्किल है। यहा गुरु-गभीर स काम चल जाएगा।

5 pompous converser भी एक विलक्षण प्रयोग है। converser ■ यहाँ अभिप्राय लेखक स है वार्ताकार से नही। परन्तु उसके विशेषण pompous का अनुवाद भी कठिन है। यहा इस तरह लिखना उपयुक्त होगा— 'चमत्कारपूण लेखन के धनी।

6 though के अनुवाद के लिए वाक्य के शुरू में, 'यद्यपि' या 'हालांकि' लिखना जरूरी नहीं। बीच में 'तो' का प्रयोग करने से अर्थ भी आ जाता है और शैली भी सजीव हो जाती है—'उन पर बड़े-बड़े शब्दों के प्रयोग का आरोप तो लगाया जाता है।'

7 meaning के लिए यहाँ 'अर्थ' की जगह 'अभिप्राय' का प्रयोग समीचीन होगा। अर्थ शब्दों या भाषा का होता है, व्यक्ति का meaning उसका अभिप्राय होता है।

8 elevation...would have been disgraced को हिंदी मुहावरे के अनुरूप इस तरह कर सकते हैं—'उनके चिंतन के वैभव पर आंच आ सकती थी।'

9 size...might be known—हिंदी में size का भाव लाना यहाँ आवश्यक नहीं क्योंकि बुद्धिमत्ता के आकार का कोई अर्थ नहीं निकलता (जैसे piece of advice में piece का भाव अनुवाद में नहीं लाया जाता)। अतः यहाँ उपयुक्त अनुवाद होगा—'मनुष्य की बुद्धिमत्ता का अनुमान उसकी विनोदवृत्ति से करना चाहिए।'

10 'his own was never contemptible'—इसका शब्दशः अनुवाद कठिन है। हिंदी मुहावरे के अनुरूप इस यों कर सकते हैं—'वे स्वयं इसमें कोरे नहीं हैं।'

अनुवाद

उनका मन इतना संवेदनशील था कि उसके भाव को उनकी अपनी भाषा ही व्यक्त कर सकती थी—अन्य कोई नहीं। उनकी भाषा इतनी गुरु गंभीर थी कि यदि उसमें व्यक्त भावनाएं उतनी उदात्त और उतनी पुष्ट न होतीं तो वे उस भाषा में ही उलझकर रह जाती, अलंकृत नहीं होतीं। परन्तु मि० जानसन चमत्कारपूर्ण लेखन के धनी नहीं थे। उन पर बड़े-बड़े शब्दों के प्रयोग का आरोप तो लगाया जाता है, परन्तु ऐसा वे तभी करते थे जब छोटे छोटे शब्द उनके अभिप्राय को उतना स्पष्ट व्यक्त नहीं कर पाते थे, या जब कम अलंकृत भाषा के आवरण में उनके चिंतन के वैभव पर आंच आ सकती थी। वे कहा करते थे कि मनुष्य की बुद्धिमत्ता का अनुमान उसकी विनोदवृत्ति से लगाना चाहिए और वे स्वयं इसमें कोरे नहीं थे।

Exercise VIII

It is sometimes said that obscenity does not reside so much in the thing said as in the manner in which it is said[1] But as in the case of blasphemy this interpretation is not borne out by an examination of the works that have been subjected to censorship[2] Thus the condemnation not so long ago of such plays as Waste, or Ghosts, or Young Woodley,[3] or such books as The Well of Loneliness[3] was not based on indecency in the language used but on the supposed social dangers of any public discussion of the ideas dealt with[4] In any case, the standards of decency vary greatly[5] The advocacy of birth control was regarded as indecent a generation ago,[6] it is so no longer As far as the stage is concerned, the official attitude[7] tries to follow changes in public opinion but, as Bernard Shaw pointed out keeps always at a respectful distance,[8] say twenty years, behind it On the whole I cannot but conclude[9] that since indecency and obscenity are vague and obscure[10] notions they are not matters which can be effectively handled by the blunt machinery of the law

संकेत

1 'in the thing said as in the manner in which it is said'— इसका सीधा सीधा अनुवाद होगा— कही गई बात में नहीं, बल्कि कहने के ढंग में। परन्तु पूरे उद्धरण को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक साहित्यिक और कलात्मक कृतियों के संदर्भ में अपनी बात कह रहा है। अतः प्रस्तुत अंश का उपयुक्त अनुवाद होगा— किसी कृति के कथ्य में नहीं बल्कि उसके प्रस्तुतीकरण की शैली में।

2 'have been subjected to censorship' में censorship का सही सही हिन्दी समानक मिलना मुश्किल है। बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह— मानविकी का अनुसरण करें तो इस अंश का अनुवाद होगा— जिन्हें सेंसर (या अवष्टम्भन/अवरोधन/अभिवचन/निंदा) का विषय बनाया गया है। इससे कोई अर्थ नहीं निकलेगा। प्रस्तुत संदर्भ में इसका अभिप्राय ग्रहण करते हुए यह अनुवाद उपयुक्त होगा— जिन्हें आपत्तिजनक मानकर प्रकाशित नहीं होने दिया गया।

3 ये अंग्रेजी की विभिन्न कृतियों के शीर्षक हैं। हिंदी अनुवाद में इनका लिप्यंतरण देना ही उपयुक्त होगा।

4 on the supposed social dangers of any public discussion of the ideas dealt,—हिंदी वाक्य रचना की जटिलता से बचाने के लिए इस अंश की व्याख्या एक स्वतंत्र उपवाक्य के रूप में कर देनी चाहिए—'यह सोचा गया था कि उनमें प्रस्तुत विचारों की सार्वजनिक चर्चा से सामाजिक खतरे पैदा हो सकते हैं।'

5 vary greatly को हिंदी मुहावरे के अनुरूप इस तरह कर सकते हैं '(शालीनता के मानदण्ड) कहीं कुछ होते हैं, कहीं कुछ।

6 a generation ago को हिंदी की शैली में पिछली पीढ़ी के समय कर सकते हैं।

7 यहां official attitude का अर्थ सरकारी रवैया या सरकार का दृष्टिकोण है। इसे शासन का दृष्टिकोण लिख सकते हैं।

8 respectful distance का सही हिंदी समानक मिलना मुश्किल है। यहाँ इसे यों लिख सकते हैं—बहुत पीछे रह जाता है।

9 I cannot but conclude को हिंदी की प्रकृति के अनुसार यों करना चाहिए—मैं एक ही निष्कर्ष पर पहुंचता हूं।

10 vague and obscure एक ही अर्थ के द्योतक हैं। यहाँ इन्हें गूढ़ और क्लिष्ट लिखने से पूरा भाव आ जाएगा।

अनुवाद

कभी कभी ऐसा कहा जाता है कि अश्लीलता किसी कृति के कथ्य में नहीं रहती बल्कि उसके प्रस्तुतीकरण की शैली में निहित होती है। परंतु ईश्वर निन्दा के मामले की तरह प्रस्तुत संदर्भ में भी यह धारणा उन कृतियों की जांच करने पर सही सिद्ध नहीं होती जिन्हें आपत्तिजनक मानकर प्रकाशित नहीं होने दिया गया। 'घोस्ट्स' या 'वास्ट्स' या 'मिस यूडली' जैसे नाटकों या 'द वेल आफ लोनलीनेस' जैसी पुस्तकों की निन्दा का आधार यह नहीं था कि इनमें अशोभन भाषा का प्रयोग किया गया है बल्कि यह सोचा गया था कि उनमें प्रस्तुत किए गए विचारों की सार्वजनिक चर्चा से सामाजिक खतरे पैदा हो सकते हैं। कुछ भी हो शालीनता के मानदण्ड कहीं कुछ होते हैं, कहीं कुछ। पिछली पीढ़ी के समय संतति निरोध का प्रचार अशोभन समझा जाता था परंतु अब ऐसा नहीं समझा जाता। जहां तक रंगमंच का सम्बन्ध है इसके प्रति शासन का दृष्टिकोण बदलते हुए जनमत के पीछे पीछे चलने की कोशिश तो करता है परंतु जैसा कि बर्नार्ड शा ने कहा है वह उससे बहुत पीछे रह

जाता है—जस कि बीस साल पीछे। अब मिलाकर मैं एक ही निष्कर्ष पर पहुच पाता हूँ कि अशोभनता और अश्लीलता चूंकि गूढ और क्लिष्ट धारणाएँ हैं इसलिए कानून का कुंठित तन्त्र इन्हें भली भांति नहीं सँभाल सकता।

Exercise IX

Rabindranath worked for one supreme cause[1], the union[2] of all sections of humanity[3] in sympathy and understanding,[2] in truth and love His[4] Visva Bharati is an international university where the whole world has become a single nest In this institution[5] he tried to impart the background[6] of internationalism and help the students to realize 'the true character of our inter linked humanity and deeper unities of our civilization in the West and the East [7] Thomas Hardy said 'The exchange in international thought[8] is the only possible solution of the world [9] Our ancient seers[10] never allowed their vision of humanity to be darkened[11] by narrow considerations of race and religion The eternal personality of man can spring into being only from the harmony of all peoples [12] Yet in his own life time Rabindranath saw the world wade through seas of blood oceans of tears bitterer often than death due to man s blindness and folly Whenever civilization decays and dies[13] it is due to causes which produce insensitivity to human values It goes down[14] when our souls are deadened by greed and materialism

संकेत

1 supreme cause का हिन्दी समानक मिलना मुश्किल है। प्रस्तुत सदर्भ में 'महान उद्देश्य' लिखना उपयुक्त होगा।

2 'the union in sympathy and understanding' को हिंदी मुहावरे के अनुसार 'महानुभूति और सम्भावना के सूत्र में बाँधने के लिए' लिखने से अनुवाद में जान आ जाएगा।

3 humanity का सदर्भ के अनुसार 'मानवता' या 'मानव जाति' लिखना चाहिए। यहाँ मानवजाति उपयुक्त होगा।

4 His एकवचन है। परन्तु रवीन्द्रनाथ सम्माननीय व्यक्ति थे। अतः यहाँ अनुवाद में उनका लिखना चाहिए।

5 institution के लिए हिन्दी में 'संस्था' शब्द प्रयुक्त है। institute के लिए 'संस्थान' लिखा जाता है। इस भेद को ध्यान में रखना चाहिए।

6 impart the background के लिए 'पृष्ठभूमि प्रदान करना' नहीं लिख सकते। इसके लिए 'प्रारम्भिक शिक्षा देना' सही बैठेगा।

7 इस अंश को हिन्दी वाक्य रचना में खपाना कठिन है। अतः हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार इसकी व्याख्या कर देने से वाक्य सुलभ जाएगा।

8 exchange in international thought के लिए 'अन्तर्राष्ट्रीय विचार का विनिमय' की जगह 'अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार विनिमय' लिखना उपयुक्त होगा।

9 'solution of the world' के शब्दानुवाद से बात नहीं बनेगी। इसकी व्याख्या करके 'विश्व की समस्याओं का समाधान' लिखना चाहिए।

10 seers को द्रष्टा कर सकते हैं। प्रस्तुत संदर्भ में 'ऋषि' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

11 'darken' को हिन्दी मुहावरे के अनुसार 'काली छाया पड़ने देना' लिखकर अनुवाद में चमत्कार पैदा कर सकते हैं।

12 इस अंश को हिन्दी मुहावरे की शैली में यों लिख सकते हैं — समस्त जातियों के मेलजोल की भूमि पर ही अंकुरित हो सकती है।

13 decays and dies में दोनों शब्द एक ही भाव का व्यक्त करते हैं। हिन्दी में इसे यों लिख सकते हैं — ह्रास और विनाश होता है।

14 goes down का हिन्दी मुहावरे के अनुरूप 'रसातल की ओर चले जाना' लिख सकते हैं।

अनुवाद

रवीन्द्रनाथ ने एक महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य किया—मानव जाति के सभी वर्गों को सहानुभूति, सद्भावना, सत्य और प्रेम के सूत्र में बाँधने के लिए। उनका विश्वभारती एक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है जहाँ सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ में परिणत हो गया है। इस संस्था में उन्होंने विद्यार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीयता की प्रारम्भिक शिक्षा देने और उन्हें यह समझाने की कोशिश की कि 'हमारी परस्पर सम्बद्ध मानव जाति का सच्चा स्वरूप क्या है और हमारी सभ्यता के वे गहन सूत्र कौन से हैं जो पूर्व और पश्चिम की एकता के सूत्र में बाँधते हैं।' टामस हार्डी ने कहा था — 'अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार विनिमय ही विश्व की समस्याओं का एकमात्र समाधान है।' हमारे प्राचीन

ऋषियों ने अपनी मानवता की कल्पना पर जाति या धर्म के संकीर्ण विचारों की काली छाया नहीं पड़ने दी। मनुष्य का शाश्वत व्यक्तित्व समस्त राष्ट्रों के मेल जोल की भूमि पर ही अंकुरित हो सकता है। परन्तु रवीन्द्रनाथ ने अपने जीवन-काल में ही देखा कि मनुष्य के अज्ञान और मूर्खता के कारण दुनिया में खून की नदियां बह रही थीं और संसार उन आंसुओं के अथाह सागर में डूबा जा रहा था जो मृत्यु से भी अधिक कटु थे। जब कभी सभ्यता का ह्रास और विनाश होता है उसका कारण मानव मूल्यों के प्रति उपेक्षा का भाव होता है। जब लोभ और लिप्सा के कारण हमारी आत्मा निर्जीव हो जाती है तब सभ्यता रसातल की ओर चली जाती है।

Exercise X

Then we come to the Marginal Theory of Value The Labour Theory of Value explains or at least helps us to understand [1] the laws of motion of capitalism You will recollect[2] that the Labour Theory of Value enabled us to understand the law of exploitation the law of primitive accumulation[3] of capital as also[4] the law of organic composition of capital—the laws[5] which ultimately[6] provide the key to the contradictions that exist within the bosom[7] of the capitalist system and that must ultimately encompass its doom [8] But the Labour Theory of Value breaks down completely when you come to handle the day to-day problems[9] of economic life The problems of the market place cannot be solved by the Labour Theory of Value If your father finds you somewhat dull and, to help you to get through your examination, decides to engage a tutor, the Labour Theory of Value will not enable him to decide the remuneration to be paid to the tutor The Labour Theory of Value therefore has a sociological significance It has not the immediate, practical or the market place significance.[10]

संकेत

1 or at least helps us to understand—इस अंश को वाक्य के अन्त में रखना चाहिए ताकि इस को मुख्य क्रिया के साथ आकर बाद में वैकल्पिक क्रिया दी जाए। अन्यथा वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुरूप नहीं बनेगा और उसका कोई अर्थ नहीं निकलेगा।

2 'you will recollect' को हिन्दी की शैली में 'आपको याद होगा' या *तुम्हें याद होगा* करना चाहिए।

3 primitive accumulation पारिभाषिक शब्द है। वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में इसका समानक 'आद्य संचय' दिया है जिसे यहाँ अपना सकते हैं।

4 as also को हिन्दी की प्रकृति के अनुसार तथा कर देना चाहिए।

5 यहाँ से नया वाक्य प्रारम्भ कर सकते हैं।

6 ultimately का हिन्दी की शैली में 'अन्ततोगत्वा' लिख सकते हैं।

7 within the bosom लाक्षणिक प्रयोग है। इसका शाब्दिक अनुवाद निरर्थक होगा। इसके भाव को ग्रहण करते हुए (पूंजीवाद) के भीतर (विद्यमान होते हैं) लिख सकते हैं।

8 encompass its doom—यह एक विशिष्ट प्रयोग है। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार इसका अनुवाद यों करना चाहिए—'(जो इसके) विनाश को चरम परिणति तक पहुंचा देते हैं। इसमें ultimately का भाव भी आ जाता है अतः उसके लिए कोई और शब्द रखने की ज़रूरत नहीं।

9 day to day problems को हिन्दी की प्रकृति के अनुसार नित्य प्रति की समस्याएं लिख सकते हैं।

10 immediate practical or the market place significance में एक विशेष्य significance के साथ तीन विशेषण आए हैं। इनमें पहले दो तो हिन्दी में आसानी से बदले जा सकते हैं— तात्कालिक व्यावहारिक (महत्त्व), परन्तु तीसरे का कोई ऐसा समानक मिलना कठिन है। अतः हिन्दी में वाक्य ऐसा बनाना होगा जिसमें दो तरह के विशेषणों को अलग अलग खपाया जा सके। इस तरह लिखना उपयुक्त होगा—'(उसका) न तो कोई तात्कालिक या व्यावहारिक महत्त्व है न बाजार की दृष्टि से।

अनुवाद

अब हम मूल्य के सीमान्त सिद्धान्त की ओर आते हैं। मूल्य का श्रम सिद्धान्त पूंजीवाद की गति के नियमों की व्याख्या करता है या कम से कम उन्हें समझने में सहायता देता है। तुम्हें याद होगा कि मूल्य के श्रम सिद्धान्त से हमें शोषण के नियम, पूंजी के आद्य संचय के नियम तथा पूंजी की सावयव रचना के नियम को समझने में सहायता मिली थी। इन नियमों में अन्ततोगत्वा हमें उन अन्तर्विरोधों की कुंजी मिल जाती है जो पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर विद्यमान होते हैं और जो उसके विनाश को चरम परिणति तक पहुंचा देते हैं। परन्तु जब हम आर्थिक जीवन की नित्य प्रति की समस्याओं को हाथ में लेते

हैं तो मूल्य का श्रम सिद्धान्त छिन्न भिन्न हो जाता है। बाजार की समस्याओं को मूल्य के श्रम सिद्धान्त की सहायता से नहीं सुलझाया जा सकता। यदि तुम्हारा पिता तुम्हें तनिक मन्दबुद्धि समझता है और परीक्षा उत्तीर्ण करने में तुम्हारी सहायता के उद्देश्य से तुम्हारे लिए शिक्षक लगाने का फैसला करता है तो मूल्य का श्रम सिद्धान्त उसे यह निर्णय करने में सहायता नहीं देगा कि उस शिक्षक को कितना पारिश्रमिक दिया जाए। अतः मूल्य के श्रम सिद्धान्त का महत्त्व समाजशास्त्रीय दृष्टि से है। उसका न तो कोई तात्कालिक या व्यावहारिक महत्त्व है, न बाजार की दृष्टि से।

Exercise XI

A theory then generally held was that elephantiasis,[1] a tropical disease like malaria, was caused by the night air of marshes Manson began his investigations and came to the conclusion that the presence in human blood of a parasite[3] called the filaria[4] worm probably had some connexion with the disease But the discovery only[5] raised a greater[6] problem How did the filaria worm get into the blood ? The worm[7] could neither walk nor fly A possibility was that it was sucked up by something that fed upon human blood then released again into the bodies[8] of previously uninfected persons [9]

The evidence[10] pointed to the mosquito, which in biting a person infected with the germs of elephantiasis and then passing on to uninfected persons might well spread the disease To test this theory Manson examined the blood of some of his helpers at the hospital Finding one who was heavily infected he induced him to sleep in a room containing mosquitoes and to let them bite him [11]

The next morning Manson collected the insects [12] gorged with the blood of the infected body He dissected[13] them and examined them under a microscope They were all infected with live filaria worms Thus was it discovered that the mosquito was the carrier of the germ which caused elephantiasis

संकेत

1 यह पारिभाषिक शब्द है। वहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—विज्ञान के अनुसार इसके लिए "श्लीपद" का प्रयोग कर सकते हैं। परन्तु अकेले श्लीपद के प्रयोग से सन्दर्भ स्पष्ट नहीं होता। इसलिए 'श्लीपद रोग' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

2 हिन्दी में इस अंश का अनुवाद वाक्य के बीच में रखने से वाक्य जटिल हो जाएगा। इसे पृथक् वाक्य में रखकर अनुवाद की भाषा सहज हो जाती है। Tropical disease को उष्णकटिबंधीय रोग लिखने पर भाषा की स्वाभाविकता नष्ट होती है। अतः इस अंश का सहज अनुवाद होगा— यह मलेरिया जैसा रोग था जो उष्ण प्रदेश में पाया जाता था।

3,4 ये दोनों पारिभाषिक शब्द हैं। उपयुक्त शब्दावली के अनुसार इनके पर्याय क्रमशः 'परजीवी' और 'फाइलेरिया' हैं।

5 यहाँ only का अनुवाद 'केवल' नहीं होगा। उपयुक्त अनुवाद होगा— 'इसमें तो और भी बड़ी समस्या पैदा हो गई।

6 greater problem को 'महत्तर समस्या' करने से अनुवाद कृत्रिम हो जाएगा। 'और भी बड़ी समस्या' शब्दावली अधिक उपयुक्त है।

7 The worm को 'यह कृमि' लिखने पर अनुवाद अधिक स्पष्ट होगा।

8 'into the bodies' को 'शरीरों में' नहीं लिखेंगे। हिन्दी में 'शरीर' का प्रयोग एकवचन में ही करना चाहिए।

9 इस लम्बे विशेषण का उपयुक्त हिन्दी समानार्थ मिलना कठिन है। उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत infected के लिए 'उपसृष्ट/संक्रान्त/संक्रमित' शब्द दिए हैं। परन्तु uninfected के लिए 'संक्रमण रहित' लिखना उपयुक्त होगा।

10 The evidence में the का अनुवाद कठिन है। इसे 'प्रस्तुत साक्ष्य' लिखना उपयुक्त होगा।

11 इन वाक्यांशों का शब्दानुवाद बहुत उलझा हुआ होगा। अतः इन्हें सुलझा कर यह अनुवाद कर सकते हैं—'उसने उन मच्छरों वाले कमरे में सोने के लिए तैयार किया ताकि उसे मच्छर काट सकें।

12 प्रस्तुत अंश में 'worm', 'insect' और germ तीन मिलते जुलते शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इनमें स्पष्ट भेद करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार इनके लिए क्रमशः कृमि, कीट, और रोगाणु शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

13 पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार विच्छेदन किया।

अनुवाद

उन दिनों साधारणतः यह सिद्धान्त स्वीकार किया जाता था कि श्लीपद रोग दलदलों की दूषित वायु के कारण पैदा होता है। यह मलेरिया-जैसा रोग था जो उष्ण प्रदेश में पाया जाता था। मैंसन ने अपनी छान-बीन शुरू कर दी और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मानव रक्त में फाइलेरिया कृमि नामक परजीवी की उपस्थिति और इस रोग में कोई सम्बन्ध हो सकता है। परन्तु इस खोज में तो और भी बड़ी समस्या पैदा हो गई। फाइलेरिया कृमि रक्त में प्रविष्ट कैसे होता है? यह कृमि न तो चल सकता है, न उड़ सकता है। एक संभावना यह थी कि इस कोई ऐसी चीज़ चूस लेती है जो मनुष्य के रक्त पर निर्वाह करती है और फिर उसे संक्रमण रहित व्यक्तियों के शरीर में छोड़ देती है। प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर मच्छर की ओर ध्यान जाता था। वह श्लीपद रोगाणुओं से संक्रमित व्यक्ति को काटकर ये रोगाणु संक्रमण रहित व्यक्तियों के शरीर में पहुँचा सकता था और इस तरह रोग को फैला सकता था। इस सिद्धान्त के परीक्षण के लिए मैंसन ने अस्पताल में अपने कुछ सहायकों के रक्त की जाँच की। उनमें से जो अत्यधिक संक्रमण ग्रस्त था, उसे उसने मच्छरों वाले कमरे में सोने के लिए तैयार किया ताकि उसे मच्छर काट सकें।

अगली सुबह मैंसन ने उन कीटों को इकट्ठा किया जो संक्रमण ग्रस्त व्यक्ति का रक्त जी भरकर चूस चुके थे। उसने उनका विच्छेदन किया और सूक्ष्मदर्शी से उनकी जाँच की। वे सब जीवित फाइलेरिया कृमियों से संक्रमित थे। इससे यह खोज हुई कि श्लीपद जिस रोगाणु के कारण पैदा होता है, उसका वाहक मच्छर है।

अतिरिक्त अभ्यासमाला

(स्वयं अनुवाद करने के लिए)

Exercise 1

Fortunately for me I was brought up in a family where literature, music and art had become instinctive. My brothers and cousins[1] lived in the freedom of ideas[2] and most of them had natural artistic powers. Nourished in these

surroundings, I began to think early and to dream and to put my thoughts into expression In religion and social ideals our family was free from all convention being ostracized by society owing to our secession from orthodox beliefs and customs This made us fearless in our freedom of mind and we tried **experiments**[3] in all departments of life This was the education I had in my early days, freedom and joy in the exercise of my mental and artistic faculties And because this made my mind fully alive to grow in its **natural environment of nutrition,**[4] therefore **the grinding of the school system**[5] became so extremely intolerable to me

संकेत

1 brothers and cousins को 'भाई बन्धु' लिख सकते हैं।
2 यहाँ 'वातावरण' शब्द जोड़ना पड़ेगा—'वैचारिक स्वतन्त्रता के वातावरण में रहते थे।
3 यहाँ experiments के लिए 'नए-नए प्रयोग' लिखना उपयुक्त होगा।
4 यहाँ क्रम बदलकर 'नैसर्गिक पोषण का वातावरण' लिखना होगा।
5 इस अंश की व्याख्या कर देने से अनुवाद में जान आ जाएगी— स्कूली जीवन की चक्की में पिसना (मेरे लिए असह्य हो गया था)।

Exercise II

I did not see Lawrence while all this was going on and indeed when so many things were crashing in the Post War world the treatment of the Arabs did not seem exceptional But when from time to time my mind turned to the subject I realized how intense his emotions must be He simply did not know what to do He turned this way and that in desperation, and in disgust of life In his published writings he has declared **that all personal ambition had died within him before he entered Damascus in triumph in the closing phase of the War**[2] But I am sure that the **ordeal**[3] of watching the helplessness of his Arab friends to whom he had pledged his word, and

as he conceived it the word of Britain, maltreated in this manner, must have been the main cause which decided his eventual renunciation of all power in great affairs His highly wrought nature[4] had been subjected to the most extraordinary strains during that War, but then his spirit had sustained it Now it was the spirit that was injured

संकेत

1 Damascus का हिन्दी रूपान्तर 'दमिश्क' होगा । पूरे अंश को आलंकारिक भाषा में इस तरह व्यक्त कर सकते हैं—'जब उसने विजय-दुंदुभि बजाते हुए दमिश्क में प्रवेश किया उससे पहले ही उसकी भीतर की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा दम तोड़ चुकी थी ।'

2 युद्ध के अंतिम दौर में ।

3 यन्त्रणा ।

4 अत्यंत परिश्रमी स्वभाव ।

Exercise III

It is said that Shah Jahan, in consultation with his experts saw drawings of all the chief buildings of the world—a statement not to be taken too literally[1]—and that when the design was settled a model of it was mde in wood Veroneo appears to have been present at these consultations and he declared afterwards that he had finished the design which met with the Padshah's[2] approval The silence of the detailed native accounts on this point and of all contemporary writers besides Father Manrique would have little significance were it not for the silence of the Taj itself It must be inconceivable to any art critic acquainted with the history of the Indian *building* craft that Shah Jahan if he had so much faith in a European as an architect, would only have used him to instruct his Asiatic master builders in designing a monument essentially Eastern in its whole conception or that Veroneo himself would have submitted a design of this character and

left no mark of his European mentality and craft experience upon the building itself

संकेत

1 हालांकि इस कथन का आशय तो स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए।
2 फारसी शब्द बारगाह का लिप्यन्तरण। हिंदी में बादशाह अधिक प्रचलित है। अतः यही रूपान्तर यहाँ उपयुक्त होगा।

Exercise IV

India is a very old country with a great past But she is a new country[1] also with new urges and desires Since August 1947 she has been in a position to pursue a foreign policy of her own She was limited by the realities of the situation[2] which we could not ignore or overcome But even so she could not forget the lesson of her great leader She has tried to adapt however imperfectly[3] theory to reality in so far as she could In the family of nations she was a newcomer and could not influence them greatly to begin with But she had a certain advantage She had great potential resources that could no doubt increase her power and influence A greater advantage lay in the fact that she was not fettered by the past[4] by old enemies or old ties by historic claims or traditional rivalries Even against her former rulers there was no bitterness left[5] Thus India came into the family of nations with no prejudices or enmities ready to welcome and be welcomed Inevitably she had to consider her foreign policy in terms of enlightened self interest but at the same time she brought to it a touch of her idealism Thus she has tried to combine idealism with national interest

संकेत

1 नवागन्तुक राष्ट्र।
2 यथार्थ स्थिति की सीमाओं में बँधा था।

3 'चाहे उसका यह प्रयत्न कितना ही अधूरा क्या न रह गया हो' (यह अश वाक्य के अन्त मे आना चाहिए)।
4 'वह अतीत की बेडियो से नही जकडा था।
5 'उसके मन मे कोई कटुता नही रह गई थी।'

Exercise V

History is and must always be no more than an account of beginnings We can venture to prophesy that the next chapters to be written will tell though perhaps with long inter ludes of setback and disaster of the final achievement of world wide political and social unity But when that is attained it will mean no resting stage,[1] nor even a breathing stage,[2] before the development of a new struggle and of new and vaster efforts Men will unify[3] only to intensify the search for knowledge and power and live as ever for new occasions Animal and vegetable life,[4] the obscure processes of psychology, the intimate structure of matter and the interior of our earth will yield their secrets and endow their conqueror[5] Life begins perpetually Gathered together at last under the leadership of man the student teacher of the universe, unified, disci plined, armed with the secret powers of the atom and with knowledge as yet beyond dreaming life for every thing to be born afresh, for ever young and eager will presently stand upon this earth as upon a footstool, and stretch out its realm amidst the stars

सकेत

1 इसका अग्र गति मे विराम नही होगा।
2 यह विश्राम की अवस्था भी नही होगी।
3 एकता के सूत्र म (केवल इसलिए) बधेंगे।
4 जीव-जन्तु और वनस्पति-जगत।
5 अपने विजेता को मालामाल कर देंगे।

Exercise VI

Toynbee speaks of three different methods of viewing and presenting the objects of our thought, and among them, the phenomena of human life (1) the ascertainment and recording of facts', (2) the use of general laws to elucidate the facts ascertained through a comparative study of them (3) the artistic re-creation of the facts in the form of fiction' In English the word 'fiction" has two meanings—something invented or imagined and a literary work with imaginary characters We have seen how Toynbee understands the first two methods so that the third is by no means unexpected, it is more in the nature of an inevitable complement

Exercise VII

In the highest sense, and from the point of view of truth, religion is an intensely individual issue Every man and every woman must find the answer in his or her own heart But there is a national question also And a national question may be deemed to be always a question of high expediency, though not a question of conviction or conscience We must hold together And we connot hold together only on the strength of police regulations An internal regulator of conduct is absolutely necessary Will men and women be good and wise without the aid of religion i e without an attempt in their lives to practise the presence of God ? Have we become self sufficient by reason of scientific knowledge and become capable of maintaining character without the sanctions and discipline of some religion or another ?

Exercise VIII

The class character of education is most marked in the survival and growth of the Public Schools Their history and the character they assumed in the nineteenth century have

often been described and need no further discussion here The classes thus welded together were by the same process divided and continue to be divided from the rest of the nation brought up under a different system In recent decades the public schools have shown great vitality and resilience There is no doubt about their efficiency, but there is increasing resentment against the part played by wealth in their mode of recruitment and their tendency to perpetuate and even sharpen existing class divisions They still hold a key position in the selection of those who fill positions of influence over a very wide field, and this is the more striking as between them the independent schools take charge of only about 7 per cent of boys in secondary schools and less than 1 per cent if twenty of the more prominent among those represented at the Headmasters Conference are considered

Exercise IX

I would instance first, the growing tendency to Specialism which has become a marked feature of University work, both here and in England, during the past fifty or sixty years It is much more common than it used to be for a student to give exclusive, or almost exclusive devotion to one subject, or group of subjects and to be content as regards the rest with the bare minimum of academic requirement The change is, of course largely due to the greater thoroughness with which each subject is taught and learnt, to the enoranous extension in the area of the fields of research, which are still called by the old names—classics mathematics, science philosophy to the higher standard both of information and of exactness, which has naturally and legitmately been set up All this is to the good in so far as it tends to promote erudition and accuracy at the expense of that which is merely superficial and small But the advantage is purchased at an excessive price if it is gained by the scarifice of width of range and

catholicity of interest Pedentry is on the whole, more useful and less offensive than Specialism but a University which is content to perform the office of a factory of specialists is losing sight of some of its highest functions

Exercise X

What then, is punishment, and how far can it be ethically justified? For developed legal systems punishment may be defined as the authoritative infliction of pain or other deprivation on a person for (or because of) an offence which he has committed. Punishment thus inflicted is a deliberate act based on an impartial examination of the relevant facts by a competent authority which issued a verdict and has the means of enforcing it Thus 'nature does not punish and the painful consequences, physical or moral that follow naturally' from a wrong act do not constitute punishment Legal and moral offences do not coincide completely, but in general serious crimes are acts which are condemned by the moral sense of the community and from which every man knows or is presumed to know he ought to refrain Furthermore the punishment is inflicted for an offence and this in advanced legal systems is taken as implying that the offence was committed with intent and not involuntarily Intent generally is taken to mean a specific intention to do a particular act prohibited by law Sometimes however though this is disputed the notion of intent has been extended to cover consequences not intended as such but likely to follow from the act In other cases again lack of direct intention does not exempt from liability

Exercise XI

This image in the mind s eye of the artist is in an almost literal sense, a link between his temperament and his as yet unpainted picture However vague the mental image may be

it isolates, in visual terms, the essence of what he is going to communicate If he were a composer, the same sort of thing would happen in his mind s ear That image ■ the artist's vision, the intangible equivalent of his style, the halfway house between his temperament and the final work of art It is the flavour of that vision that determines the flavour of his style For example, Raphael s vision of a Last Supper would be remarkably similar in flavour to his vision of a kitchen table, and Raphael's vision of, say, an artist at work would bear no resemblance at all to the same subject as envisaged by Picasso

Exercise XII

We often speak of the imagination as though it were a brilliant faculty of lying, on the contrary, it is a faculty by which not only do we see and hear things that the eye cannot see or the ear hear but which enables the eye to see and the ear to hear, things that they did not see or hear before To scorn the imagination is to be a blind man delib rately refusing the miracle of sight It is imagination that cleanses the scales from our eyes and awakens our senses to the real things that surround us We cannot fal in llove without imagination or become good citizens conscious of our citizen ship or enjoy the song of a robin or the beauty of a rose Friendship patriotism love of father, mother and children, love of nature—none of these can exist without imagination Where there is no imagination there ■ cruelty selfishness, death We can see the results of the lack of imagination in the cruelty with which nation treats nation and class treats class When Christ announced that all men were His brothers He taught us to look on other people imaginatively and not as though they were ciphers in a statistical abstract To treat a child without imagination is to treat it without love

Exercise XIII

Every language is also a special way of looking at the world and interpreting experience Concealed in the structure of each different language are a whole set of unconscious assumptions about the world and life in it The anthropological linguist has come to realize that the general ideas one has about what happens in the world outside oneself are not altogether 'given by external events Rather, up to a point one sees and hears what the grammatical system of one's language has made one sensitive to, has trained one to look for in experience This bias is the more insidious because every one is so unconscious of his native language as a system To one brought up to speak a certain language it is part of very nature of things remaining always in the class of background phenomena It is as natural that experience should be organized and interpreted in these language defined classes as it is that the seasons change In fact the naive view is that anyone who thinks in any other way is unnatural or stupid or even vicious—and most certainly illogical

Exercise XIV

If it were possible for our ancestors to return to earth seeing all the things which have come to pass in the last fifty years or so there would of course be many things which would amaze them Indeed almost everything would appear to the people of fifty or sixty years ago as completely miraculous But the most surprising thing of all and it is something which many of us nowadays tend to take completely for granted—is the fact that men can fly The businessman who has to visit his New York office from London now takes it for granted that he can book a seat in a trans Atlantic aeroplane and go off to the U S A doing his work there, and getting back to his London office again in less time than a one way sea passage even in a modern liner will occupy

Exercise XV

Then just about four hundred years ago, Copernicus a Polish ecclesiastic wrote a book of tremendous importance He pointed out that the complicated motions of the sun and the planets across the sky could all be very simply explained by supposing that the sun stood still, while the earth and the planets revolved around it While these ideas were still being discussed Galileo, a professor in the University of Padua, made a small telescope with his own hands and convinced himself—and also showed to all the world—that things were as Copernicus said the sun did not revolve round the earth, but the earth also the planets revolved around the sun In this way the earth had to abandon its proud claim to be the centre of the universe—to become an ordinary planet, a mere fragment of matter revolving round a much larger sun And three centuries of astronomical study have reduced its importance still further If we look out on a clear moonless night, we shall see the Milky Way stretching across the sky looking like a faint pearly ribbon We know now that the Milky Way is a vast belt of distant stars each star a sun more or less like our own Most of its stars are too far away to be counted even in a large telescope but—strange though it may seem—it is possible to weigh the lot We can do this by measuring the gravitational force with which they attract our sun

4

विशिष्ट अभिव्यक्तियो के अनुवाद

Famous city, famous soldier

अंग्रेजी म 'famous' विशेषण का प्रयोग city और soldier दोनो के साथ चलता है। हिन्दी म हम प्रसिद्ध नगर तो लिख सकते हैं, परन्तु प्रसिद्ध सनिक उतना उपयुक्त नही। 'Famous soldier का अनुवाद यशस्वी सनिक' होना चाहिए। परन्तु यशस्वी शब्द नगर के साथ नही आ सकता। यदि दोनो जगह एक ही विशेषण का प्रयोग करना हो तो क्रमश विख्यात नगर और विख्यात सनिक लिख सकते हैं।

Peaceful person peaceful solution

अंग्रेजी मे peaceful विशेषण person और solution दोनो के साथ आ सकता है। परन्तु हिन्दी अनुवाद म दोनो जगह एक ही विशेषण प्रयुक्त नही होगा। Peaceful person को हम शान्तिप्रिय व्यक्ति लिखेंगे 'Peaceful *solution'* को शान्तिपूर्ण समाधान।' इसी तरह just man' और just decision को क्रमश न्यायप्रिय/न्यायपरायण/न्यायनिष्ठ व्यक्ति' और "न्याय सम्मत/न्यायसगत निणय लिखना होगा।

Honorary secretary, Honorary degree

Honorary का अथ है ऐसी वस्तु या काय जिसे स्वीकार करने से सम्मान या गौरव बढे। इसका अनुवाद सन्दभ का ध्यान म रखकर करना होगा। Honorary Secretary के लिए अवैतनिक सचिव प्रयुक्त होता है अर्थात ऐसा सचिव जो वेतन नही लेता। इसम honorary शब्द का पूरा अथ नही आता परन्तु प्रचलित होने के कारण इसे अपना सकते हैं। दूसरी ओर, honorary

degree के लिए 'माननीय' उपाधि का प्रयोग करते हैं जो कि उपयुक्त है। 'सचिव' के साथ 'माननीय' विशेषण का प्रयोग नहीं कर सकते—यह वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है, व्यक्तियों के लिए नहीं। Honorary Secretary के अनुवाद में एक विकल्प 'मानसेवी सचिव' है, परन्तु वह सुनने में उतना गरिमा पूर्ण नहीं लगता।

Confidential letter, Confidential secretary

Confidential का अर्थ है विश्वस्त या विश्वासपात्र। अंग्रेजी में यह विशेषण वस्तु के साथ भी प्रयुक्त होता है, व्यक्ति के साथ भी। परन्तु हिन्दी में इनके लिए अलग अलग शब्द रखने होंगे। Confidential letter ऐसा पत्र है जिसे केवल विश्वस्त व्यक्ति को दिखा सकते हैं अन्यथा उसे छिपाकर रखा जाता है। अतः इसे 'गोपनीय पत्र' कहना उपयुक्त होगा। Confidential Secretary ऐसा सचिव है जिस पर पूरा-पूरा विश्वास किया जा सके, अर्थात् जो भीतर की बात बाहर न ले जाए। इसके लिए 'अंतरंग सचिव' शब्द सम्मत है।

Beware of confidence tricksters

डाकघरों इत्यादि में इस चेतावनी का यह अनुवाद देखने को मिलता है—'अंतरंग चालबाजों से सावधान।' अंतरंग ऐसे व्यक्ति को कहते जिसके साथ बहुत निकट का सम्बन्ध या मेलजोल हो। अतः अंतरंग मित्र, अंतरंग सचिव तो ठीक है परन्तु अंतरंग चालबाज क्या हुए? चूंकि Confidential secretary के लिए 'अंतरंग सचिव' शब्द सम्मत है, इसलिए किसी ने आँख मींचकर Confidence trickster के लिए 'अंतरंग चालबाज' रख दिया। केवल 'चालबाज' से ही यह भाव व्यक्त हो जाता है। अतः सही अनुवाद होगा—'चालबाजों से सावधान।'

De Facto de jure recognition

इनके लिए वहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली) के अंतर्गत क्रमशः 'तथ्यतः/वस्तुतः मान्यता' और 'विधितः मान्यता' शब्द दिए हैं। हिन्दी में तथ्यतः, वस्तुतः, विधितः इत्यादि शब्दों का प्रयोग क्रिया विशेषण के रूप में तो होता है, परन्तु विशेषण के रूप में नहीं होता। अतः यहाँ ये शब्द ग्राह्य नहीं। उपयुक्त शब्दावली होगी—'तथ्यपरक/तथ्यसम्मत मान्यता' और 'विधिपरक/विधिसम्मत मान्यता।'

Challenging task

इसका हिंदी अनुवाद चुनौतीपूर्ण कार्य रखा गया है। विशेषणों के अनुवाद में लम्बे लम्बे नये शब्द गढ़ना उपयुक्त नहीं। प्रचलित प्रयोगों में सबसे निकट अर्थ देने वाले शब्द मिल सकते हैं। उपयुक्त अनुवाद होगा — विकट कार्य।

Empirical

इसके लिए हिंदी में 'अनुभवमूलक' शब्द प्रचलित है। परन्तु कुछ लोगों ने इसे आनुभाविक लिखना शुरू कर दिया। यह गलत तो नहीं परन्तु, अनुभवमूलक' अधिक सुगम है क्योंकि उसमें 'अनुभव' शब्द सीधे-सीधे आया है, विकृत नहीं हुआ। इधर केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में इसके लिए 'इंद्रियानुभवाश्रित' शब्द गढ़ा गया है। यह शब्द इतना भारीभरकम है कि इसका चलना मुश्किल है। इसमें अनुभव' शब्द दोनों ओर से विकृत हो गया है। जब अनुभवमूलक जैसा सुगम और सार्थक शब्द मौजूद है तब इंद्रियानुभवाश्रित जैसा लचर शब्द क्या अपनाया जाए?

Material and moral support

समाचारपत्रों रेडियो इत्यादि में इस अभिव्यक्ति का अनुवाद भौतिक और नैतिक समर्थन किया जाता है। यह सही नहीं। 'नैतिक समर्थन' तो सार्थक है परन्तु भौतिक समर्थन का कोई अर्थ नहीं निकलता। यहाँ हमने Support के लिए समर्थन शब्द चुन लिया फिर material तथा moral के लिए क्रमशः भौतिक' और 'नैतिक विशेषण जड़ दिए। इससे बात नहीं बनी। वास्तव में support के दो अर्थ हैं— सहायता और समर्थन। अंग्रेजी में एक ही विशेष्य के साथ दोनों विशेषण चल गए परन्तु हिंदी में नहीं चलेंगे। यदि हम विशेष्य की दोनों अर्थ छायाओं का ध्यान रखें तो सही अनुवाद होगा—'भौतिक सहायता और नैतिक समर्थन या ठोस सहायता और नैतिक समर्थन। देखा जाए तो यह भी कुछ विस्तृत हो गया है। तीसरा विकल्प है सहायता और समर्थन क्योंकि इससे पूरा अर्थ निकल आता है। यह ऐसा उदाहरण है जिसमें अंग्रेजी में एक विशेष्य के साथ दो विशेषण लगे हैं परन्तु हिंदी में या तो दो विशेष्यों और दो विशेषणों का प्रयोग करना होगा या केवल दो विशेष्यों का प्रयोग करना होगा और विशेषणों की छुट्टी कर देनी होगी। ऐसे अवसरों पर अनुवादक से विशेष सूझ बूझ की आशा की जाती है।

Watchdog committee

Watchdog को प्रहरी कुत्ता कह सकते हैं। परन्तु Watchdog com

mittee में इसका लाक्षणिक प्रयोग किया गया है। कुत्ता हिंदी में तिरस्कारसूचक है। अतः Watchdog committee को 'प्रहरी समिति' लिखना उपयुक्त होगा।

Short tender notice

इसके लिए समाचारपत्रों में 'लघु निविदा सूचना' लिखा देखा गया है, जबकि निविदा लाखों रुपये का सामान खरीदने की थी। Short के लिए आँख मींचकर 'लघु' का प्रयोग नहीं कर सकते। यहां 'Short notice' से अभिप्राय है। अतः सही अनुवाद होगा 'अल्पकालीन निविदा सूचना।'

Undersigned

अनेक सरकारी सूचनाओं में अन्य पुरुष का प्रयोग करने के लिए संबद्ध अधिकारी अपने संदर्भ में 'undersigned' शब्द का प्रयोग करते हैं। हिंदी में इसके लिए 'अधोहस्ताक्षरकर्त्ता' और 'अधोहस्ताक्षरी' का प्रयोग किया जा रहा है। यह एकदम लचर है। इसका अनुवाद कठिन अवश्य है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि ऊटपटांग शब्द गढ़ लिए जाएँ। सर्वथा उपयुक्त शब्द के अभाव में इसके लिए 'प्रस्तुत हस्ताक्षरकर्त्ता' लिखना संगत होगा।

Permissive society

Permissive का संबंध permission अर्थात् अनुमति या छूट से है। अतः permissive society में लोगों को कुछ छूट रहती है—विशेषतः सेक्स के मामले में। इसके लिए 'अनुमतिमूलक समाज' बना सकते हैं परन्तु यह कोरा शब्दानुवाद लगता है। हिंदी की अभिव्यंजना शक्ति को ध्यान में रखते हुए इसके लिए 'वर्जनाहीन समाज' निर्धारित किया गया है। वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में भी यही दिया है। यह सर्वथा उपयुक्त है। निषेधात्मक रूपान्तर के आधार पर सटीक शब्द निर्माण का यह अच्छा उदाहरण है।

Solid state television

Solid State के लिए हिंदी में 'ठोसावस्था' प्रयुक्त होता है, जैसे Solid State Physics Laboratory का हिंदी नाम 'ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला' है। परन्तु Solid state television को हिंदी में 'ठोसावस्था दूरदर्शन' कहने में उसकी सारी गरिमा नष्ट हो जाएगी। अतः उसे 'सालिड स्टेट दूरदर्शन' कहना ही उपयुक्त होगा।

Urban life

कई लोग Urban life का अनुवाद 'नगरीय जीवन' करते हैं क्योंकि urban शब्द विशेषण है। परन्तु हिन्दी की प्रकृति के अनुसार 'नगर जीवन' लिखना उपयुक्त है। इसी तरह Administrative service को भी 'प्रशासनीय सेवा' या 'प्रशासनिक सेवा' के बजाय 'प्रशासन सेवा' ही लिखना चाहिए।

School ahead

परिवहन के संदर्भ में इसका अनुवाद 'स्कूल आगे है' लिखा जाता है। यह भ्रम सही नहीं। इससे ऐसा लगता है जैसे कोई 'स्कूल' को ढूँढ़ रहा हो और हम उसे उसकी स्थिति बता रहे हों। वास्तव में हम वाहन चालकों को यह बताना चाहते हैं कि वे अपनी गति धीमी कर लें और आगे बढ़ने में सावधानी बरतें, क्योंकि आगे बच्चों का स्कूल है। अतः सही अनुवाद होगा— आगे स्कूल है।

Refugee women centre

Refugee के लिए हिन्दी में 'शरणार्थी' शब्द प्रचलित है। अतः Refugee women centre के लिए 'शरणार्थी महिला केन्द्र' सही था। इधर शरणार्थियों के साहस और आत्म निर्भरता की प्रशंसा करते हुए उन्हें 'पुरुषार्थी' कहा जाने लगा। इस पर किसी ने Refugee women centre का अनुवाद 'पुरुषार्थी महिला केन्द्र' कर दिया, मानो ये महिलाएँ कोई पुरुष प्राप्त करने की इच्छुक हों। सही संदर्भ से कटकर शब्द कितने बेतुके हो जाते हैं।

Black money, black market

Black money की संकल्पना हिन्दी में नहीं थी। इसका शब्दानुवाद 'काला धन' हिन्दी में प्रचलित हो गया है। यही उपयुक्त है। दूसरी ओर, Black market का शब्दानुवाद 'काला बाजार' भी चलाया गया। परन्तु उसके लिए हिन्दी में अधिक उपयुक्त शब्द 'चोर बाजार' और 'चोर बाजारी' मौजूद हैं जो सटीक भी हैं। उन्हें वरीयता देना उपयुक्त होगा। वैसे 'काला' विशेषण हिन्दी में भी तिरस्कारसूचक है— 'काले कारनामे', 'काली करतूत' इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

Readymade garments, shoes

Readymade का हिन्दी समानक है तैयारशुदा, जैसे—Readymade goods तैयारशुदा माल। परन्तु विशेष वस्तुओं के संदर्भ में भिन्न भिन्न विशेषणों का प्रयोग करते हैं और यह उपयुक्त भी है। अतः Readymade garments

को 'सिले सिलाए कपड़े' कहा जाता है, और Readymade shoes को 'बने बनाए जूते'।

Highly inflammable

पट्रोल की गाडियों पर यह चेतावनी लिखी रहती है ताकि उन्हें आग से दूर रखा जाए। हिन्दी में लिखा जाता है— शीघ्र प्रज्वलित पदार्थ। यह सही हो सकता है। परन्तु इसे कौन समझेगा? जिन लोगों के लिए यह चेतावनी है उन्हें सरल भाषा में सन्देश देना चाहिए। अतः इन गाडियों पर यह लिखना उपयुक्त होगा — एकदम आग पकड़ता है।

Cumulative loss

बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी के अन्तर्गत Cumulative loss का हिन्दी समानक 'संचित हानि' दिया है। 'संचित' शब्द का प्रयोग 'धन', 'लाभ' या 'गुण' के संदर्भ में तो उपयुक्त है, परन्तु हानि भी संचित हो सकती है—यह समझना मुश्किल है। प्रस्तुत संदर्भ में कोई नया शब्द गढ़ सकते थे, या अपेक्षाकृत अपरिचित शब्द रख सकते थे, जैसे कि 'उपचित हानि'। इसी के समानान्तर Cumulative profit के लिए 'उपचित लाभ' का प्रयोग कर सकते हैं। परन्तु 'संचित' जैसे सुपरिचित शब्द को हानि के संदर्भ में लाना उपयुक्त नहीं।

Substantial error, Substantial loss

राजभाषा (विधायी) आयोग द्वारा प्रकाशित विधि शब्दावली में उपर्युक्त शब्दों के हिन्दी समानक क्रमशः 'सारवान भूल' और 'सारवान हानि' दिए हैं। क्या कोई भूल या हानि भी सारवान हो सकती है? ये ऐसे उदाहरण हैं जिनमें किसी विशेषण का एक समानक आँख मींचकर गलत संदर्भों में जड़ दिया गया है। साधारण भाषा में इनके लिए क्रमशः 'बहुत बड़ी भूल', 'बहुत बड़ी हानि' या 'भारी भूल', 'भारी हानि' या 'सचमुच की भूल', 'सचमुच की हानि' रख सकते हैं। परन्तु पारिभाषिक अर्थ में क्रमशः 'तात्त्विक भूल' और 'तात्त्विक हानि' अधिक निरापद होंगे।

Actual will, Real will General will

यह शब्दावली फ्रांसीसी विचारक रूसो की देन है। इसके साथ जटिल संकल्पनाएँ जुड़ी हैं। अतः इसका अनुवाद कठिनाई उपस्थित करता है। Actual और Real समानार्थक हैं जिन्हें हम वास्तविक या यथार्थ कहते हैं। परन्तु रूसो के चिन्तन के संदर्भ में Actual will हमारी ऐसी इच्छा है जिसमें हम अपने तात्कालिक स्वार्थ के बारे में सोचते हैं, Real will के अन्तर्गत हम यथार्थ हित,

पर विचार करता है जो पूरे समाज के हित के साथ जुड़ा रहता है। General will समाज के सारे सदस्यों की Real will का समुच्चय है।

कन्द्र पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी के अन्तगत Actual will Real will और General will के लिए क्रमश स्वार्थपरक इच्छा आदर्श इच्छा और जन इच्छा शब्द दिए हैं। इनमें 'जन इच्छा' तो उपयुक्त है परन्तु पहले दोनों शब्द मूल शब्दावली से बहुत दूर हट गए हैं। Actual will और Real will का अधिक सार्थक अनुवाद सामयिक (या तात्कालिक) इच्छा' और 'तात्त्विक इच्छा' होगा।

A man who knows price of everything but value of nothing

Value और Price साधारणत पर्याय माने जाते हैं। इनके लिए हिन्दी में क्रमश कीमत और मूल्य रख सकते हैं हालांकि यह बताना मुश्किल है कि किसी सितार की कीमत और मूल्य में अन्तर कम करेंगे? प्रस्तुत वाक्य के अनुवाद में भी कीमत और 'मूल्य' शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं परन्तु Value के लिए अधिक सार्थक शब्द होगा 'मूल्यवत्ता'। अत उपयुक्त अनुवाद होगा—ऐसा आदमी जो हर चीज की कीमत तो जानता है पर किसी चीज की मूल्यवत्ता को नहीं समझता।

When freedom is menaced or justice is threatened

यहाँ menaced और threatened पर्याय के रूप में आए हैं। हिन्दी में भी इनके समानान्तर पर्याय रखने होंगे हालांकि उनके अर्थों में कोई सूक्ष्म अन्तर होना जरूरी नहीं। अत इसका अनुवाद यों कर सकते हैं—जहाँ स्वतन्त्रता के लिए खतरा पैदा हो जाए या न्याय पर आँच आने लगे।

Likely to win Bound to win

इन अभिव्यक्तियों में एक केवल संभावना का संकेत देती है दूसरी निश्चित संभावना का। अत इनके अनुवाद इस तरह होंगे —

India is likely to win	भारत की विजय संभावित है।
India is bound to win	भारत की विजय अवश्यंभावी है।

Open to criticism Liable to criticism Subject to criticism

ऐसी अभिव्यक्तियों का अनुवाद कभी कभी कठिन होता है। इनके लिए कोई बने बनाए समानक नहीं सुझाए जा सकते। The conduct of minister will be open to criticism —इसका अनुवाद ऐसे करेंगे— मन्त्री के आचरण

आलोचना की जा सकेगी' (या 'की जा सकती है')। इसमें केवल संभावना की बात है, अर्थात यदि कोई उसकी आलोचना करना चाहे तो कर सकता है। दूसरी ओर, जब हम कहते हैं His action will be liable to criticism तो इसका अनुवाद होगा—'उसकी 'कार्यवाही की आलोचना अवश्य होगी।' 'Our action will be subject to criticism' के लिए प्रचलित शैली में यह लिख सकते हैं 'हमारी कार्यवाही आलोचना का विषय होगी' या 'आलोचना का लक्ष्य बनेगी।

Leisure, Leisure class

Leisure के लिए बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में कोई शब्द नहीं दिया है हालांकि अरस्तू के चिंतन के संदर्भ में यह एक पारिभाषिक शब्द है। Leisure class के लिए यहां 'फुरसती वर्ग/सावकाश वर्ग' दिया है। Leisure class की संकल्पना वेबलिन के चिंतन से जुड़ी है। देखना यह है कि इनके उपयुक्त समानक क्या होने चाहिए।

प्रस्तुत संदर्भ में Leisure के लिए 'फुरसत' या 'अवकाश' शब्द उपयुक्त नहीं होंगे। यहाँ यह व्यस्तता या काम का विपर्याय है, अतः इसे 'आराम' लिखना उपयुक्त होगा। 'आराम' में 'काम न करने' और 'सुख सुविधा' दोनों का भाव है जो Leisure की संकल्पना को पर्याप्त सार्थक करता है। अरस्तू के विचार से दार्शनिक चिंतन इसी Leisure की उपलब्धि होता है।

इसी क्रम में Leisure class का 'आरामतलब वर्ग' लिखना उपयुक्त होगा। यह शब्द वेबलिन की संकल्पना को भी सार्थक करता है जिसके अनुसार यह वर्ग अपने आपको श्रम के दायित्व से मुक्त करके विलासिता का जीवन बिताता है। फुरसती शब्द हिंदी में न तो प्रयुक्त है न उपयुक्त है। सावकाश का भी कोई निश्चित अर्थ नहीं निकलता क्योंकि यहाँ Retired तक को अवकाश प्राप्त लिखा जाता है।

Usefulness, Utility

सामान्य भाषा में ये दोनों शब्द एक ही अर्थ के द्योतक हैं—उपयोगिता। परन्तु अर्थशास्त्र में इन दोनों में अंतर है। बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में इनके लिए पृथक पृथक शब्द निर्धारित किए गए हैं

Usefulness तुष्टिगुण
Utility उपयोगिता

इनके मूल अंतर को स्पष्ट करने के लिए इनकी परिभाषा पर विचार कर लेना उपयुक्त होगा। Usefulness का अर्थ है किसी वस्तु का अपने आपमें

उपयोगी होना, अत रोटी कपड़ा, साइकल फान—सबमें यह गुण पाया जाता है। दूसरी ओर Utility का अर्थ है, हमारी आवश्यकता के सदर्भ में किसी वस्तु का उपयोगी होना। यह Usefulness से भिन्न है। उदाहरण के लिए दो एक सी साइकलो की Usefulness बराबर होगी। पर यदि किसी के पास एक साइकल (सही हालत में) पहले से मौजूद है तो दूसरी की उपयोगिता कम हो जाएगी। अत प्रस्तुत सदर्भ में usefulness को 'निरपेक्ष उपयोगिता' और utility को 'सापेक्ष उपयोगिता' कह सकते हैं। परन्तु ये शब्द कुछ बड़े हो जाएंगे। फिर 'निरपेक्ष' और 'सापेक्ष' विशेषणो का प्रयोग वहीं होना चाहिए जहाँ इन दोनो सकल्पनाओं में भेद करना आवश्यक हो। जहा अकेला Utility आए, वहा उसके साथ 'सापेक्ष' लगाने से भ्रम पैदा होगा। फिर Utilitarianism के लिए 'उपयोगितावाद' लिखा जाता है। अत utility के लिए उपयोगिता ही उपयुक्त है। रह गई समस्या usefulness की। इसके लिए 'तुष्टिगुण' पर पुनर्विचार जरूरी है। 'तुष्टिगुण' (यदि ऐसा शब्द बनाना ही हो तो) आत्मपरक होना चाहिए जबकि usefulness वस्तुपरक होती है। फिर, 'तुष्टिगुण' और 'उपयोगिता' में वैसा सीधा सम्बन्ध भी लक्षित नहीं होता जैसा usefulness का और utility से लक्षित होता है। अत प्रस्तुत सदर्भ में usefulness के लिए उपयोग या उपादेयता शब्दावली अपनानी चाहिए। सामान्य भाषा में इन शब्दो में वैसा अन्तर स्पष्ट नहीं है। परन्तु पारिभाषिक सदर्भ में अनुमोदित और प्रयुक्त होने पर यह अन्तर उसी तरह हो जाएगा जैसे utility और usefulness के सदर्भ में स्थिर हो गया है।

Bureaucracy Bureaucrat

Bureaucracy के लिए अनेक शब्द प्रचलित हैं—अधिकारितन्त्र नौकरशाही दफ्तरशाही। ये तीनों सही हैं हालांकि इनमें से किसी का चयन सदर्भ का ध्यान में रखकर करना होगा। परन्तु Bureaucrat के समानक के लिए पहले दोनों शब्दो से सहायता लेना सम्भव नहीं। इस केवल अधिकारी नहीं कह सकते। 'नौकरशाह' भी उपयुक्त नहीं क्योंकि उसका कोई स्पष्ट अर्थ नहीं निकलता। 'दफ्तरशाह' शब्द उपयुक्त है क्योंकि वह दफ्तर के माध्यम से शासन की शक्तियों का प्रयोग करता है। अत जहाँ अंग्रेजी में bureaucracy और bureaucrat दोनों शब्दों का प्रयोग हो, वहाँ हिन्दी में दफ्तरशाही और दफ्तरशाह का प्रयोग उपयुक्त होगा।

The folk and their culture

Folk का अर्थ लोग या विशेष जन समूह है। Folk song folk lore,

folk culture इत्यादि के लिए हिन्दी में क्रमश लोकगीत, लोकवार्ता, लोक संस्कृति शब्द स्वीकृत हैं। समस्त पदो मे, अर्थात जहाँ समास का प्रयोग किया गया हो, folk के लिए 'लोक' शब्द सही है। परन्तु अकेला 'लोक' शब्द folk का अर्थ नही देता। अत 'the folk and their culture' के लिए 'लोक और उनकी संस्कृति' लिखना उपयुक्त नही। सही अनुवाद होगा 'लोग और उनकी संस्कृति' या 'जन समूह और उनकी संस्कृति।'

Eligible for government accommodation

इसका यह अनुवाद देखा गया है—'सरकारी आवास के लिए पात्र है।' कृपापात्र, प्रेमपात्र या विश्वासपात्र का प्रयोग तो ठीक है, परन्तु 'सरकारी आवास के लिए पात्र' क्या हुआ? सही अनुवाद होगा—'सरकारी आवास का हकदार है।'

Courtesy begets courtesy

इसमें यदि begets का शब्दानुवाद करेंगे तो यह जँचेगा नही—'नम्रता नम्रता को जन्म देती है।' इसका अनुवाद यों किया गया है—'नम्रता नम्रता की जननी है।' यह रूपान्तर पहले विकल्प से अच्छा और सटीक है। परन्तु इसका भाव ग्रहण करते हुए ये विकल्प भी उपयुक्त होंगे—'नम्रता नम्रता की प्रेरणा देती है,' या 'नम्रता दूसरों में भी नम्रता जगाती है।'

Love begets love के समानान्तर हिन्दी कहावत मौजूद है 'दिल से दिल को राह होती है।' अत यहाँ begets के अनुवाद की समस्या नही।

I have broken my slate

स्कूलों में कभी कभी ऐसे वाक्य का शाब्दिक अनुवाद करके बताया जाता है 'मैंने अपनी स्लेट तोड दी।' इसमें ऐसा लगता है, जैसे जान-बूझकर या शरारत के इरादे से स्लेट तोडी हो। परन्तु कहने वाले का तात्पर्य यह नही था। अंग्रेजी में यह बात कहने का ढग है। हिन्दी में इसे यों कहेंगे—'मेरी स्लेट टूट गई।' यही सही अनुवाद होगा।

इसी से मिलता जुलता वाक्य है 'I have broken my leg' जाहिर है हिन्दी में इसका अनुवाद होगा—'मेरी टाँग टूट गई।' ऐसे कोई नही कहेगा—'मैंने अपनी टाँग तोड दी।'

The Prime Minister reviewed the progress of the plan

रेडियो या समाचारपत्रों में इस वाक्य का यह हिन्दी अनुवाद देखने को

मिलता है — प्रधानमन्त्री ने योजना की प्रगति की समीक्षा की।' यहाँ review के लिए समीक्षा उपयुक्त नहीं। समीक्षा में किसी वस्तु के गुण दोषों पर विचार करके अपना मत व्यक्त किया जाता है। अतः Book review को 'पुस्तक समीक्षा' कहना उपयुक्त है। परन्तु योजना के सन्दर्भ में मत व्यक्त करना मुख्य नहीं था, उसपर विचार करना मुख्य था। अतः सही अनुवाद होगा — प्रधानमन्त्री ने योजना की प्रगति का पुनरीक्षण किया।

Tom, Dick and Harry

Tom Dick and Harry विक्टोरिया युगीन इंगलैंड में राह चलते व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता था। अतः इसका अर्थ है ऐसे लोग जिनका कोई विशेष महत्त्व न हो। ज़ाहिर है Tom, Dick और Harry तीन साधारण लोगों के नाम हैं जो एक साथ आने पर साधारण लोगों के वर्ग के वाचक होते हैं। हिन्दी में इनके लिए ऐरा गैरा या ऐरा गैरा नत्थू खैरा मुहावरा प्रचलित है जिसमें नत्थू और खैरा भी अन्ततः साधारण लोगों के नाम व्यक्त करते हैं।

जिन मुहावरों में नामों का प्रयोग होता है उनके समानान्तर मुहावरों में भी नाम आ सकते हैं—कोई दूसरे नाम। परन्तु कई बार नामवाचक शब्द साधारण भाषा में भी प्रयुक्त होते हैं जहाँ नाम का विशेष महत्त्व नहीं होता। ऐसे सन्दर्भों के अनुवाद में नाम बदल देने में कोई हर्ज नहीं बशर्ते यह है कि वे मूल कथ्य के भाव को सही सही व्यक्त कर सकें। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य के अनुवाद में नाम या बदल सकते हैं

If an economic change benefits John and harms Bill,
we can ask whether John can
compensate Bill for his loss and still be better off

यदि किसी आर्थिक परिवर्तन से अहमद को लाभ होता है और महमूद को हानि, तो हम पूछ सकते हैं क्या अहमद महमूद का घाटा पूरा कर सकता है और फिर भी सुखी हो रह सकता है ?

A man is born as individual, he lives in society and becomes a person

इस वाक्य में individual और person दोनों शब्द आए हैं। इन दोनों के लिए हिन्दी में व्यक्ति शब्द प्रचलित है। परन्तु प्रस्तुत वाक्य में लेखक ने individual और person में भेद करने की कोशिश की है। यदि अनुवाद में

यह भेद व्यक्त नहीं होता तो अनुवाद बेकार होगा। तनिक गहराई से विचार करें तो पता चलेगा कि लेखक ने व्यक्ति के दो रूपों की कल्पना की है एक वह जिस रूप में वह जन्म लेता है, परन्तु उसका कोई व्यक्तित्व नहीं होता, दूसरा वह जिस रूप में समाज के अन्तर्गत उसका विकास होता है अर्थात् जब उसका व्यक्तित्व विकसित हो जाता है। इसी विश्लेषण से अनुवाद का सूत्र हमारे हाथ लग जाता है। अतः उपयुक्त अनुवाद कुछ इस तरह से होगा—'मनुष्य व्यक्ति के रूप में जन्म लेता है समाज में रहकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है (या उसका व्यक्तित्व विकसित हो जाता है)।

Individual person

हिन्दी में individual और person दोनों के लिए 'व्यक्ति' शब्द प्रचलित है। परन्तु individual person में individual विशेषण है जिसके लिए व्यक्तिगत भी चलता है। तब individual person को 'व्यक्तिगत व्यक्ति' तो लिखेंगे नहीं। एक जगह इसका अनुवाद 'व्यक्तिगत मनुष्य' किया गया है (अन्तर्राष्ट्रीय विधि फेनविक, हिन्दी अनुवाद, खण्ड 1 पृ० 197) जो फिर और भी बेतुका है। इसका सही अनुवाद होगा— व्यक्ति विशेष।

Bibliography of Hindi books

समाचारपत्रों में इसका अनुवाद हिन्दी पुस्तकों की ग्रन्थसूची देखा गया है। Bibliography के लिए 'पुस्तकसूची' या 'ग्रन्थसूची' सही है परन्तु books आ जाने पर पुस्तक और 'ग्रन्थ' दोनों का प्रयोग गलत है। इसकी जगह 'हिन्दी पुस्तकों की सूची,' हिन्दी ग्रन्थों की सूची 'हिन्दी पुस्तकसूची' या हिन्दी ग्रन्थ सूची लिखना उपयुक्त होगा।

Transliteration into Devnagari Script

Transliteration के लिए हिन्दी में 'लिप्यन्तरण (लिपि+अन्तरण) लिखते हैं। समाचारपत्रों में Transliteration into Devnagari Script का अनुवाद देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण देखा गया है। यह सही नहीं। देवनागरी में लिप्यन्तरण लिखना उपयुक्त होगा।

Audit of accounts

Audit के लिए हिन्दी में 'लेखा-परीक्षा' स्वीकृत है। Audit of accounts का अनुवाद 'हिसाब किताब की लेखा परीक्षा' देखा गया है। हिसाब किताब और लेखा एक ही चीज है इन दोनों का एक साथ प्रयोग उचित नहीं। अतः audit

of accounts के लिए भी केवल लेखा-परीक्षा पर्याप्त होगा।

Compensation of loss

Compensation के लिए 'क्षतिपूर्ति' शब्द प्रचलित है। इसी आधार पर Compensation of loss का अनुवाद क्षति की क्षतिपूर्ति देखा गया है। क्षति शब्द की पुनरावृत्ति उपयुक्त नहीं। यहाँ केवल क्षतिपूर्ति लिखकर काम चल जाना चाहिए।

Right of inheritance

Inheritance के लिए हिन्दी में 'उत्तराधिकार' प्रचलित है। Right of inheritance को भी उत्तराधिकार ही लिखेंगे—उत्तराधिकार का अधिकार नहीं, क्योंकि अधिकार शब्द को दो बार नहीं ला सकते।

Letter of resignation

Resignation के लिए हिन्दी में त्यागपत्र प्रचलित है। Letter of resignation को भी त्यागपत्र ही कहेंगे।

Court of justice

Court के लिए हिन्दी शब्द न्यायालय है। Court of justice को भी 'न्यायालय' ही लिखेंगे। International Court of Justice को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहेंगे, अन्तर्राष्ट्रीय न्याय का न्यायालय नहीं।

Special privileges

Privileges के लिए हिन्दी में विशेषाधिकार शब्द अपनाया गया है। Special privilege को भी विशेषाधिकार लिखेंगे क्योंकि विशेष शब्द दो बार नहीं आ सकता।

Volatile vapour

बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—विज्ञान के अन्तर्गत Volatile के लिए 'वाष्पशील' शब्द दिया है और Vapour के लिए वाष्प। परन्तु प्राणिविज्ञान में Volatile vapour शब्द भी प्रयुक्त होता है। तब क्या उसे वाष्पशील वाष्प लिखेंगे? इसका क्या अर्थ हुआ? ऐसे प्रयोगों को ध्यान में रखते हुए Volatile के लिए वाष्पशील शब्द नहीं देना चाहिए था। उपयुक्त अनुवाद होगा—उड़नशील वाष्प।

Oval shape egg

Oval shape का हिन्दी समानक 'अण्डाकार' है। परन्तु Oval shape egg को 'अण्डाकार अण्डा' लिखना उपयुक्त नहीं। सही अनुवाद होगा—आम अण्डे के आकार का अण्डा। यहाँ ऐसे अण्डों का जिक्र है जिनके आकार भिन्न भिन्न होते हैं। 'अण्डाकार' से आम अण्डे के आकार का संकेत मिलता है। अनुवाद में यही बात स्पष्ट करनी होगी।

The Science of Zoology

Zoology के लिए हिन्दी में 'प्राणिविज्ञान' शब्द स्वीकृत है। Science का भाव लाने के लिए 'विज्ञान' शब्द दो बार नहीं ला सकते। अतः The Science of Zoology को भी 'प्राणिविज्ञान' ही लिखेंगे। यदि यह किसी पुस्तक का शीर्षक है तो उसमें जँचाव लाने के लिए 'प्राणिविज्ञान की रूपरेखा', 'भूमिका' आदि लिख सकते हैं।

Commonwealth of Nations

Commonwealth का हिन्दी समानक 'राष्ट्रमंडल' है। Commonwealth of Nations के लिए 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग दो बार तो कर नहीं सकते। अतः इसे भी 'राष्ट्रमण्डल' ही लिखा जाएगा।

Foreign country

Foreign के लिए हिन्दी में 'विदेशी' विशेषण के रूप में आता है। परन्तु Foreign country के लिए 'विदेशी देश' लिखना उपयुक्त नहीं। इसके लिए 'विदेश' ही पर्याप्त है। संदर्भ विशेष में 'विदेशी राष्ट्र' लिख सकते हैं।

Drain off large amounts of water

Drain off के लिए 'जल निकास' शब्द प्रचलित है। परन्तु drain off large amounts of water का अनुवाद 'बहुत सारे पानी का जल निकास' देखा गया है। पानी और जल दोनों का प्रयोग उचित नहीं। यहाँ 'बहुत सारे पानी (या जल) का निकास' लिखना उपयुक्त होगा।

Cane sugar, Sugarcane

अंग्रेज़ी में गन्ने और चीनी का सम्बन्ध उतना स्पष्ट नहीं जितना हिन्दी में है। अतः वहाँ साधारण चीनी को Cane sugar कहा जाता है और गन्ने को

In Defence of Liberalism

यह एक पुस्तक का शीर्षक है। इसका शब्दानुवाद हिन्दी में बेतुका लगेगा—'उदारवाद के पक्ष में'। अतः उपयुक्त शीर्षक का चयन करते समय कल्पना शक्ति से काम लेना होगा। इसके लिए 'उदारवाद का महत्त्व' लिख सकते हैं।

A Guide to Diplomatic Practice

इस पुस्तक के शीर्षक का शब्दानुवाद 'राजनयिक व्यवहार पथ प्रदर्शक/मार्गदर्शिका' इत्यादि हो सकता है। परन्तु इससे उपयुक्त गरिमा लक्षित नहीं होती। अतः उपयुक्त शीर्षक होगा—'राजनयिक व्यवहार की रूपरेखा।'

Politics in India

इस नाम की पुस्तक का हिन्दी शीर्षक 'भारत में राजनीति' रखा गया है। यह निरा शब्दानुवाद है जो हिन्दी में बेतुका लगता है। सही शीर्षक 'भारत की राजनीति' या 'भारतीय राजनीति' होना चाहिए।

Politices among Nations

इस नाम की पुस्तक का शीर्षक हिन्दी में रखा गया है—'राष्ट्रों के मध्य राजनीति'। यह निरा शब्दानुवाद है जो हिन्दी में सार्थक नहीं होता। अंग्रेजी में Politics among Nations सही है। परन्तु इसका हिन्दी अनुवाद 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति' ही उपयुक्त होगा जो पुस्तक की विषय-वस्तु को सही व्यक्त करता है। इसी तरह Justice among Nations शीर्षक का अनुवाद 'अन्तर्राष्ट्रीय न्याय' होना चाहिए 'राष्ट्रों के मध्य न्याय' नहीं।

Aid to India by Britain

यहाँ 'by' के लिए 'द्वारा' लिखना आवश्यक समझते हैं। अतः वे Aid to India by Britain का अनुवाद करते हैं 'ब्रिटेन द्वारा भारत को सहायता'। हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप अनुवाद होगा 'भारत को ब्रिटेन की सहायता'।

Institute of Economic Growth

Institute के लिए हिन्दी में 'संस्थान' शब्द प्रयुक्त है। इस तरह Institute of Economic Growth का अनुवाद होगा—'आर्थिक विकास संस्थान'। परन्तु इसमें एक ऐसे संस्थान का बोध होता है जहाँ आर्थिक विकास किया जाता हो जबकि

अभिप्राय उसके अध्ययन से है, अतः इसका सही अनुवाद 'आर्थिक विकास अध्ययन संस्थान' होगा।

Poor Laws

Poor Laws इंगलैंड के प्रसिद्ध कानून हैं। इनका शब्दानुवाद 'निर्धन-कानून' होगा जिसमें कोई अर्थ नहीं निकलता। इसमें कोई व्याख्यात्मक शब्द जोड़ना होगा। सही अनुवाद होगा निर्धन सहायता कानून।

Department of Management Studies

इसका शब्दशः अनुवाद होगा 'प्रबन्ध अध्ययन विभाग।' परन्तु प्रबन्ध अध्ययन से कुछ स्पष्ट नहीं होता। अतः उपयुक्त अनुवाद होगा 'प्रबन्ध विज्ञान (या प्रबन्धविद्या) विभाग', क्योंकि इस विभाग का सम्बन्ध प्रबन्ध-व्यवस्था के वैज्ञानिक अध्ययन से है।

Foundations of Political Science

इसका अनुवाद प्रायः 'राजनीतिविज्ञान के आधार' या 'राजनीतिविज्ञान के मूल आधार' किया जाता है। परन्तु 'आधार' शब्द का बहुवचन प्रयोग बेतुका है। हिन्दी में foundations शब्द के बहुवचन पक्ष का बोध कराने के लिए उपयुक्त अनुवाद होगा—'राजनीति विज्ञान के आधार-तत्त्व'।

A Text Book of Surgery

इस नाम की पुस्तक हिन्दी 'शल्यविज्ञान की पाठ्यपुस्तक' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। शीर्षक में पाठ्यपुस्तक शब्द आने से उसकी सारी गरिमा चली गई है। उपयुक्त शीर्षक होगा—शल्यविज्ञान की रूपरेखा। इसी तरह A Handbook of Science of Psychology में भी handbook के शब्दानुवाद ——हस्तपुस्तिका/लघुपुस्तिका/नियमपुस्तिका/निर्देश पुस्तिका/पुस्तिका इत्यादि का प्रयोग बेहूदा होगा। यहाँ भी समाज मनोविज्ञान की भूमिका/रूपरेखा इत्यादि का प्रयोग समीचीन होगा। 'A Grammer of Politics' का अनुवाद 'राजनीति के मूलतत्त्व' शीर्षक से छपा है जो कि सटीक है।

Theory and Practice of Modern Governments

इस विषय पर प्रकाशित अनेक हिन्दी पुस्तकों का शीर्षक 'आधुनिक सरकारों के सिद्धान्त और व्यवहार' रखा गया है। सरकारें तो टूटती बनती रहती हैं। फिर, सरकारों के सिद्धान्तों और व्यवहार का अध्ययन क्या हुआ? वास्तविक

उद्देश्य शासन या शासन पद्धतियों/प्रणालियों के सिद्धांत और व्यवहार का अध्ययन करना है। अतः उपयुक्त शीर्षक होगा 'आधुनिक शासन प्रणालियाँ सिद्धांत और व्यवहार'। इसी तरह Comparative Government का अनुवाद 'तुलनात्मक सरकार' नहीं करना चाहिए हालाँकि यह अनेक पुस्तकों के शीर्षक के रूप में आया है। सही अनुवाद होगा— तुलनात्मक शासन या तुलनात्मक शासन व्यवस्था।'

Five Types of Political Theory

इस नाम की पुस्तक का हिन्दी शीर्षक रखा गया है—'नीतिशास्त्रीय सिद्धांत के पाँच प्रकार।' यह बहुत लम्बा है। फिर प्रकार शब्द शीर्षक में जँचता नहीं। उपयुक्त शीर्षक होगा—'नीति सिद्धांत के पाँच रूप या नीतिसिद्धांत पाँच विधाएँ।'

Speeches and Documents on British Dominions

इस नाम की पुस्तक का हिन्दी शीर्षक रखा गया है— ब्रिटिश डोमिनियनों पर भाषण और दस्तावेज। इसमें 'पर' का प्रयोग अटपटा है। सही अनुवाद होगा— ब्रिटिश डोमिनियनों से सम्बन्धित भाषण और दस्तावेज। परन्तु शीर्षक में शायद इतना विस्तार अभीष्ट नहीं। अतः और भी उपयुक्त अनुवाद होगा— ब्रिटिश डोमिनियन भाषण और दस्तावेज।

Towards a Just Social Order

एक पुस्तक के इस शीर्षक का शब्दानुवाद होगा न्यायपूर्ण समाज-व्यवस्था की ओर। परन्तु यह शब्दावली शीर्षक के लिए उपयुक्त नहीं। इसका उपयुक्त अनुवाद होगा— सामाजिक न्याय की ओर।

Principles of Social and Political Theory

इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सामाजिक तथा राजनीतिक शास्त्र के सिद्धांत शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुआ है। यहाँ शास्त्र कहाँ से आ टपका? यदि यह तर्क दें कि यह समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र वाला शास्त्र है तो भी बात नहीं बनती क्योंकि ये शब्द क्रमशः Social Theory और Political Theory के लिए उपयुक्त नहीं। कठिनाई इसलिए पैदा होती है कि हिन्दी में Principles और Theory दोनों के लिए सिद्धांत शब्द प्रयुक्त होता है। परन्तु Principles of Theory के संदर्भ को सही सही समझ लेने पर अनुवाद कठिन नहीं रहेगा।

इस हम 'सामाजिक और राजनीतिक सिद्धान्त के मूलतत्त्व' या 'सामाजिक और राजनीतिक सिद्धान्त-तत्त्व' लिख सकते हैं।

Under DTC Operation

बसों पर इस अभिव्यक्ति का अनुवाद 'अन्तर्गत दिल्ली परिवहन' लिखा देखा गया है। यह हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। हिन्दी में 'दिल्ली परिवहन के अन्तर्गत' लिखना सही होगा। इसी तरह By order, District Magistrate' को 'आज्ञानुसार, जिलाधीश' लिखना ठीक नहीं। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार इसे यों लिखना चाहिए— 'जिलाधीश के आदेश से।'

Prevention against malaria

समाचारपत्रों में इसका अनुवाद 'मलेरिया के विरुद्ध रोकथाम' देखा गया है। यह सही नहीं। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार 'मलेरिया की रोकथाम' लिखना उपयुक्त होगा।

Stolen goods recovered by the police

समाचारपत्रों इत्यादि में इस अभिव्यक्ति का यह अनुवाद देखने को मिलता है— पुलिस द्वारा चोरी का माल बरामद। यह ठीक नहीं। क्रिया पद से बने विशेषण से पहले 'द्वारा' के प्रयोग से भाषा गड़बड़ा जाती है। इससे ऐसा भी लग सकता है जैसे पुलिस द्वारा चोरी का माल बरामद हुआ हो। ऐसे संदर्भों का अनुवाद कठिन अवश्य है। उपयुक्त अनुवाद होगा— पुलिस के प्रयत्न से चोरी का माल बरामद।

In pursuance of the reecommendation of the Official Language Commission

Pursuance के लिए हिन्दी में 'अनुसरण' शब्द प्रयुक्त है। 'In pursuance of' अभिव्यक्ति का अनुवाद 'राजभाषा आयोग की सिफारिश के अनुसरण में' देखा गया है। यह प्रयोग हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं। सही अनुवाद होना चाहिए— का अनुसरण करते हुए।

The conference started early in August

हिन्दी में इसका यह अनुवाद देखा गया है— सम्मेलन अगस्त के शुरू में शुरू हुआ। 'शुरू' शब्द का दो बार प्रयोग अच्छा नहीं लगता। हमारे पास बहुत सारे विकल्प

भी नहीं है। अतः इसका कहीं अधिक उपयुक्त होगा—'सम्भवतः प्रगति के युग में प्रारम्भ हुआ।

It can safely be admitted that

यहाँ 'Safely' क्रियाविशेषण का अनुवाद कठिनाई पैदा करता है। इसका शब्दानुवाद होगा— यह सुरक्षापूर्वक माना जा सकता है कि ...। यह अभिव्यक्ति अटपटी है। अतः क्रियाविशेषण को विशेषण में बदलकर उपयुक्त अनुवाद होगा—'यह मान लेना निरापद होगा कि ...।

None live profitably that live wickedly

इस प्रकार के अनुवाद में क्रियाविशेषण का अनुवाद कठिनाई उत्पन्न करता है। इसका शब्दानुवाद होगा — जो दुष्टतापूर्वक जीता है वह लाभपूर्वक नहीं जीता। यहाँ लाभपूर्वक का प्रयोग अटपटा है। उपयुक्त अनुवाद होगा— 'जो दुष्टतापूर्वक जीता है (या दुष्ट का जीवन जीता है) उसके जीने से क्या लाभ?'

In the case (event) of theft inform the police immediately

हिन्दी में 'in the case (event) of' का अनुवाद साधारणतया 'की हालत में' किया जाता है। प्रस्तुत वाक्य का यह अनुवाद देखने में आया है— चोरी की हालत में तुरन्त पुलिस को सूचित करें। परन्तु हिन्दी में कभी 'चोरी की हालत में' नहीं लिखा जाता। सही अनुवाद होगा— चोरी होने पर तुरन्त पुलिस को सूचित करें।

Former, latter

अंग्रेज़ी में दो चीज़ों का ज़िक्र आने पर इन शब्दों का प्रयोग सर्वनाम के रूप में करते हैं। हिन्दी में इनके समानक नहीं हैं। कुछ लोगों ने इनके लिए 'पूर्वोक्त' और 'पश्चादुक्त' गढ़े हैं। एकदम बेतुके और फूहड़! हिन्दी में इनका भाव ग्रहण करते हुए व्याख्या कर देनी चाहिए या एक और दूसरे से काम चला लेना चाहिए जैसा कि निम्नलिखित अनुवाद से स्पष्ट हो जाएगा—

They keep horses and cattle the former for riding, the latter for food

वे घोड़े भी रखते हैं मवेशी भी, एक सवारी के काम आते हैं दूसरे भोजन के लिए।

Vice versa

अंग्रेजी म Vice versa का प्रयोग वहा होता है जहा कोई सम्बन्ध निर्दिष्ट करने के बाद यह बताना हो कि क्रम उलट देने पर भी उन वस्तुओं में वही सम्बन्ध रहेगा। हिन्दी मे ऐसी कोई अभिव्यक्ति नही है। कुछ लोग इसका अनुवाद करके लिखते हैं 'और प्रतिक्रमात भी' (दे० रामचन्द्र वर्मा, शब्द और अर्थ, पृ० 37 पा०टि०), परन्तु एस शब्द गढकर हिन्दी को बोझिल बनाने म क्या फायदा। हिन्दी म अपने ढग से पूरी बात कहना उपयुक्त होगा, जैसा कि निम्नलिखित अनुवाद म स्पष्ट हो जाएगा

I dislike him, and vice versa
"मैं उसे पसन्द नही करता, और वह मुझे।'

A good teacher may not be a good author, and vice versa
हो सकता है अच्छा अध्यापक अच्छा लेखक न हो या अच्छा लेखक अच्छा अध्यापक न हो।"

यदि कुछ विस्तार की गुजाइश हो तो इस वाक्य का यह अनुवाद भी कर सकते हैं

'हो सकता है, कोई अच्छा अध्यापक तो हो पर अच्छा लेखक न हो, या कोई अच्छा लेखक तो हो पर अच्छा अध्यापक न हो।

As well as

हिन्दी म As well as का समानार्थ उपलब्ध नही है। परन्तु जहाँ इसका प्रयोग हो वहाँ इसका भाव ग्रहण करते हुए अनुवाद म कठिनाई नही होनी चाहिए।

'He is the founder of this institution as well as its Director—इस वाक्य का अनुवाद यो कर सकते हैं— वह इस सस्था का निदेशक भी है सस्थापक भी या 'वह इस सस्था का निदेशक ही नही सस्थापक भी है। ध्यान रहे कि अंग्रेजी म found r शब्द as well a s से पहले आया है Director बाद म। परन्तु कहने का अभिप्राय यह था कि वह Director तो है ही (या जैसा कि आप जानते हैं) founder भी वही है। अत अनुवाद म क्रम बदल जाएगा।

As early as as late as

ये शब्द निर्दिष्ट समय पर बल देने के लिए प्रयुक्त होते हैं परन्तु हिन्दी म इनके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलते। फिर भी हो सन्दर्भ को देखते हुए इनका भाव हिन्दी म भी व्यक्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए,

was accepted as early as in 1957 का उपयुक्त अनुवाद होगा— यह प्रस्ताव १६५७ में ही स्वीकार कर लिया गया था। इसी तरह It was discovered as late as in 1976 का अनुवाद या कर सकते हैं— कहीं 1976 में जाकर यह पता चला कि ।

In the 1930s

इसका अर्थ है, 1930, 1931 1932, 1939 परन्तु हिन्दी में इसके समानान्तर अभिव्यक्ति नहीं मिलती। उपयुक्त अनुवाद होगा— 1930 में शुरू होने वाले दशक में या बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में।

Sooner or later, etc

कई बार एक दूसरे के विलोम शब्द एक साथ प्रयुक्त होते हैं। यह प्रवृत्ति अंग्रेजी में भी है हिन्दी में भी। ऐसी अभिव्यक्तियों का अनुवाद करते समय यह देखना चाहिए कि अंग्रेजी में वे किस क्रम से आए हैं बल्कि हिन्दी में वे किस क्रम में प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी में साधारणतः छोटा शब्द पहले आता है बड़ा बाद में। इस क्रम को ध्यान में नहीं रखेंगे तो अनुवाद हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं रहेगा और खटकने लगेगा। उदाहरण के लिए Sooner or later का अनुवाद जल्दी या देर से नहीं करना चाहिए बल्कि प्रचलित मुहावरे के अनुसार देर सवेर से लिखना चाहिए। इसी तरह more or less के लिए कमो वेश लिखना चाहिए give & take के लिए आदान प्रदान Sale & purchase के लिए क्रय विक्रय by hook or by crook के लिए छल या बल से और profit and loss के लिए हानि लाभ। For and against के लिए 'पक्ष विपक्ष उपयुक्त है परन्तु यदि कथ की ओर संकेत हो तो खंडन मंडन लिखेंगे। Men and women को या तो स्त्री पुरुष लिखना चाहिए या नर नारी। Civil and military का अनुवाद सैनिक और असैनिक करना चाहिए 'असैनिक और सैनिक' नहीं।

Congress and conference

हिन्दी में Conference के लिए 'सम्मेलन शब्द लिखा जाता है Congress का कांग्रेस ही लिखते हैं जो अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के विधानमंडल (Congress) को हिन्दी में कांग्रेस ही लिखते हैं 'Trade Union Congress को मजदूर संघ कांग्रेस लिखते हैं। परन्तु जहां Congress and Conference एक साथ आते हैं वहां कांग्रेस और

सम्मेलन अटपटा लगता है। अत यहाँ महासभा और सम्मेलन या 'सभा और सम्मेलन' लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

City of Delhi

अंग्रेजी में 'City of Delhi', Year of 1978' इत्यादि प्रयोग चलते हैं। कई जगह इनका अनुवाद 'दिल्ली का नगर' 1978 का वर्ष' इत्यादि किया गया है। यह सही नहीं। हिन्दी में 'दिल्ली नगर', 1978 वर्ष' का प्रयोग उपयुक्त होगा।

We cannot wait any longer

इस वाक्य का अनुवाद यों कर सकते हैं—'हम और अधिक प्रतीक्षा (या इंतजार) नहीं कर सकते।' परन्तु यह वाक्य ऐसे संदर्भ में आया जहाँ इसे तार द्वारा प्रेषित करना था। तार का संदेश यथासंभव संक्षिप्त होना चाहिए। अत इसका यह अनुवाद किया गया जो सर्वथा उपयुक्त था—'हम अब रुक नहीं सकते।'

All the seven members

all का अर्थ 'सभी' या 'सब के सब' है। इसी आधार पर all the seven members को 'सभी सात सदस्यों ने' लिखा जाता है। यह हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप नहीं। उपयुक्त अनुवाद होगा— 'सात के सात सदस्यों ने' या 'सातों सदस्यों ने।' परन्तु जहाँ संख्या बड़ी हो वहाँ यह कठिनाई पैदा हो सकती है जैसे 'all the hundred and one' का इस तरह अनुवाद कठिन होगा। ऐसे संदर्भों में, 'एक सौ एक सदस्यों में सबके सब' लिख सकते हैं।

Agricultural breakthrough

हिन्दी में breakthrough के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं। Agricultural breakthrough का अनुवाद साधारणत 'कृषि में प्रगति' किया जाता है। 'प्रगति' शब्द breakthrough का पूरा अर्थ नहीं देता क्योंकि प्रगति तो धीरे धीरे और थोड़ी थोड़ी भी हो सकती है परन्तु breakthrough में तीव्र तथा युगांतरकारी परिवर्तन लक्षित होता है। अत उपयुक्त अनुवाद होगा —'कृषि युगांतर।'

Non transferable

लाइब्रेरी कार्ड या लाइसेंस इत्यादि पर इसका अनुवाद 'अहस्तांतरणी'

किया जाता है। शाब्दिक दृष्टि से यह बिल्कुल सही है। परन्तु यह शब्द ज़बान पर चढना इतना मुश्किल है कि कम पढ़े लिखे ही क्या, पढ़े लिखे लोग भी शिकायत करते हैं। इसकी जगह कुछ ऐसा लिखना चाहिए— इस कोड का प्रयोग कोई दूसरा नहीं कर सकता भले ही यह लम्बा लगे।

No exit

रेलवे स्टेशन के एक द्वार पर इसका अनुवाद 'निगम निषेध' दिया गया है। शाब्दिक दृष्टि से यह सही हो सकता है परन्तु देखना यह है कि जिन यात्रियों के लिए—विशेषतः ग्रामीण और कम पढ़े लिखे यात्रियों के लिए यह संकेत लिखा गया है वे क्या समझेंगे? उनके लिए तो 'इधर से बाहर न जाएं' लिखना अधिक उपयुक्त होगा, भले ही यह कुछ लम्बा हो गया है।

Rule Regulation, Act, Canon

ये शब्द तरह-तरह के नियमों या कायदे कानून के वाचक हैं। इनके पारिभाषिक अर्थों में अंतर स्थापित करने के लिए क्रमशः ये शब्द बनाए गए हैं

Rule	नियम
Regulation	विनियम
Act	अधिनियम (या कानून)
Cannon	अभिनियम

जहाँ ये शब्द पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त हों वहाँ इस अंतर का ध्यान रखना होगा। परन्तु सामान्य अर्थ में नियम, कायदे कानून इत्यादि का प्रयोग उपयुक्त होगा।

Right Authority, Privilege Prerogative

ये शब्द तरह तरह के अधिकारों के वाचक हैं। इनके पारिभाषिक अर्थों में अंतर स्थापित करने के लिए क्रमशः ये शब्द स्वीकार किए गए हैं

Right	अधिकार
Authority	प्राधिकार/प्राधिकरण (संगठन विशेष)
Privilege	विशेषाधिकार
Prerogative	परमाधिकार

परन्तु जहां ये सामान्य अर्थ में प्रयुक्त हों वहाँ इनके पारिभाषिक समानक रखना आवश्यक नहीं।

Leave is a privilege not a right

Right और Privilege के लिए हिन्दी में 'अधिकार' और 'विशेषाधिकार' शब्द स्वीकृत हैं। प्रस्तुत वाक्य का सीधा-सीधा अनुवाद होगा—'छुट्टी विशेषाधिकार है अधिकार नहीं। बात नहीं बनी। जो चीज विशेषाधिकार (विशेष+अधिकार) है वह अधिकार क्यों नहीं? सारे संदर्भ को देखते हुए इसका उपयुक्त अनुवाद होगा—छुट्टी दी जा सकती है, ली नहीं जा सकती।'

Social and Personal Factors in Wealth

Factor के लिए हिन्दी में 'कारक' शब्द बनाकर प्रचलित करने की कोशिश की गई, परन्तु यह सब जगह खटकता है। गणित में factors गुणनखण्ड होते हैं और वहाँ इसमें कोई कठिनाई नहीं। परन्तु सामान्य भाषा में या वैज्ञानिक वाङ्मय में ही क्या factor का अर्थ-मन्तव्य लेकिन वस्तुतः समाहार रखना आवश्यक है? इसके समयक Social and Personal Factors in Wealth का अनुवाद करेंगे—संपदा में सामाजिक और वैयक्तिक कारक!' कितना भद्दा है! इस वाक्य का उपयुक्त अनुवाद होगा—संपदा कितनी सामाजिक, कितनी वैयक्तिक।

Comedy, Tragedy

इनके लिए क्रमशः 'सुखान्त (सुख+अन्त) और 'दुखान्त (दुःख+अन्त) शब्द प्रचलित रहे विशेषतः नाटक के प्रकारों के संदर्भ में। फिर सामान्य अर्थ में भी यही शब्द चलाए गए। परन्तु ये उपयुक्त नहीं थे क्योंकि Comedy और Tragedy में केवल अन्त का महत्त्व नहीं होता बल्कि पूरी घटना क्रम की मूल स्वर से इसका सरोकार रहता है। अतः इनके लिए क्रमशः 'कामदी' (जो कामना पूर्ण करे) और त्रासदी (जो त्रास पैदा करे) शब्द गढ़े गए। शायद साथ ही मूल शब्दों के साथ इनका साम्य भी इनके बनने का बीज है।

इसी तरह अंग्रेजी के अनेक पारिभाषिक शब्दों के समानक ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्धारित किए गए हैं जिनमें कई बहुत सटीक हैं। Academy के लिए 'अकादमी' parabola के लिए परवलय, spiral के लिए सर्पिल, interim के लिए 'अंतरिम' और technique के लिए 'तकनीक' इत्यादि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। एस कुछ शब्द सामान्य भाषा में भी प्रचलित हैं जैसे Hospital के लिए अस्पताल Lantern के लिए लालटेन Romantic के लिए रूमानी Command के लिए कमान Orderly के लिए अर्दली Captain के लिए कप्तान Officer के लिए अफसर Recruit के लिए रँगरूट इत्यादि।

Co existence

Co existence के लिए हिंदी में सह अस्तित्व प्रचलित है और यह उपयुक्त भी है। यहाँ संधि करके 'सहास्तित्व' लिखना एकदम बेतुका और हास्यास्पद होगा। इससे दोनों शब्द विकृत होकर पूरा शब्द अपरिचित हो जाता है। हिंदी में संधि केवल वहीं करनी चाहिए जहाँ मूल शब्द इस तरह विकृत न हो जाएँ। उदाहरण के लिए स्वागत में तो 'सु+आगत' की संधि ग्राह्य है, परन्तु सु+अवसर को सुअवसर ही लिखेंगे स्ववसर नहीं।

Fascism

Fascism के लिए वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में फासिस्ट वाद/फासिज्म शब्द दिए हैं। बात यह है कि Fascism एक जटिल संकल्पना है और इसके साथ इतने विचार जुड़ गए हैं कि हिन्दी मूल का कोई ऐसा शब्द ढूँढना मुश्किल है जो उन्हें व्यक्त कर सके। एक ओर इसे निरंकुश शासन के साथ जोड़ा जाता है दूसरी ओर अंध राष्ट्रभक्ति जातिवाद और अल्पमत के दमन के साथ। इसकी व्युत्पत्ति इटालवी शब्द fascio से हुई है जिसका अर्थ है 'डंडा का गट्ठर'। अतः मूलतः यह एकता अनुशासन और संगठन का प्रतीक था और यह उन लोगों के संगठन और सिद्धांतों का द्योतक था जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इटली के हित में जीने मरने के लिए एकजुट हो गए थे। बाद में मुसोलिनी ने इस विचारधारा का उपयोग राष्ट्रीय गौरव के पुनरुद्धार के उद्देश्य से किया और राष्ट्र को जाति विशेष के साथ एकाकार करके नागरिकों से सर्वस्व समर्पण की माँग की। अतः अंधराष्ट्रभक्ति अल्पमत के दमन और निरंकुश शासन के भाव इसके साथ जुड़ गए और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तो पश्चिमी जगत में Fascism और Fascist तिरस्कृत शब्द हो गए।

जाहिर है कि हिन्दी में Fascism का सही समानक जुटाना कठिन है। डा० रघुवीर के प्रसिद्ध कोश A Comprehensive English Hindi Dictionary of Governmental & Educational Words & Phrases में इसके लिए उग्रराष्ट्रिकता शब्द दिया है। परन्तु यह शब्द Fascism की एक अवधारणा को व्यक्त करता है पूरे तत्त्व को नहीं। फिर उग्रराष्ट्रीयता या उग्रराष्ट्रवाद शब्द Chauvinism के अर्थ में प्रचलित हैं। एक विकल्प अंधराष्ट्रवाद है परन्तु वह भी Fascism के पूरे अर्थ को व्यक्त नहीं करता। कहीं कहीं इसे 'आत्मोत्सर्गवाद' लिखा जाता है परन्तु यह भी अधूरा है। फासिस्टवाद भी अटपटा है क्योंकि वह हिंदी में शब्द निर्माण की परिपाटी के अनुरूप नहीं। अतः ले देकर फासिज्म ही बच जाता है। Fascist को हिन्दी में फासिस्ट ही लिखेंगे। जहाँ सम्भव हो

Fascism को 'फासिस्ट विचारधारा' भी लिख सकते हैं।

कुछ लेखक Fascism को 'फासीवाद' लिखते हैं। यह एकदम बेतुका और हिंदी की प्रकृति के विरुद्ध है। 'वाद' शब्द तो हमारा परिचित है, परन्तु 'फासी' अंश निरर्थक है या उससे 'फाँसी' की भ्रांति हो सकती है, और तब व्यंग्य में कह सकते हैं कि यह सिद्धांत विरोधियों को फाँसी चढ़ा देने का सिद्धांत है। परन्तु वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण इस तरह नहीं होता।

हिन्दी में संकर शब्दों के निर्माण की एक पद्धति है, वह यह कि इसमें विदेशी अंश इतना विकृत न हो जाए कि पहचानना ही मुश्किल हो जाए। 'दावे और प्रतिदावे' में अरबी शब्द 'दावे' के साथ 'प्रति' संस्कृत का उपसर्ग है, परन्तु यह अस्पष्ट नहीं क्योंकि 'दावे' से हम भलीभाँति परिचित हैं और उसे हमने विकृत नहीं होने दिया। ज़िले के अधिकारी को 'ज़िलेश' (ज़िला+ईश) लिखने पर कठिनाई होगी क्योंकि इसमें विदेशी अंश (अरबी शब्द) 'ज़िला' ही विकृत हो गया। दूसरी ओर 'ज़िलाधीश' हिन्दी में खप गया है क्योंकि इसमें 'ज़िला' अक्षुण्ण है और 'अधीश' का विकृत रूप भी 'मठाधीश', 'दंडाधीश', 'न्यायाधीश' आदि शब्दों से हमारा सुपरिचित है। दूसरी ओर 'फासीवाद' में 'फासी' अंश इस रूप में हिन्दी में प्रयुक्त नहीं। अतः वह निरर्थक रह गया है। परन्तु Nazism के लिए नाज़ीवाद चल सकता है क्योंकि 'नाज़ी' सम्पूर्ण शब्द है और वह हिन्दी में भी ज्यों-का-त्यों प्रयुक्त है। इसके अलावा विदेशी मूल के शब्दों में हिन्दी प्रत्यय लगाकर स्वतंत्र विशेषण तो बना सकते हैं परन्तु संकर शब्दों में संधि से यथासम्भव बचना चाहिए।

Nuclear weapons

Nucleus परमाणु का एक हिस्सा है जिसके लिए बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह—विज्ञान के अंतर्गत नाभिक/केंद्रक/न्यूक्लिअस शब्द स्वीकार किए गए हैं। अतः Nuclear के लिए 'नाभिकीय' विशेषण बनाया गया और आँख मींचकर प्रयुक्त होने लगा। Nuclear Weapon को 'नाभिकीय आयुध' लिखा गया (वही)। परन्तु यह उपयुक्त नहीं। 'नाभि' से शरीर के उस अंग की ओर ध्यान जाता है। जब कोई शब्द गलत दिशा में ध्यान खींचे तो उसका प्रयोग उपयुक्त नहीं। हम 'छाता' का लघुतावाची शब्द 'छतरी' प्रयोग करते हैं 'छाती' नहीं करते।

दूसरी ओर 'न्यूक्लियस' से 'न्यूक्लीय' विशेषण बनता है जिसमें विदेशी अंश विकृत हो जाने पर भी खटकता नहीं। यह ऐसा उदाहरण है जिसमें विदेशी मूल के शब्दों में हिन्दी प्रत्यय लगाकर स्वतंत्र विशेषण बनाया गया है। अन

Nuclear weapons का 'न्यूक्लीय अस्त्र शस्त्र' लिखना उपयुक्त होगा।

Political Affairs Committee

Affairs के लिए हिन्दी में 'मामला' उपयुक्त शब्द है। Political Affairs Committee में affairs बहुवचन आया है। हिन्दी में बहुवचन का निर्देश कारक से मिलता है, समास रचना में उसे व्यक्त करना कठिन है। अतः 'राजनीतिक मामला समिति' या 'राजनीतिक मामले समिति' दोनों अनुपयुक्त हैं। कभी कभी इसे 'राजनीतिक मामलों से सम्बन्धित समिति' कहा जाता है। यह सही तो है पर बहुत लम्बा है। अतः 'मामला' शब्द से बचकर देखा जाए। 'राजनीतिक विषय समिति' से यह भाव बहुत कुछ व्यक्त हो जाता है।

Minister of Foreign Affairs को कभी कभी 'विदेशी मामलों के मंत्री' लिखा जाता है। परन्तु यह भी अटपटा है—'विदेश मंत्री' या 'परराष्ट्र मंत्री' से काम चल जाना चाहिए।

United States, United Kingdom, United Nations

United states या (United states of America) के लिए हिन्दी में 'संयुक्त राज्य अमरीका' प्रयुक्त है। अमरीका का उल्लेख जरूरी है। United Nations को 'संयुक्त राष्ट्र संगठन' लिखा जाता है। परन्तु United Kingdom को 'युनाइटेड किंगडम' लिखते हैं। वस्तुतः पारिभाषिक शब्द संग्रह—मानविकी में भी यही दिया है। इसका अनुवाद शायद इसलिए नहीं करते कि United States में United संघीय प्रणाली का द्योतक है और United Kingdom में एकात्मक प्रणाली का। States और Kingdom दोनों के लिए लगभग 'राज्य' शब्द ही मिलता है। अतः United States और United Kingdom का एक जैसा अनुवाद हो जाएगा जबकि पहला संघात्मक गणतंत्र है और दूसरा एकात्मक राजतंत्र। परन्तु 'युनाइटेड किंगडम' लिखने से एकरूपता नष्ट होती है। अतः इसे 'संयुक्त राज्य ब्रिटेन' लिखना ही उपयुक्त होगा। 'राज्य' State के लिए आया है या Kingdom के लिए—यह संदर्भ से ग्रहण किया जाएगा। United का अर्थ भी तो संदर्भ से ग्रहण करते हैं। United Nations या United Nations Organisation के लिए 'संयुक्त राष्ट्र संगठन' उपयुक्त है। 'संगठन' न लिखने पर यह भ्रम हो सकता है कि हम राष्ट्रों के समूह का उल्लेख कर रहे हैं या किसी एक राष्ट्र का। अंग्रेजी के समस्त पदों में बहुवचन का प्रयोग खटकता नहीं होता है परन्तु हिन्दी में यह सुविधा नहीं। अतः स्थिति को स्पष्ट करने के लिए अन्य शब्द जोड़ने पड़ सकते हैं।

House of Lords House of Commons, House of Representatives

इन तीन वचन पारिभाषिक शब्द समूहों—मानविकी में क्रमश: 'हाउस ऑफ लार्ड्स/लार्ड सभा', हाउस ऑफ कॉमन्स और 'हाउस ऑफ रिप्रेज़ेंटेटिव्ज' के लिए है अथवा मुख्य इनका लिप्यन्तरण कर दिया गया है। हिन्दी में रिप्रेज़ेंटेटिव्ज' जैसे शब्द का भी लिप्यन्तरण क्या किया जाए—समझ में नहीं आता। House शब्द के साथ यही कठिनाई यह है कि यहाँ यह अकेला आता है क्योंकि इसे 'सदन' लिखा जाता है (जैसे Chamber के लिए भी 'सदन' प्रयुक्त है) परन्तु House of Lords इत्यादि के सन्दर्भ में यह 'सभा' हो जाता है। इसमें कोई हर्ज नहीं। House of People का मानक अनुवाद भी लोकसभा है। इसका हो नहीं, Council of States के हिन्दी अनुवाद 'राज्यसभा' में Council का समानक भी सभा है। Legislative Assembly के अनुवाद 'विधानसभा' में Assembly के लिए भी सभा है। इस तरह 'सभा' शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक है और House के लिए उसका प्रयोग वर्जित नहीं। अतः House of Lords का समानक लार्ड सभा उपयुक्त है। Lords और Commons का वर्तमान प्रयोग इनके मूल अर्थ से भिन्न हो गया है। अतः इनके लिए क्रमशः लार्ड्स और कामन्स ही लिखना उपयुक्त होगा। House of Lords के लिए लार्ड्स सभा' लिख सकते हैं परन्तु इसमें उच्चारण की कठिनाई को देखते हुए 'लार्ड सभा' लिखना अधिक सरल होगा। House of Commons को 'कामन्स सभा' लिखना चाहिए इसमें उच्चारण की कोई कठिनाई नहीं। यदि इसे 'कॉमन सभा' कर दें तो भ्रांति होगी, जब 'कामन इस सभा का विशेषण हो। House of Representatives को तो प्रतिनिधि सभा ही लिखना चाहिए। इसमें विवाद की कोई गुंजाइश नहीं।

Head, Speaker, Chairman, President Chief, Dean

ये कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके लिए हिन्दी में प्रायः आँख मीचकर 'अध्यक्ष' शब्द का प्रयोग किया जाता है। विश्वविद्यालय के Head of the Department को विभागाध्यक्ष कहा जाता है। किसी देश के Head of the State को राज्याध्यक्ष (या कभी-कभी 'राज्य प्रमुख') कहा जाता है। यहाँ तक विशेष कठिनाई नहीं। भारत की लोकसभा या ब्रिटिश कॉमन्स सभा (हाउस ऑफ कामन्स) के Speaker को भी कहा जाता अध्यक्ष कहा जाता है। अंग्रेजी में Speaker शब्द का अपना एक इतिहास है और इसका मूल अर्थ इसके वर्तमान अर्थ को प्रतिबिम्बित नहीं करता। अतः यदि छोटे s से speaker लिखेंगे तो उसका अनुवाद 'वक्ता' होगा, बड़े S से Speaker का अर्थ लोकसभा या कामन्स

सभा का अध्यक्ष होगा। इसके लिए कोई नया शब्द सुझाना कठिन है। केवल यह ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे प्रयोगों में 'अध्यक्ष' शब्द अपने संदर्भ से न कट जाए। अतः जहां आवश्यक हो, वहां इसके साथ भारतीय लोकसभा या ब्रिटिश कामंस-सभा का उल्लेख कर देना चाहिए।

फिर, Chairman के लिए भी 'अध्यक्ष' शब्द प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए, दिल्ली विकास प्राधिकरण के Chairman को अध्यक्ष ही कहा जाता है। यहां भी अन्य कोई शब्द सुझाना कठिन है। किसी समिति के Chairman को भी प्रायः अध्यक्ष ही कहा जाता है। परन्तु किसी सभा के संदर्भ में 'सभापति' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारत की राज्य सभा के Chairman को 'सभापति' कहना उपयुक्त होगा जो इसे लोकसभा के 'अध्यक्ष' से पृथक करता है।

President को भी हिंदी में प्रायः 'अध्यक्ष' (या कभी-कभी 'सभापति') कहा जाता है। किसी संस्था के President को प्रायः अध्यक्ष ही लिखते हैं और कोई शब्द नहीं सूझता। कभी-कभी President के लिए 'प्रधान' शब्द का प्रयोग करते हैं परन्तु सेना के रूप में 'प्रधान' शब्द के साथ स्थानीय महत्त्व का भाव इतना निकट से जुड़ गया है कि बहुत बड़े पदों के संदर्भ में यह उतना गरिमायुक्त प्रतीत नहीं होता।

दूसरी ओर किसी देश या राष्ट्र के President को प्रायः 'राष्ट्रपति' लिखा जाता है। यह भी कम कठिनाई पैदा नहीं करता। यदि हम सोवियत रूस के President को राष्ट्रपति कहें तो वहां के Presidium को क्या कहेंगे? 'राष्ट्रपति मंडल' शब्द उपयुक्त नहीं। 'राष्ट्रपति परिषद' भी उपयुक्त नहीं क्योंकि Presidium किसी व्यक्ति विशेष की परिषद नहीं होती बल्कि वह सामूहिक नेतृत्व का प्रतीक है। अतः ले देकर Presidium के लिए 'अध्यक्ष मंडल' शब्द ही बचता है। इसे सार्थक बनाने के लिए प्रस्तुत संदर्भ में President के लिए 'अध्यक्ष' शब्द ही रखना पड़ेगा।

इधर, Chief के लिए भी हिंदी में 'अध्यक्ष' प्रचलित है। Chief of Army Staff को सेनाध्यक्ष कहा जाता है। इसका एक विकल्प 'प्रमुख' है। अतः Chief of Technical Section को तकनीकी अनुभाग प्रमुख कह सकते हैं। विशेषण के रूप में Chief का स्थानापन्न 'प्रधान', 'प्रमुख' या 'मुख्य' होगा, जैसे *Chief Editor को प्रधान संपादक कहेंगे और Chief Martial Law* Administrator को मुख्य मार्शल ला प्रशासक।

फिर, Dean के लिए भी 'अध्यक्ष' शब्द अपनाया गया है। विश्वविद्यालय की किसी Faculty (संकाय) के Dean को 'संकायाध्यक्ष' कहा जाता है। Dean, Faculty of Arts को संकायाध्यक्ष कला संकाय तो कहेंगे नहीं, अतः

'अध्यक्ष, कला संकाय' लिखा जाता है मानो 'अध्यक्ष, हिन्दी विभाग' और अध्यक्ष, कला-संकाय' का एक सा रुतबा हो। चलो यहां तक यह मान लिया कि अध्यक्ष की गरिमा संदर्भ विशेष से आंक ली जाएगी। परन्तु Dean केवल Faculty के तो नहीं होते। अब Dean of Student Welfare को क्या कहेंगे? 'अध्यक्ष, छात्र-कल्याण' से बात बनेगी नहीं, क्योंकि छात्र कल्याण कोई संस्था विभाग या संकाय तो है नहीं। एक विकल्प यह है कि Dean के लिए 'अध्यक्ष' की जगह 'अधिष्ठाता' शब्द का प्रयोग किया जाए। तब Dean Faculty of Arts को कला संकाय अधिष्ठाता लिखा जाएगा, और Dean of Student Welfare को छात्र कल्याण अधिष्ठाता।

फिर समस्या आती है Dean of Colleges की। यदि हम उसे महाविद्यालय अधिष्ठाता या कालिज अधिष्ठाता' कहते हैं तो ऐसा लगेगा जैसे वह किसी कालिज विशेष का प्रमुख (यानी प्रधानाचार्य) हो। परन्तु वह तो विश्वविद्यालय का अधिकारी है जो एक नहीं, शायद सब कालिजों के ऊपर है। ऐसी हालत में उसे कालिज विभाग अधिष्ठाता कहा जा सकता है, हालांकि यह भी कोई बहुत संतोषजनक शब्द नहीं। Dean का एक विकल्प शिरोमणि है जैसे Dean Faculty of Arts को कला-संकाय शिरोमणि' कह सकते हैं और Dean of Diplomatic Corps को 'दूतवर्ग शिरोमणि'। परन्तु शिरोमणि' शब्द इतना आलंकारिक है कि तकनीकी वाङ्मय में इसका प्रयोग शायद उपयुक्त न हो। यहां हमारा उद्देश्य समस्या की जटिलता को प्रकाश में लाना है ताकि विद्वान् लोग इस पर विस्तृत विचार करके इसके समाधान का उपाय सुझा सकें।

उपसंहार—इन सब उदाहरणों के आधार पर अनुवाद के कोई निश्चित नियम निर्धारित नहीं किए जा सकते जिन्हें सीखकर कोई सिद्धहस्त अनुवादक हो जाए। इतने उदाहरण संकलित करना भी सम्भव नहीं जिनसे अनुवाद की सारी समस्याओं का विस्तृत परिचय मिल जाए। यह एक अनंत क्षेत्र है—हरि अनंत हरि कथा अनंता। परन्तु हरिकथा का परिचय ही हरिभक्ति की भावना जगाने के लिए पर्याप्त होता है। अतः इन उदाहरणों को सामने रखकर सक्रिय अनुवादक को दिशा निर्देश मिल सकता है। फिर वह अपने अनुभव के आधार पर अपने अनुवाद में निखार ला सकता है।